कर्मवीर

रेल इंजन कारखाना, जमालपुर

कारखाना की 133 वीं वर्षगांठ
8 फरवरी, 1995 के उपलक्ष्य पर

मानव शक्ति योजना समीक्षा अंक
तकनीकी संगोष्ठी

वर्ष : 7

अंक : 12

आपके-पत्र

प्रिय सम्पादक जी,

"कर्मवीर" पत्रिका का राजभाषा अंक पाया। धन्यवाद। पत्रिका का प्रकाशन और लेख का चयन मनोयोग से किया गया। सराहनीय है। रेल सेवा में राष्ट्रभाषा को यथोचित स्थान पर रखने के प्रयत्न वहाँ काम करने वाले की बुद्धिवादी व्यवस्था का यह पत्रिका परिचायिका है। इससे आप सबों को काम करने की स्फूर्त्ति के साथ यश प्राप्त होगा।

नववर्ष की मंगलमय कामनाओं के साथ !

आपका

बाल्मीकि चौधरी
भूतपूर्व निजी सचिव
प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद

श्री देवनारायण साह एवं पत्रिका परिवार
राजभाषा विभाग
रेल इंजन कारखाना, जमालपुर (मुंगेर)
पिन-811214

मार्च, 1994 में आपकी पत्रिका मिली थी। कलात्मक चित्रों वाली और अत्यन्त उपयोगी विविध प्रकार की सामग्री से युक्त इस पत्रिका ने परिषद् के सभी केन्द्रीय कार्यकर्त्ताओं का मन मोह लिया था। विश्वास है कि पत्रिका नियमित रूप से त्रैमासिक रूप में निकल रही होगी और उसे अब छपे हुए रूप में प्राप्त करा रहा होगा। फिर भी यदि इस विषय में कोई कठिनाई हो तो निदेशक (राजभाषा), रेल मंत्रालय से सहयोग लिया जा सकता है।

जगन्नाथ
संयोजक, राष्ट्रभाषा कार्य
के०स०हि०परिषद्, नई दिल्ली-110023

आप द्वारा भेजी गई पत्रिका कर्मवीर का राजभाषा अंक हिन्दी दिवस, 1994 सधन्यवाद प्राप्त हुआ। पत्रिका पढ़ने पर पता चला कि सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक तथा रोचक एवं हिन्दी विकास में सहायक है। कविताओं से भरपूर मनोरंजन भी होता है। आशा है पत्रिका में दी गई रचनाएँ पाठकों का मार्गदर्शन करेंगी और हिन्दी का प्रचार-प्रसार बढ़ेगा। आपने मेरी रचना को स्थान दिया इसके लिए आपको हार्दिक धन्यवाद।

यह हर्ष का विषय है कि आपके यहाँ परिषद् की शाखा का गठन कई वर्षों से है और आप सभी हिन्दी का व्यवहार जुटाने में लगे हुए हैं।

स० दर्शन सिंह
महामन्त्री
के० स० हिन्दी परिषद्
एक्स थाई-68, सरोजिनी नगर
नई दिल्ली-110023

रेल इंजन कारखाना, जमालपुर के श्रम एवं हिंदी भाषा के प्रति प्रतिबद्ध कर्मवीरों का प्रयास 'कर्मवीर' में मुखर देख बड़ी प्रसन्नता हुई। इसका 10वाँ अंक देखने को मिला। परिश्रम साध्य सम्पादन हुआ है। आपके कारखाने की राजभाषा कार्य प्रगति की सम्यक जानकारी मिली। आपके श्रमिकों में साहित्यिक प्रतिभा रखने वाले लोग भी हैं और हिन्दी के उत्थान में उनका योगदान स्वीकार किया जाएगा। योग विषय पर आपका लेख पढ़ने योग्य है, अच्छी जानकारी मिली।

संत कुमार टण्डन 'रसिक'
उप प्रबन्धक (राजभाषा)
इंडियन टेलीफोन इण्डस्ट्रीज लि०
नैनी, इलाहाबाद-211010

मुझे हिन्दी अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'कर्मवीर' का 11वां अंक पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपकी यह पत्रिका मुझे बेहद पसन्द आई। यह पत्रिका अपने आप में एक मिसाल है। इस पत्रिका में विशेषकर दिल को छू लेने वाली 'लहू किसका" वीरेन्द्र कुमार जी की और हास्यप्रद "मूरखानन्द की चिट्ठी" राजकिशोर मंडल जी की लिखी हुई मुझे अच्छी लगी। हमें पूरी उम्मीद है, यह साहित्यिक पत्रिका आज के बदलते समाज में एक रोशनी लाएगी। मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

प्रतिमा वर्मा
एम.ए (दर्शनशास्त्र)
बड़ी दरियापुर, जमालपुर

डा० महेश चन्द्र गुप्त
निदेशक (राजभाषा)

भारत सरकार
रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड)

शुभकामना सन्देश

कर्मवीर पत्रिका ने हिन्दी की रेल पत्रिकाओं में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। ऐसी उपयोगी पत्रिका के 12वें अंक के प्रकाशन के लिए हार्दिक मंगलकामना।

ह०/-
(महेश चन्द्र गुप्त)

मुख्य कारखाना प्रबन्धक
पूर्व रेलवे, जमालपुर

अरुण कुमार तिवारी

शुभकामना सन्देश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध रेल इंजन कारखाना, जमालपुर की अर्द्ध वार्षिक पत्रिका "कर्मवीर" पिछले छः वर्षों से हर बार एक नए कलेवर और रुतबा के साथ प्रकाशित हो रही है जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा पूर्व रेलवे के महाप्रबन्धक तथा मुख्य राजभाषा अधिकारी ने अपने शुभकामना सन्देश में की है। इसका 12 वां अंक जमालपुर कारखाना के 133 वीं वर्षगांठ के अवसर पर 8 फरवरी, 1995 को प्रकाशित हो रहा है।

मेरी कामना है कि यह पत्रिका न केवल पूर्व रेलवे में, बल्कि अखिल भारतीय रेलवे में एक आदर्श पत्रिका के रूप में पठनीय एवं अनुकरणीय हो।

"कर्मवीर" के सम्पादक मंडल को साधुवाद !

ह०/-
(अरुण कुमार तिवारी)

राजभाषा के प्रचार - प्रसार के लिए प्रतिबद्ध
रेल इंजन कारखाना, जमालपुर की अर्द्ध वार्षिक पत्रिका

कर्मवीर

वर्ष : 7 | कारखाना की 133वीं वर्षगांठ 8 फरवरी, 1995 | अंक : 12

संरक्षक :
अरुण कुमार तिवारी
मुख्य कारखाना प्रबन्धक

संचालन समिति :
बी० एल० हरिजन
उपमुख्य परियोजना प्रबन्धक
परमानन्द सिंह
उपमुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं
उपमुख्य यांत्रिक इंजीनियर (म० एवं सं०)
रमेश प्रसाद
कारखाना लेखा अधिकारी
एम० एच० दास
जिला भंडार नियंत्रक

सम्पादन सौजन्य :
रमेश नीलकमल

प्रकाशक :
राजभाषा विभाग
रेल इंजन कारखाना, पू० रेलवे
जमालपुर (मुंगेर)
बिहार-811 214

प्रधान सम्पादक :
शाह मोहम्मद सिद्दीकी

सम्पादक :
देवनारायण साह

सह-सम्पादक :
भोला प्र० भगत, कार्यालय अधीक्षक
उपेन्द्र सिंह, राजभाषा सहायक
राजकिशोर मंडल, राजभाषा सहायक

आवरण सज्जा :
निमाई सिन्हा

नि:शुल्क वितरण

[लेखों/रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक/रचनाकार के अपने हैं। सम्पादक मंडल या प्रशासन इनके लिए जिम्मेदार नहीं हैं]

सम्पादकीय

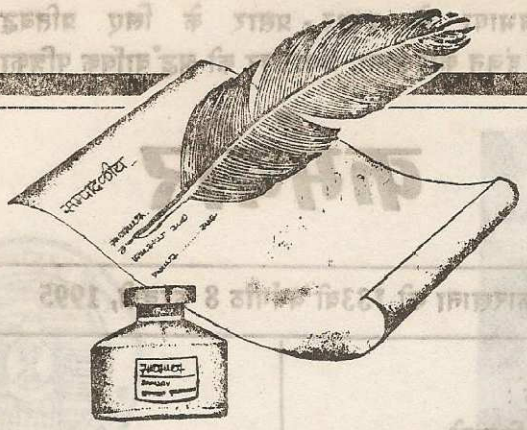

अपनी बात

रेलकर्मी हिन्दी पाठकों की अतिप्रिय पत्रिका "कर्मवीर" अपने प्रकाशन के 6 वर्ष पूरे कर चुकी है। इसका प्रकाशन जमालपुर कारखाने की 127 वीं वर्षगाँठ पर 8 फरवरी, 1989 को वार्षिकांक के रूप में तत्कालीन उपमुख्य राजभाषा अधिकारी श्री अरुण कुमार तिवारी (सम्प्रति मु० का० प्रबन्धक), सहायक कारखाना लेखा अधिकारी श्री रमेश प्रसाद 'नीलकमल' (सम्प्रति कार० लेखा-धिकारी) और राजभाषा अधिकारी श्री ब्रह्मदेव मेहता (सम्प्रति सेवानिवृत्त) जैसे कुशल एवं अनुभवी सम्पादक-त्रय के सम्पादन में शुरू किया गया था। "कर्मवीर" को पाठकों ने बड़े उत्साह से अपनाया और यह दिनोंदिन अधिक लोकप्रिय होती गयी।

समय के साथ रेलकर्मी पाठकों की रुचि और आवश्यकता में आ रहे बदलाव को देखते हुए सम्पादकीय नीति में परिवर्त्तन किया गया। इस नीति के अन्तर्गत रेलसेवा सम्बन्धी नियमों, रेलसेवा में मिलनेवाली विभिन्न सुविधाओं, सेवानिवृत्ति लाभों, कारखाने की उपलब्धियों, राजभाषा नीतियों तथा तकनीकी लेखों का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया जिन्हें पाठकों ने बेहद पसन्द किया। कविताओं, गजलों, लघुकथाओं, संस्मरणों तथा हास्य-व्यंग्यों के विषय-क्षेत्र को विस्तृत और खुला रखा गया। इससे अधिकाधिक संख्या में रेलकर्मियों को "कर्मवीर" से जोड़ने में हमें सफलता मिली।

"कर्मवीर" की प्रतियाँ पूर्व रेलवे मुख्यालय, विभिन्न मंडलों, कारखानों के साथ-साथ रेलवे बोर्ड, विभिन्न रेलों के मुख्यालयों, रेलवे हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्यों तथा हिन्दी सेवी संस्थाओं तक डाक द्वारा या अन्य स्रोतों से पहुँचाने का भरसक प्रयत्न किया जा रहा है। हमें "कर्मवीर" की प्रशंसा में चारों ओर से पत्र प्राप्त हो रहे हैं जिससे यह पता चलता है कि यह पत्रिका लोकप्रियता की बुलन्दियों को छू रही है। इससे हमारा उत्साह बढ़ा है और इसके लिए हम अपने पाठकों और प्रशंसकों के ऋणी हैं।

जमालपुर रेल इंजन कारखाना भारतीय रेलवे का सबसे प्राचीन कारखाना है जिसकी स्थापना 8 फरवरी, 1862 ई० को हुई थी। इसका अतीत स्वर्णिम एवं गौरवपूर्ण रहा है तथा भविष्य भी इसकी आधुनिकीकरण की योजना से समुज्ज्वल और सुविस्तीर्ण होनेवाला है।

हमें विश्वास है, पिछले अंकों की तरह "कर्मवीर" का यह 12 वां अंक भी रुचिकर और उपयोगी सिद्ध होगा। सुविज्ञ पाठकों से निवेदन है कि वे अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव हमें लिख भेजें ताकि हम इसे और अधिक श्रेयस्कर बना सकें।

"कर्मवीर" के लेखकों/रचनाकारों के प्रति आभार प्रकट करते हुए हम उनसे सतत सहयोग की आशा रखते हैं।

अखबार

पूर्व रेलवे में कवि गोष्ठी

'खून अपना है सच मानिए, कौमी नफरत मिटा दीजिए'

कलकत्ता, 22 नवम्बर (नि. प्र.)। 'गर्दिशे गम भुला दीजिए, दिल से नफरत हटा दीजिए।' 'खून अपना है सच मानिए, कौमी नफरत मिटा दीजिए।' पूर्व रेलवे द्वारा आज शाम आयोजित कवि गोष्ठी में कवि देव नारायण साह ने अपनी कविता की, इन पंक्तियों को सुनाकर श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। राजभाषा सप्ताह के तहत डॉ० बी० राय प्रेक्षागृह में कवि गोष्ठी व कौमी एकता का आयोजन किया गया था।

बनारस से आये महेन्द्र नीलम ने सरस्वती वन्दना से गोष्ठी की शुरूआत की। उन्होंने मार्मिक कविताएँ सुनाई। कुमारी रीता यादव ने यह कहकर कि 'हिन्दी के माथे पर देख अंग्रेजी के टीका बा, अब अंग्रेजी के नून बिना हिन्दी के खिचड़ी फीका बा', हिन्दी की वर्त्तमान स्थिति को स्पष्ट करने की कोशिश की। उनकी भोजपुरी कविता की एक और पंक्ति है, 'भाषण हिन्दी में देला, अंग्रेजी से खुजली बा, लेकिन उनकर लड़िका कंवेंट में पढ़त बा।

कवि बुद्धिनाथ मिश्र, श्रीमती शीला काव, श्रीमती रेणु श्रीवास्तव, गोपी वल्लभ सहाय, चन्द्रशेखर मिश्र एवं अन्य ने कविताएँ सुनायी। बनारस के डॉ० चन्द्रदेव सिंह ने कवि गोष्ठी का संचालन किया। वरिष्ठ प्रबन्धक श्री आर० पी० श्रीवास्तव ने कवि गोष्ठी की अध्यक्षता की।

—दैनिक विश्वमित्र
23 नवम्बर '94

नागरिक सुरक्षा संस्था, वर्कशॉप जमालपुर, मुंगेर-बिहार का 7 वां वार्षिक शिविर प्रशिक्षण

—स्काउट डेन गंगानगर

कलकत्ता। नागरिक सुरक्षा संस्था पूर्व रेलवे वर्कशॉप, जमालपुर के 40 स्वयंसेवक एवं 4 अनुदेशक दिनांक 11-4-94 से 14-4-94 तक शिविर में भाग लिये। शिविर में श्री के० पी० नन्दी अनुदेशक, श्री एस० के० सिन्हा अनुदेशक, श्री पी० एन० सेन शर्मा अनुदेशक एवं श्री आर० के० घोष अनुदेशक ने शिविर में समस्त स्वयंसेवकों को अनेक प्रकार का प्रशिक्षण दिये। जैसे देश में हवाई हमले से स्वयं बचना एवं नागरिकों को बचाना। प्राकृतिक विपदाओं जैसे— भूकम्प, बाढ़ एवं भीषण दुर्घटनाओं में नागरिकों के मनोबल को सदा बनाये रखना एवं मानवता की सेवा करना।

शिविर का पूरा कार्यक्रम स्काउट डेन के अन्दर हरे-भरे पेड़-पौधों के बीच स्वच्छ वातावरण में काफी उत्साहवर्धक रहा। शिविर में स्वयंसेवकों ने अनेक कार्यक्रम में बड़े ही मुस्तैदी के साथ भाग लिया।

पूर्व रेलवे प्रधान कार्यालय के मुख्य निरीक्षक श्री एस० एस० बनर्जी पूरे कार्यक्रमों का निरीक्षण किये। शिविर के सभी कार्यक्रम को देखकर बड़े ही प्रसन्न मुद्रा में सभी स्वयंसेवकों की भूरि-भूरि प्रशंसा किये। शिविर की विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफल निम्नलिखित स्वयंसेवकों को श्री दिलीप कुमार (स्काऊट डेन प्रभारी) द्वारा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री देवकी मंडल वेल्डिंग शॉप (प्रथम पुरस्थार) परेड प्रतियोगिता में। श्री दिलीप कुमार द्वितीय पुरस्कार; श्री चिनमाई दास किचन प्रभारी एवं श्री पी० एम० मिश्र।

—रूपलेखा
8 जून '94

'निमंत्रण-पत्र' हृदय की भाषा हिन्दी में

□ जगन्नाथ
ए-26, रोहितकुंज, रानीबाग, दिल्ली-110034

यद्यपि पिछले पर्याप्त समय से अनेक व्यक्ति अपने पारिवारिक संस्कारों के निमंत्रण-पत्र हिन्दी में छपाने लगे हैं तथापि उन अनेक घरानों के जिनका योगदान हिन्दी के प्रचार-प्रसार में रहा है, निमंत्रण-पत्र अभी भी अंग्रेजी में छप रहे हैं। जब मुझे अंग्रेजी में छपा हुआ निमंत्रण-पत्र प्राप्त होता है तो लगता है कि किसी ने हथौड़ा मार दिया हो और मैं प्रायः पूछ लेता हूँ कि क्या संस्कार भी अंग्रेजी में होगा? क्या पंडितजी उसके मंत्रों की व्याख्या और उपदेश भी अंग्रेजी में करेंगे? प्रायः उत्तर दिया जाता है कि जल्दी में कार्ड अंग्रेजी में छप गए अथवा हिन्दी में अच्छे कार्ड बाजार में उपलब्ध नहीं हैं या बच्चों ने अंग्रेजी में कार्ड छपवा लिए। ये सब थोथी दलीलें हैं। अब हिन्दी में एक से एक सुन्दर कार्ड बाजार में उपलब्ध हैं। जब लड़के के लिए लड़की और लड़की के लिए लड़का ढूंढने का कार्य परिवार के सभी बुजुर्ग मिलकर करते हैं तो निमंत्रण-पत्र की छपाई को भी गम्भीरता से लिया जाना चाहिए। इसी संदर्भ में 2-3 घटनाएँ बताना सामयिक होगा।

आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी वेदानन्द जी महाराज विश्व की 7-8 भाषाओं के प्रकाण्ड विद्वान थे। उन्हें एक बार अपने एक आर्य समाजी शिष्य का निमंत्रण-पत्र अंग्रेजी में प्राप्त हुआ। उन्होंने उसका संस्कृत में उत्तर दिया। मैंने पूछा—"महाराज! वह संस्कृत को कैसे समझेगा?" उन्होंने उत्तर दिया कि "जब वह मूर्ख मेरी भावनाओं तक को नहीं समझता और अंग्रेजी में कार्ड छपवाकर मुझे मानो चिढ़ाना चाहता है तो मैं उसकी सुविधा की परवाह क्यों करूँ?"

जब प्रो० शेर सिंह भारत सरकार में राज्य मंत्री थे तब उनकी सुपुत्री डा० नीलम का विवाह होना था और उन्होंने मुझे निमन्त्रण-पत्र का नमूना बनाकर देने को कहा। मैंने नमूना द्विभाषी (हिन्दी अंग्रेजी में) बनाकर दिया। उन्होंने मुझसे पूछा कि अंग्रेजी में नमूना किसलिए? मैंने कहा कि आपके निमन्त्रण-पत्र हिन्दीतर भाषियों को भी जाएँगे जिनमें अनेक राज्यपाल और वरिष्ठ मंत्री होंगे। उन्होंने कहा कि विवाह मेरा निजी मामला है और निमंत्रण-पत्र केवल हिन्दी में छपेंगे और वे हिन्दी में ही छपे। इस घटना से अनेक राजनेता और धार्मिक नेता प्रेरणा ले सकते हैं।

उसके कुछ काल बाद मेरे पुत्र का विवाह हुआ जो आस्ट्रेलिया (मूल नाम आस्त्रालय) में कम्प्यूटर इंजीनियर हैं। मैंने जब निमंत्रण-पत्र केवल हिन्दी में छपवाने चाहे तो बेटे ने विनयपूर्वक मुझसे कहा कि आस्ट्रेलिया में मेरे सभी अधिकारी और साथी केवल अंग्रेजी समझते हैं, हिन्दी नहीं जानते। मैंने उसका हल यह निकाला कि भारत में जाने वाले सभी निमंत्रण-पत्र केवल हिन्दी में हों, तथा आस्ट्रेलिया के लिए कुछ निमंत्रण-पत्रों के पीछे अंग्रेजी में भी छपवा लिया जाए और आस्ट्रेलिया में वे द्विभाषी रूप में भेजे जाएँ।

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् से जुड़े कार्यकर्त्ताओं में अनेक हिन्दीतर-भाषी भी हैं। मुझे याद है कि एक तमिल भाषी ने अपना निमंत्रण-पत्र ऊपर हिन्दी में तथा नीचे तमिल भाषा में छपवाया था।

आशा है कि उपर्युक्त उदाहरणों से अंग्रेजी में निमंत्रण-पत्र छपवाने वाले प्रेरणा लेंगे। अंग्रेजी में निमंत्रण-पत्र छपवाने वाले सज्जनों को एक क्षण रुक कर यह सोचना चाहिए कि हम ऐसे किन बहुसंख्यक मित्रों सम्बन्धियों के लिए अंग्रेजी में निमंत्रण-पत्र छपवा रहे हैं जो अपनी भाषा न जानकर केवल अंग्रेजी जानते और समझते हैं। कई सज्जन अंग्रेजी में निमंत्रण-पत्र होने पर उन कार्यक्रमों का बहिष्कार करते हैं। यदि हम उनका सामाजिक बहिष्कार न भी करें तो अपना क्षोभ और असहमति तो प्रकट कर ही सकते हैं। अन्यों द्वारा इसी प्रकार सोचा जा सकता है। अंग्रेजी में निमंत्रण-पत्र छपवाने वालों को निरुत्साहित तो किया ही जाना चाहिए। निमंत्रण पत्रों की भाषा व्यक्तियों की अस्मिता और सभ्यता की पहचान होती है। अतः यह आवश्यक है कि निमंत्रण-पत्र हृदय की भाषा हिन्दी में छपे। याद रखिए, सांस्कृतिक प्रदूषण वायु और जल प्रदूषण से भी अधिक भयंकर है।

उपर्युक्त तथ्य विवाह आदि संस्कारों तथा नववर्ष और दीपावली आदि के बधाई पत्रों पर भी लागू होते हैं।

(आर्य समाज, सरस्वती विहार, दिल्ली-34 के सौजन्य से)

अनुक्रम

विषय-वस्तु		लेखक/रचनाकार/प्रस्तोता	पृष्ठ सं०
शुभकामना सन्देश-1	:	डा० महेशचन्द्र गुप्त, निदेशक राजभाषा (रेलवे बोर्ड)	1
शुभकामना सन्देश-2	:	श्री अरुण कुमार तिवारी, मुख्य कारखाना प्रबन्धक, पू०रे० जमालपुर	2
सम्पादक मंडल	:		3
सम्पादकीय			4
अखबार			5
निमन्त्रण-पत्र : हृदय की भाषा हिन्दी में	:	जगन्नाथ	6
अनुक्रम			7
कार्मिक तकनीकी संगोष्ठी : "मानव संसाधनों की शून्याधार समीक्षा"—एक रपट	:	देवनारायण साह	9
शर्त (लघुकथा)	:	निर्मल मिलिंद	21
ऋण तथा अग्रिम (गतांक से आगे)	:	अंगराज मोहन	22
जमालपुर राजभाषा विभाग : उपलब्धियाँ एवं पुरस्कार	:	उपेन्द्र सिंह	26
कम्प्यूटर एक जरूरत	:	नरेश कुमार शर्मा	31
रेल फ्री पास : सुविधा या विशेषाधिकार	:	सुरेन्द्र प्रसाद चौरसिया	34
ताजमहल : कल और आज	:	नजरूल इस्लाम खाँ (नजरू जमालपुरी)	38
'योग' एक अनमोल खजाना : प्राणायाम	:	भोला प्रसाद भगत	41
मूरखानन्द की चिट्ठी : हे गुरु ! लॉटरी खेलहू मन लाई	:	राजकिशोर मण्डल	46
छोटे शहर का बड़ा कवि यानी रमेश नीलकमल	:	बैद्यनाथ सिंह	49
श्रद्धांजलि	:	जितेन्द्र झा पंकज	55
रेणुजी की मधुर यादें	:	उमाशंकर निशेष	57
विद्यालय-पुस्तकालय और पुस्तक चयन	:	ललित कुमार पाण्डेय	61
समीक्ष्य पुस्तक भाषा : विविध सन्दर्भ	:	गणेश प्रसाद महतो	63
इक्कीसवीं सदी (लघु कथा)	:	डा० सतीशराज पुष्करणा	64
बच्चों के कान का बहना	:	डा० आर० आर० सिंह	65
यदि मैं पक्षी होता	:	समीकरण दीर्घान्गी	67

विषय-वस्तु		लेखक/रचनाकार/प्रस्तोता	पृष्ठ सं०
आज थिरक उठी कविता पहाड़ पर	:	संजय प्रियदर्शी	68
देश के सम्मान का प्रतीक : हिन्दी	:	परमानन्द सिंह	70
शाह मोहम्मद सिद्दीकी : एक सम्पूर्ण कवि	:	एम० एस० आलम	71
जमालपुर रेल इंजन कारखाना : अतीत के आईने में	:	गौरी शंकर सिंह	73
गजल एवं कविताएँ			
चूमता चला गया	:	देवनारायण साह	75
दीप यह जलता रहेगा	:	दीपक मौर्य	75
इन्तजार : दो चित्र	:	रमेश नीलकमल	76
लाखों मुखड़ों की है बोली	:	रामचन्द्र मयंक	77
अपना भारत !	:	शाह मोहम्मद सिद्दीकी	78
गजल	:	सत्येन्द्र कुमार मिश्रा	62
गजल	:	एस० आर० अहमद	66
मुझे याद है	:	उमानाथ शर्मा	69
हादसे	:	प्रतिमा वर्मा	79
सम्प्रदाय	:	सरिता सिंह "अपराजिता"	79
रचना सहयोगी	:		80

"मानव संसाधनों की शून्याधार समीक्षा" पर संगोष्ठी

[A SEMINAR ON ZERO BASE REVIEW OF HUMAN RESOURCES]

□ देवनारायण साहु
राजभाषा अधिकारी

जमालपुर में दिनांक 21-12-1994 को भारतीय रेल यांत्रिक एवं विद्युत् अभियन्त्रण संस्थान (इर्मी) के सभामंडप में "मानव संसाधन पर शून्याधार समीक्षा" हेतु एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित हुई। इस संगोष्ठी में अध्यक्ष के रूप में श्री अरुण कुमार तिवारी, मुख्य कारखाना प्रबंधक, जमालपुर, मुख्य अतिथि के रूप में श्री आर० चट्टोपाध्याय, मुख्य कार्मिक अधिकारी, पूर्व रेलवे, कलकत्ता और विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री एस० एस० गोडबोले, निदेशक, इर्मी ने भाग लिया। संगोष्ठी लगभग 11.30 बजे प्रारम्भ होकर 14.30 बजे समाप्त हुई। श्री अंगराज मोहन, कार० कार्मिक अधिकारी, जमालपुर ने संगोष्ठी का संचालन किया। इर्मी का सभामंडप अतिथियों, आमन्त्रित व्यक्तियों, विभिन्न मंडलों से आए हुए वक्ताओं तथा ट्रेड यूनियनों के पदाधिकारियों से खचाखच भरा हुआ था।

सर्वप्रथम श्री अंगराज मोहन ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, अध्यक्ष, विभिन्न मंडलों एवं कारखानों से आए हुए अधिकारियों ट्रेड यूनियनों के पदाधिकारियों तथा जमालपुर के अन्य उपस्थित अधिकारियों और कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत किया और कहा कि यह हमारे लिए सौभाग्य एवं गौरव की बात है कि इस संगोष्ठी की मेजबानी के लिए जमालपुर को चुना गया। इन्होंने संगोष्ठी की विषयवस्तु से परिचय कराते हुए बताया कि आज की यह संगोष्ठी तीन चरणों में पूरी होगी।

तदनुसार, प्रथम चरण में सर्वप्रथम श्री अरुण कुमार तिवारी तत्पश्चात् श्री एस० एस० गोडबोले और अन्त में श्री आर० चट्टोपाध्याय ने संगोष्ठी की भूमिका में अपने-अपने महत्त्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के द्वितीय चरण का संचालन श्री आशीष गर्ग, एस० सी० ए० ने किया। इस चरण में जमालपुर के कारखाना कार्मिक अधिकारी के अलावा विभिन्न मंडलों के वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारियों को अपना विचार रखना था जिनके भाषण का विषय एवं समय पूर्व निर्धारित था। इनके भाषणों का सार-संक्षेप इस लेख के अन्त में दिया जा रहा है। विस्तृत जानकारी के लिए अलग से तैयार पुस्तिका (बुकलेट) का अध्ययन किया जा सकता है।

तृतीय चरण में पूर्व रेलवे के मुख्य कार्मिक अधिकारी (प्रशासन) श्री एन० के० पी० ठाकुर ने सभी वक्ताओं द्वारा प्रकट किए गए विचारों पर अपनी टिप्पणी प्रस्तुत की। तत्पश्चात् श्री अरुण कुमार तिवारी, मु० का० प्र०, जमालपुर ने अपना समापन भाषण हिन्दी में ही देते हुए कहा कि "मैन पावर प्लानिंग" का मतलब कर्मचारियों की छंटनी नहीं है। जीरो बेस अर्थात् शून्याधार का अर्थ है—मानव शक्ति का पूरा-पूरा उपयोग जिससे कि लागत के अनुसार उत्पादन सम्भव हो सके। कोई भी व्यवसाय या संगठन घाटे का कारोबार करके अधिक दिन तक जिन्दा नहीं रह सकता। इसलिए प्रतियोगिता के इस जमाने में विश्व बाजार के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलने के लिए नई तकनीक और नई कार्यप्रणाली अपनानी होगी। इसके लिए कई उपाय करने होंगे, जिनमें "मैन पावर प्लानिंग" भी जरूरी है। इन्होंने ट्रेड यूनियनों के पदाधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रहित में बनाई गई इस योजना को सफल अंजाम देने के लिए आपका सहयोग बहुत ही आवश्यक है। संगोष्ठी की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इन्होंने सभी लोगों से नए युग की चुनौती का सामना करने का आग्रह किया।

अन्त में श्री अंगराज मोहन, कार० कार्मिक अधिकारी, जमालपुर ने संगोष्ठी के व्यवस्थापक के नाते सभी उपस्थित अतिथियों, अधिकारियों, यूनियन पदाधिकारियों एवं अन्य श्रोताओं को धन्यवाद देते हुए व्यवस्था में त्रुटियों के लिए क्षमा याचना की और तत्पश्चात् संगोष्ठी की पूर्णाहुति की घोषणा की।

संगोष्ठी की सफलता का पूर्ण श्रेय श्री अरुण कुमार तिवारी, मु० का० प्र० को उनके सबल नेतृत्व एवं प्रेरणादायक सलाह के लिए जाता है। श्री अंगराज मोहन, काकाधि, जमालपुर का अथक प्रयास प्रशंसनीय है, जिसके बिना संगोष्ठी की सफलता सम्भव नहीं थी। कल्याण विभाग ने संगोष्ठी की व्यवस्था में जिस तत्परता के साथ सहयोग दिया उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय, थोड़ी होगी।

विभिन्न वक्ताओं के भाषणों का सार-संक्षेप

प्रस्तावना
(PREFACE)

□ आर० चट्टोपाध्याय
मुकाधि/पू० रे०, कलकत्ता

"मानव संसाधनों की शून्याधार समीक्षा" की अवधारणा वर्त्तमान समय में नियुक्त मानव संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग सुनिश्चित करने की भावना से उत्पन्न हुई है और भविष्य में मानव-शक्ति की जरूरत उनकी कुशलता, तायदाद और उम्र के रूप में है। "मानव संसाधनों की शून्याधार समीक्षा" मानव-शक्ति की आवश्यकता प्रतिवर्ष नए सिरे से अपने मौलिक रूप में तैयार करने का एक प्रयास है, मानो इस आवश्यकता का आधार शून्य है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रत्येक जवाबदेह प्रबंधक को अपने दिमाग का इस्तेमाल करना है और अपना सुझाव देना है कि उनके अधीनस्थ संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग कैसे हो।

उपर्युक्त सिद्धान्त को लागू और स्थापित करने के उद्देश्य से यह आवश्यक जान पड़ता है कि कार्यकर्त्ता वर्ग को लेकर चलने वाले प्रबंधकों को विचार विनिमय और पारस्परिक प्रभाव द्वारा अत्याधुनिक विचारों से समृद्ध किया जाना चाहिए और इसी ध्येय से 21 दिसम्बर, 1994 को जमालपुर कारखाना में "मानव संसाधनों की शून्याधार समीक्षा" पर एक संगोष्ठी आयोजित की गयी है।

संगोष्ठी के द्वितीय चरण के प्रथम वक्ता के रूप में श्री अंगराज मोहन, कार० कार्मिक अधिकारी, जमालपुर ने निम्नांकित विषय पर प्रकाश डालते हुए कुछ आवश्यक तथ्यों को भी प्रोजेक्टर द्वारा पर्दे पर दिखाया।

वर्त्तमान युग में चालू पद्धतियों के अनुसार मानव शक्ति योजना की अवधारणा

[CONCEPT OF MAN POWER PLANNING ACCORDING TO THE SYSTEMS PREVAILING IN THE PRESENT ERA]

□ अंगराज मोहन
काकाधि, जमालपुर

मानव-शक्ति और मानव-शक्ति योजना का अध्ययन वर्त्तमान शताब्दी के प्रारम्भ से ही होता रहा। इसकी शुरुआत "टेलर" ने की जिन्होंने समय-अध्ययन द्वारा मानव-शक्ति उत्पादकता बढ़ाने का प्रयास किया। 1930 ई० में फ्रैंक गिलवर्ट और लिलियन गिलवर्ट ने मोशन पैटर्न रिकार्ड करने की तकनीक का विकास किया, जिससे कार्य करना आसान हो गया और एसेम्बली लाइन उत्पादन की अवधारणा पैदा हुई।

उसके बाद "बेडॉक्स" ने अपने अध्ययन द्वारा "कार्य-माप" को सम्भव बनाया। "बेडॉक्स" ने कर्मचारियों के कार्य करने की गति के दर निर्धारण की अवधारणा को लागू किया और कठिन श्रम भत्ता की आवश्यकता पर जोर दिया। (बेनकस, 1984, पृ० 4)

इस प्रकार 1960 ई० तक "मानव-शक्ति योजना" का विकास एक अवधारणा के रूप में हुआ जिसमें तीन प्रकार से कदम उठाने की परिकल्पना की गयी।

(क) विभिन्न कारीगरी और पेशेवाले जरूरी लोगों की तायदाद के रूप में संगठनों के लिए भविष्य में पड़नेवाली मानव-शक्ति की जरूरतों का आकलन।

(ख) स्रोत, जिसके द्वारा मानव-शक्ति की आपूर्त्ति की जानी है, इसके लिए, नुकसान का स्तर, संगठन के माध्यम से लोगों की होनेवाली प्रगति की दर और श्रम बाजार जहाँ से कामगारों को लेना है, इन सब पर विचार किया जाना चाहिए।

(ग) मानव-शक्ति की आपूर्त्ति को बढ़ाने के लिए मानव शक्ति के अन्य स्रोतों की खोज की जानी चाहिए, यथा :—संगठन के अन्य भागों से स्थानान्तरण, सीधे बाहर से अनुभवी लोगों की भर्त्ती आदि। (बेनकस, 1984, पृ० 4)

औद्योगिक आंदोलन के चलते "श्रमबल" की आवश्यकता पड़ी, क्योंकि प्रारम्भिक काल में मशीन के लिए आदमी के दिमाग की अपेक्षा उसके बल की अधिक जरूरत थी। किन्तु "माइक्रोटेक्नोलॉजी" के आविष्कार की वजह से मशीनें या तो छोटे स्वचालित संयंत्रों में बदल रही हैं या बहुत व्यवहारकुशल औजारों में जिनको आदमी के बल की बजाय दिमाग की अधिक जरूरत रहती है। (हेंडी, 1985, पृ० 68)

1980 ई० में अर्थव्यवस्था के क्रमिक उदारीकरण से भारत और विदेश में मुक्त व्यापार का वर्चस्व कायम हो रहा था। इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में उत्पादित वस्तु की बिक्री तभी हो सकती थी, जब उसके उत्पादन में कम लागत लगी हो। चूँकि कच्चे मालों की कीमत कम होने वाली थी नहीं, इसलिए उत्पादन लागत में कमी करने के लिए श्रमिकों की संख्या में कमी करना ही एकमात्र रास्ता था। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तुलनात्मक अध्ययन करने से पता चला है कि यदि अस्तित्व कायम रखना है तो सभी अर्थव्यवस्थाओं में कार्यक्षमता बढ़ाने, लागत में प्रतिवर्ष लगभग 3% कटौती करने की जरूरत है।

बाद में, वित्तीय विवशता और अपेक्षाकृत कम उपयोग की स्थिति को दूर भगाने की जरूरत ने योजनाकारों को स्टाफ के बहुकुशलीकरण (मल्टीस्किलिंग) के बारे में सोचने पर मजबूर किया। होता यह था कि जो मेशेनिस्ट होते थे, वे जीवन भर मेशेनिस्ट ही रहते थे, उन्हें "वेल्डर ट्रेड" का काम सीखने का अवसर नहीं मिलता था। परिणामस्वरूप उनके श्रम का उपयोग अपेक्षाकृत कम हो पाता था। अतः यह अत्यावश्यक हो गया कि स्टाफ के बहुकुशलीकरण को अधिदेशात्मक (मेनडेटरी) बना दिया जाय। बहुकुशलीकरण ने समय की बर्बादी को भी रोका। अगर किसी मेशेनिस्ट को वेल्डर, की सेवा की जरूरत रहती थी तो उसे तबतक के लिए इंतजार करना पड़ता था, जब तक उस वेल्डर द्वारा काम का वह अंश पूरा नहीं हो जाता। एक लिपिक कोई मसौदा तैयार कर तबतक के लिए बैठा रहता था जबतक वह मसौदा टाइप होकर टाइप सेक्शन से नहीं आ जाता। इसलिए समझदारी इसी में है कि एक ही व्यक्ति लिपिक और टाइपिस्ट दोनों हो न कि लिपिक अलग और टाइपिस्ट अलग।

मानव-शक्ति योजना की अवधारणा का अध्ययन इसके प्रारम्भिक काल से ही करने पर पता चलता है कि इस अवधारणा का स्वरूप गतिशील है और काल विशेष के सामाजिक और आर्थिक साधनों के अनुकूल होने योग्य है। इसे भविष्य में भी ऐसा ही होना है। इस प्रकार मानव-शक्ति योजनाकार "मानव-शक्ति योजना" बनाते समय राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय, सामाजिक एवं आर्थिक हालात को देखते हुए इंसाफ के साथ अपना कार्य करेगा अन्यथा, उनकी योजना कारगर सिद्ध नहीं होगी जैसा कि अनुभव बताता है।

संगोष्ठी के द्वितीय चरण के द्वितीय वक्ता के रूप में श्री बी० डी० राय, वरि० मंडल कार्मिक अधिकारी, सियालदह ने निम्नांकित विषय पर अपने विचार व्यक्त किए—

"अधिशेष पदों की पहचान"

[IDENTIFICATION OF SURPLUS POSTS]

☐ बी० डी० राय
व० मं० का० अधि०
सियालदह

मानव-शक्ति योजना क्या है ?

"मानव-शक्ति योजना" किसी भी संगठन में मानव संसाधनों की प्राप्ति, उपयोग, सुधार और संरक्षण के लिए एक रणनीति है। ये योजनाएँ जिन पर ध्यान देना है, तीन तरह की हैं—परिचालनिक योजना, प्रशासनिक योजना और विस्तृत क्षेत्रीय योजना।

उद्देश्य :

☐ तत्काल नियुक्त मानव संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग सुनिश्चित करना।

☐ कारीगरी, तायदाद और उम्र की दृष्टि से किसी भी संगठन की मानव-शक्ति जरूरतों को पूरी करने के लिए निम्नांकित व्यवस्था करना :—

- समुचित तायदाद में कर्मचारी
- समुचित स्तर के प्रतिभावान और कुशल कार्यकर्त्ता
- सही कार्यों में
- सही समय पर
- सही क्रियाकलापों का निष्पादन
- सही उद्देश्यों की उपलब्धि
- संगठन का प्रयोजन पूरा करना

अनिवार्यता :

— भर्त्ती का स्तर निर्धारित करना
— प्रचुरता-स्तर का पूर्वानुमान करना
— उपयुक्त प्रशिक्षण की व्यवस्था
— प्रबंधन-विकास योजनाएँ बनाना
— स्टाफ खर्च का आकलन
— संयंत्र/अनुरक्षण/परिचालनिक आवश्यकता और मानव-शक्ति उपयोग के बीच सर्वोत्तम खर्च-संतुलन और अनुपात स्तर स्थापित करना।
— अनुकूल आई० आर० जलवायु की स्थापना और रखरखाव करना।

"शून्याधार" क्या है(WHAT IS ZERO BASE)

"शून्याधार" से तात्पर्य है "बरकरार रखी जाने वाली विद्यमान मानव-शक्ति की आवश्यकता के अनुरूप ही मानव संसाधनों की आवश्यकता निर्धारित/स्थापित करना और भविष्य की जरूरतों के सम्बन्ध में पूर्वानुमान करना।"

.....

रेलों में अधिशेष पदों की पहचान के क्षेत्र :

[Areas of Identifying Surplus posts in the Railways.]

इन दिनों परिस्थितियाँ ऐसी पैदा हो गयी हैं कि टेक्नोलॉजी के अपग्रेडेशन, उन्नत डिजाइनदार वैगनों को लेकर चलने वाली ट्रेन की पद्धति में परिवर्त्तन के चलते ट्रैक्शन में हुए बदलाव के कारण काफी संख्या में कार्य-प्रतिष्ठान या तो बन्द हो रहे हैं या संकुचित हो रहे हैं। ट्रैक्शन में परिवर्त्तन और वाष्प इंजन शेडों, मार्शलिंग यार्डों, गुड्स शेडों, साइडिंग की पूर्णतः/आंशिक रूप से बन्दी, परिचालनिक पद्धति में परिवर्त्तन आदि के चलते काफी संख्या में पदों के "सरप्लस" होने की नौबत आ गयी है।

लक्ष्य की प्राप्ति के उद्देश्य से मानव-शक्ति में कटौती के स्तर का नियतन इस प्रकार किया गया है, जिससे कि लगातार प्रयास द्वारा लक्ष्य तक पहुँचा जा सके।

अधिशेष पदों की पहचान के लिए जिस प्रकार के कदम उठाए जाने हैं, उसकी रूपलेखा निम्न प्रकार हैं :—

(क) कार्य-प्रणाली में हुए परिवर्त्तनों के आलोक में सभी वर्त्तमान रिक्तियों की समीक्षा आवधिक रूप से की जानी है, जिससे कि अतिरिक्ति को ठीक-ठीक आंका जा सके और अपरिहार्य जरूरतों को पूरा करने के लिए ही मानव-शक्ति को लगाकर अधिशेष कर्मचारियों को नजरअंदाज करते हुए रिक्त पदों में से "अधिशेष" पैदा किया जा सके।

(ख) ऑफ लाइन क्रिया-कलापों की, जिनका संकुचन हो गया है/रूख बदल गया है, आवधिक रूप से समीक्षा की जाती है, जिससे कि इस परिवर्त्तन के चलते उत्पन्न प्रचुर पदों को अधिशेष घोषित किया जा सके।

(ग) लोको शेडों की समाप्ति/गुड्स शेडों, मार्शलिंग यार्डों आदि के क्रिया-कलापों के संकुचन पर विशेष रूप से ध्यान देकर अधिशेष पदों को पैदा करने, साथ ही मृतप्राय: क्रिया-कलापों के कारण उत्पन्न अधिशेष पदों की पहचान करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

(घ) ऐसे क्षेत्रों का पता लगाने के लिए, जहाँ अधिशेष पदों को पैदा करने की गुंजाइश है, एक विकसित योजना तैयार करना।

(ङ) जहाँ स्टाफ को अधिशेष घोषित करने की सम्भावना रहे, वहाँ नया क्रिया-कलाप शुरू न करने की विकसित योजना तैयार करना। *

दूसरे चरण के तृतीय वक्ता के रूप में श्री आर० आर० प्रसाद, वरि० मंडल कार्मिक अधिकारी, हावड़ा ने निम्नांकित विषय पर प्रकाश डाला :—

मानव संसाधन पर "जीरो-आधार" समीक्षा

□ आर० आर० प्रसाद
व० मं० का० अधि० हावड़ा

परिप्रेक्ष्य (Perspective) :

1. भारतीय रेल एक वृहत् उद्योग है, जिसमें लगभग 16.54 लाख कर्मचारी एवं 1.10 लाख आकस्मिक श्रमिक कार्यरत हैं, जिनका मजदूरी बिल साधारण खर्च का 54% है। भारतीय रेल के अन्दर कर्मचारी संख्या में 1991-92 की तुलना में 1992-93 में 14% की बढ़ोत्तरी हुई है।
2. सम्पूर्ण रेलों के लिए पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत बना योजना परिव्यय जहाँ प्रथम पंचवर्षीय योजना में 10% था, वहाँ आठवीं पंचवर्षीय योजना में घटकर 6% हो गया है।
3. रेलों के लिए 1985-2000 की अवधि हेतु बनी समवेत योजना में समवेत लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परिवहन खर्च में 15% कटौती की परिकल्पना की गयी है।
4. परम्परागत रूप से भारतीय रेलों के अन्तर्गत शुरू के 50 वर्षों में अकुशल मानव-शक्ति 75% थी, जिसके चलते स्टाफ की उत्पादकता कम रही।

मानव-शक्ति योजना की आवश्यकता :

1. समवेत योजना में 15% कटौती का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए यह अनिवार्य है कि वर्त्तमान स्तर के अनुसार कर्मचारियों की तायदाद हो और यातायात-सम्बन्धी अतिरिक्त जरूरतों को पूरा करने के लिए स्टाफ के ज्ञान और कुशलता में वृद्धि की जाय।
2. आगामी वर्षों में समवेत योजना के अनुसार यातायात के आकार को गतिमान करना है ताकि यातायात की वृद्धि का सामना श्रम-शक्ति में बहुत कम वृद्धि करके किया जा सके।
3. सरकारी राजकोष से बजट-सम्बन्धी प्रावधान में कमी होने तथा स्वयं उत्पादित संसाधनों पर निर्भरता बढ़ जाने से रेलों में "मानव-शक्ति योजना"

के प्रयोग पर विचार करने की जरूरत है, जिससे कि 54% कर्मचारी खर्च की पूर्ति चालू खर्चों से की जा सके।

4. बड़े पैमाने पर कर्मचारी बल के रूप में यह संगठन ऐसा कठिन और दुःसाध्य हो गया है कि अपने यातायात ढाँचे, प्रौद्योगिक विकास और परिचालन रणनीति में त्वरित बदलाव लाने में यह असमर्थ है।
5. **समवाय मिशन (Corporate Mission) ऐसी परिवहन पद्धति की परिकल्पना करता है, जिससे** समाज को कम-से-कम लागत पर परिवहन की सुविधा प्राप्त हो सके। इसके लिए "मानव-शक्ति योजना" लागू करने की नितांत आवश्यकता है।

मानव-शक्ति योजना क्या है :

किसी भी संगठन में प्रभावकारी नियन्त्रण और मानव संसाधनों के सुनियोजित उपयोग के लिए मानव-शक्ति के उपयोग की योजना ही "मानव-शक्ति योजना" है, जिसमें यह ध्यान देना है कि बदलती हुई टेकनोलॉजी के अनुसार उपयुक्त प्रशिक्षण और पुनर्प्रशिक्षण देकर अनुकूलतम स्तर पर इस पद्धति की वित्तीय जीवन क्षमता को बनाए रखना है, ताकि संगठन के समवाय मिशन (Corporate Mission) का लक्ष्य प्राप्त हो।

उपसंहार :

वास्तव में रेलवे को मानव संसाधन विकास के साथ-साथ अपनी गतिशीलता बढ़ानी होगी, जिससे कि वित्तीय जीवन क्षमता को बनाये रखकर परिचालन खर्च में प्रभावकारी कटौती हो सके। रेलवे को सही लेखा-जोखा, बजट प्रस्तुतीकरण और मानव शक्ति की शून्याधार समीक्षा करके दिनोंदिन बढ़ती हुई लागत के प्रति सावधान रहना होगा, जिससे कि रेलवे के समवाय उद्देश्यों और समस्त समवाय मिशन की प्राप्ति हो सके।

*

द्वितीय चरण के चतुर्थ वक्ता के रूप में श्री एस० भट्टाचार्य, वरि० मं० कार्मिक अधिकारी, पू० रे० आसनसोल की ओर से जब श्री शमशेर आलम, स० का० अधिकारी मंच पर आए और ज्योंही हिन्दी में भाषण देना प्रारम्भ किया, सभा भवन में उपस्थित श्रोतागण ने तालियों की गड़गड़ाहट से इनका स्वागत किया मानो वे हिन्दी भाषण की ही प्रतीक्षा बेकरारी से कर रहे हों।

श्री आलम ने निम्नांकित विषय पर प्रकाश डाला :—

अधिशेष पदों का उपयोग/पुनर्विन्यास

□ **एस० भट्टाचार्या**
वरि० मं० का० अधिकारी
पूर्व रेलवे, आसनसोल

ट्रैक्शन में परिवर्त्तन के चलते वाष्प इंजन शेड एवं इससे सम्बद्ध परिसम्पत्तियाँ बन्द हो जाने से अधिशेष कर्मचारियों का अनुकूलतम उपयोग अन्य क्षेत्रों में करने की योजना पहले से बनाने की जरूरत है ताकि कर्मचारी बैठा न रहे।

यदि अधिशेष पदों की पहचान कर ली गयी है और वे पदधारी मुक्त है तो उन्हें सीधे "सरेण्डर" कर दिया जाना चाहिए। अधिशेष कर्मचारियों को रिक्त जीवंत पदों पर वैसे अन्य विभागों में पुनर्विन्यस्त किया जाना चाहिए, जहाँ रिक्तियों को भरने की जरूरत है।

पुनर्विन्यास के पूर्व किसी भी प्रकार के औपचारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है। अधिशेष कर्मचारियों को पुनर्विन्यस्त करने के लिए रिक्तियों को भरने के मार्ग में कोई रुकावट नहीं है, किन्तु पुनर्विन्यास वहीं किया जाय जहाँ वास्तव में अतिरिक्त मानव-शक्ति की जरूरत है। ऐसा नहीं कि रिक्तियाँ हैं तो भरी जानी चाहिए।

अधिशेष वाष्प परिचालन कर्मचारियों को बिना उनकी शैक्षणिक योग्यता और उम्र सीमा पर ध्यान दिए डीजल/विद्युत ट्रैक्शन में प्रशिक्षित करना है।

प्रशिक्षण के अन्त में अयोग्य ठहराए गए कर्मचारियों को परिवर्त्तन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम उत्तीर्ण होने के लिए अधिक-से-अधिक तीन मौका दिया जाना चाहिए। उसके बाद भी यदि काम की परिवर्त्तित प्रणाली को हृदयंगम करने में कर्मचारी असमर्थ है और अयोग्य घोषित हो गया है तो उसे अन्य पद पर नियुक्त करने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

हर सम्भव प्रयास किया जाना चाहिए कि कर्मचारियों को अन्य कोटियों में नियुक्ति के चलते स्टेशन-परिवर्त्तन, क्वार्टर रखने, वेतन भुगतान आदि के सम्बन्ध में अनावश्यक परेशानी न हो।

अधिशेष पदों की पहचान हो जाने पर उन पदों पर काम करने वाले कर्मचारियों से निर्धारित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम उत्तीर्ण हो जाने के पश्चात् पहले यह विकल्प देने के लिए कहा जाना चाहिए कि वे विभिन्न विभागों और कोटियों में निम्नतम वरिष्ठता पर नियुक्त होने के लिए राजी हैं। इससे "पुनर्विन्यास" से उत्पन्न समस्या कम हो जाएगी, क्योंकि कर्मचारी खुद अपने "विकल्प" पर नए पद ग्रहण करेंगे। *

द्वितीय चरण के पंचम वक्ता के रूप में मंडल कार्मिक अधिकारी, धनबाद ने निम्नांकित विषय पर प्रकाश डाला। भाषण के पूर्व इन्होंने कहा—"मैं अंग्रेजी में भी भाषण दे सकता हूँ, पर अपने पूर्व वक्ता को हिन्दी में भाषण देते हुए और उनके हिन्दी भाषण का स्वागत श्रोताओं द्वारा तालियों की गड़गड़ाहट से करते हुए देखकर मैं अपना विचार हिन्दी में ही रखना चाहूँगा।"

हिन्दी के प्रति उनकी श्रद्धा को देखकर एक बार फिर तालियों की गड़गड़ाहट से सभामंडप गूँज उठा।

अधिशेष पद के लिए बैंक का सृजन

[CREATION OF BANK FOR SURPLUS POST]

□ हरेन्द्र प्रसाद सिंह
वरि० मं० का० अधिकारी
धनबाद

मानव-शक्ति आर्थिक संसाधन की कुंजी है, जिस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। मानव-शक्ति के लिए किया जा रहा खर्च भारतीय रेल के कुल कार्य संचालन खर्च का महत्त्वपूर्ण भाग है। इसलिए मानव-शक्ति संसाधनों का उपयोग अत्यधिक प्रभावकारी ढंग से हो, इस पर ध्यान दिया जाना महत्त्वपूर्ण है। प्रौद्योगिकी में तेजी से हो रहे परिवर्त्तन, कार्य की बढ़ी हुई जटिलता, जिसमें ज्ञान के विकास के लिए अत्यधिक अवधि की आवश्यकता होती है और महत्त्वपूर्ण कर्मचारियों की कुशलता तथा श्रम की लागत में अत्यधिक वृद्धि आदि कुछ ऐसे कारण है, जिनकी वजह से यह आवश्यक हो गया है कि भावी मानव-शक्ति की आवश्यकताओं का ठीक-ठीक आकलन किया जाय। भारतीय रेलों में लगभग 17.5 लाख कर्मचारी हैं। पेंशन दायित्व सहित कर्मचारियों पर होने वाला खर्च कुल कार्यसंचालन खर्च के 50% से अधिक है। हाल के वर्षों में प्रत्येक कर्मचारी पर होने वाले औसत खर्च में भारी वृद्धि हुई। भारतीय रेल के सामर्थ्य को गतिशील बनाए रखना, इस बात पर निर्भर है कि किस तरह भविष्य में मानव-शक्ति पर होने वाले खर्चों का अनुमान किया जाता है और उसे नियन्त्रित किया जाता है।

आज रेलवे बड़े प्रौद्योगिकी के प्रवेश द्वार पर खड़ा है, इसमें अबतक उपलब्ध कुशलता से भिन्न कुशलता की आवश्यकता होगी। इस तरह कुछ श्रेणियों के कर्मचारियों के अधिशेष होने की सम्भावना है/अन्य श्रेणियों में कर्मचारियों की कमी भी हो सकती है और कुछ नये श्रेणियों की आवश्यकता पड़ सकती है। काम के ढाँचे एवं प्रौद्योगिकी में हो रहे परिवर्त्तन के कारण विभिन्न विभागों में अधिशेष कर्मचारियों तथा उनकी

कमी के आकलन के लिए एक योजनाबद्ध प्रणाली की आवश्यकता होगी ।

अधिशेष पदों के बैंक के सृजन का मुख्य उद्देश्य विद्यमान अधिशेष पदों का पता लगाया जाना, प्रत्याशित अधिशेष पदों एवं भविष्य की पदाधिक्यता का आकलन है । अधिशेष पदों के आकलन के बाद उन्हें अभ्यर्पित करना दूसरा मुख्य उद्देश्य है तथा तीसरा महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है, इन अधिशेष पदों का प्रभावी ढंग से उपयोग करना तथा उनका पुनर्वास अगर पद पदधारी विहीन नहीं है । इस तरह दो प्रकार के अधिशेष पद हैं यथा—पदधारी सहित एवं पदधारी विहीन । पदधारी विहीन पद सीधे बैंक में जमा दिये जाते हैं, जबकि अधिसंख्य पदों को पद के एवज में पदधारी सहित बैंक में जमा करा दिया जाता है/जैसे ही अधिसंख्य पद पदधारी मुक्त हो जाता है, उसे कर्मचारी बैंक में जमा करा दिया जाता है ।

अब हमें उसी विभाग/विभिन्न विभाग में तदसदृश ग्रेड में तदरूप पदों का पता लगाना है ताकि अधिसंख्य पदों पर कार्य कर रहे व्यक्ति का पुनर्वास किया जा सके । अधिसंख्य पदों के तहत कार्य कर रहे व्यक्तियों के समय पर पुनर्वास हेतु विभिन्न प्रकार के आँकड़ों एवं सूचना की आवश्यकता पड़ती है ।

अधिशेष कर्मचारियों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि के कारण कुछ विभागों या अन्यत्र उनके पुनर्विन्यास की जरूरत है । उदाहरणार्थ स्टीम लोको शेडों को बन्द किए जाने, नये बॉक्स "एन" वैगन आरम्भ किए जाने, कार्यालय कार्यों के कम्प्यूटरीकरण एवं सरलीकरण, माल एवं पार्सल शेडों की बन्दी आदि कारणों से कर्मचारियों की आवश्यकता में कमी आई है । दूसरी तरफ बिजली लोको जैसी नयी परिसम्पत्तियों के अनुरक्षण के लिए आदमियों की आवश्यकता है । इस प्रकार की समस्या को नियमबद्ध तरीके से एवं लगातार समझाने के लिए अधिशेष पदों के बैंक का सृजन प्रत्येक रेलवे में विभागावार एवं ग्रेड के अनुसार किया गया है । आकलित किये गये सभी अधिशेष पदों और अभ्यर्पित पदों को बैंक के खाते में डाल दिया जाता है एवं पदों के सृजन के लिए किये गये मैचिंग सरेण्डर को बैंक के अवशेष से घटा दिया जाता है ।

पूर्व रेलवे केन्द्रीयकृत कर्मचारी बैंक में जमा किए गए अभ्यर्पित पदों की संख्या नीचे दिये गये चार्ट में प्रदर्शित की गई है :—

विभाग	दिनांक 1-4-92 से 30-3-93 तक की अवधि में	दिनांक 1-4-93 से 31-10-93 तक की अवधि में
यांत्रिक	1256	293
बिजली	12	12
यातायात	270	74
वाणिज्य	125	—
इंजीनियरी	386	374
संकेत एवं दूर संचार	12	—
भंडार	123	—
सुरक्षा	10	—
कार्मिक	14	—
मु० खान सलाहकार/धनबाद	41	41
चिकित्सा	—	9
	कुल योग—2249	803

ऐसे बैंक के कारगर संचालन के लिए कुशलता के सही विश्लेषण के साथ-साथ पर्याप्त आँकड़े और संगत सूचना आवश्यक है । मानव-शक्ति सूचना प्रणाली (MPIS) से जो अभी प्रक्रियाधीन है, पर्याप्त आँकड़े एवं सूचना प्राप्त होगी ।

दूसरे चरण के छठे वक्ता के रूप में दानापुर मंडल के वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री उदय प्रकाश लाल दास की ओर से श्री वाई० के० जायसवाल मं० का० अधिकारी ने निम्नांकित विषय पर भाषण दिया :—

विशेष अधिसंख्य पदों का सृजन

[CREATION OF SPECIAL SUPERNUMERARY POSTS]

☐ उदय प्रकाश लाल दास
वरि० मं० का० अधिकारी
दानापुर

(1) विशेष अधिसंख्य पदों के सृजन का प्रश्न तभी उठता है, जब फालतू कर्मचारियों को अन्य रिक्त पदों पर अविलम्ब पदस्थापित करना सम्भव नहीं हो पाता है। "विशेष" शब्द को अधिसंख्य के पूर्व अधिसंख्य पदों से इन पदों में अन्तर जाहिर करने के उद्देश्य से जोड़ा गया। अधिसंख्य पदों के सृजन की आवश्यकता तब होती है, जब किसी स्थायी कर्मचारी के ग्रहणाधिकार (LIEN) को सुरक्षित रखना होता है या किसी कर्मचारी को नियमानुसार स्थायी करना आवश्यक होता है और इसके लिए कोई अन्य स्थायी पद उपलब्ध न रहता है, परन्तु विशेष अधिसंख्य पदों के सृजन की आवश्यकता तब होती है, जब कर्मचारी-समीक्षा के फलस्वरूप फालतू घोषित किया जाता है और फालतू घोषित पद रिक्त नहीं रहते हैं। विशेष अधिसंख्य पदों के कर्मचारियों को एक अलग इकाई के रूप में उनकी पुनर्तैनाती, सेवा निवृत्ति इत्यादि तक रखा जाता है और उन्हें टिकट जाँच सवारी माल डिब्बों के विशेष रखरखाव, शेष बचे कार्यों को सम्पादित करने के कार्यों पर लगाया जाता है।

(2) विशेष अधिसंख्य पद उसी ग्रेड में सृजित किए जाते हैं, जिस ग्रेड में फालतू घोषित कर्मचारी होते हैं और ये पद उनके लिए व्यक्तिगत होते हैं। ज्योंही कर्मचारियों की अन्य रिक्तियों में पुनर्तैनाती, सेवानिवृत्ति या मृत्यु होती है, त्योंही विशेष अधिसंख्य पद समाप्त हो जाते हैं और रिक्त पदों को केन्द्रीय कर्मचारी बैंक में लेखा विभाग की सहमति के साथ जमा कर दिया जाता है।

(3) ज्योंही कर्मचारी सहित पदों को फालतू घोषित किया जाता है, त्योंही ऐसे कर्मचारियों के कैटेगरी, ग्रेड, स्टेशन/यूनिट, बिल यूनिट सं०, जन्म तिथि, नियुक्ति तिथि, सेवा निवृत्ति तिथि, शैक्षणिक/तकनीकी योग्यता का उल्लेख करते हुए एक सूची तैयार की जाती है और इस सूची को विशेष अधिसंख्य पदों के सृजन हेतु लेखा विभाग की सहमति लेते हुए प्रस्ताव सक्षम अधिकारी के पास स्वीकृति हेतु भेजा जाता है।

(4) इन पदों का सही लेखा-जोखा रखने के लिए प्रत्येक कर्मचारी डिलिंग यूनिट में उपर्युक्त विवरण के साथ रजिस्टर का अनुरक्षण करना है/इसके अलावा कार्मिक विभाग के कैडर रजिस्टर और लेखा विभाग के स्केल चेक रजिस्टर से इन पदों को हटाकर कर्मचारियों की संस्वीकृत सूची को संशोधित कर दिया जाता है।

(5) विशेष अधिसंख्य पदों के सृजन हेतु स्वीकृति प्राप्त हो जाने पर कर्मचारियों की पुनर्तैनाती के लिए प्रयास किए जाते हैं और इसके लिए आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण अथवा पुनर्प्रशिक्षण भी दिये जाते हैं।

*

द्वितीय चरण के सातवें वक्ता के रूप में मुगलसराय के वरि० मंडल कार्मिक अधिकारी श्री सुनील शर्मा ने निम्नांकित विषय पर अपना विचार प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी : मानव संसाधन पर शून्याधार समीक्षा
SEMINAR : ZERO BASE REVIEW ON HUMAN RESOURCE

संगोष्ठी में भाषण देते हुए **श्री आर० चट्टोपाध्याय**, मु०का० अधिकारी, पू०रे० कलकत्ता ।

संगोष्ठी में भाषण देते हुए **श्री एस० एस० गोडबोले**, निदेशक, इर्मी ।

संगोष्ठी में भाषण देते हुए **श्री अरुण कुमार तिवारी**, मु० का० प्रबन्धक, जमालपुर ।

संगोष्ठी में भाषण देते हुए **श्री अंगराज मोहन,**
का० का० अधि०/जमालपुर ।

दिनांक 21-12-94 को इर्मी के सभामण्डप में **"मानव संसाधनों की शून्याधार समीक्षा"** पर आयोजित **"संगोष्ठी"** में उपस्थित, आमंत्रित व्यक्ति, विभिन्न मंडलों से आए हुए वक्ता, ट्रेड यूनियनों के पदाधिकारी एवं जमालपुर कारखाना के अधिकारी तथा कर्मचारीगण ।

"अधिशेष कर्मचारियों की पुनर्तैनाती होने पर उनकी वरिष्ठता"

[SENIORITY OF SURPLUS STAFF ON REDEPLOYMENT]

☐ सुनील शर्मा
वरि० मं० का० अधिकारी
मुगलसराय

कर्षण में परिवर्त्तन, स्टीम लोकोशेड, मार्सलिंग यार्ड मालशेड एवं अन्य अनावश्यक परिसम्पत्तियों के बन्द हो जाने और सवारी माल डिब्बा डिपो के काम-काज में कमी हो जाने के परिणामस्वरूप भारी संख्या में कर्मचारीगण अधिशेष (सरप्लस) हो गए हैं।

चूँकि भारत एक कल्याणकारी राज्य है और फलतः भारतीय रेल को अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की सिफारिशों में वर्णित शर्त्तों को पूरा करना है, इसलिए उक्त अधिशेष (सरप्लस) कर्मचारी को एकदम नौकरी से नहीं निकाला जा सकता। इस तथ्य के मद्देनजर उक्त अधिशेष (सरप्लस) कार्मिकों को उनके अपने ग्रेड और वेतन में पुनर्तैनात करने का सवाल पैदा होता है ताकि उक्त कर्मचारियों के हितों की रक्षा हो सके।

रेल प्रशासन इन अधिशेष कर्मचारियों को उन रिक्तियों पर पुनर्तैनात करता है, जो रिक्तियाँ विभिन्न वरिष्ठता ग्रूपों में या तो उसी विभाग में अथवा अन्य विभागों में उपलब्ध हों। इसलिए यह प्रश्न उठता है कि सरप्लस हो गये कर्मचारियों की वरिष्ठता उनकी पुनर्तैनाती (Redeployment) पर किस प्रकार निर्धारित की जाय।

अधिशेष कर्मचारियों की पुनर्तैनाती निम्नलिखित पद्धतियों में से किसी एक का अनुसरण करते हुए की जा सकती है। प्रत्येक पद्धति के सामने वरिष्ठता निर्धारित करने के मूलभूत सिद्धान्त भी वर्णित हैं :—

1. अधिशेष स्टाफ को उसी विभाग के अन्य यूनिटों में उसी कोटि में और उसी वरिष्ठता ग्रूप में पुनर्तैनात करते समय कोई पेंचीदगी पैदा नहीं होती, क्योंकि इस मामले में वरिष्ठता ग्रूप नहीं बदलता। स्पष्ट है इस पद्धति के अनुसार वरिष्ठता सामान्य नियमों के अनुसार निर्धारित की जाएगी।

2. अधिशेष कर्मचारियों को जब भिन्न वरिष्ठता ग्रूप वाले अन्य यूनिटों या विभाग में पुनर्तैनात किया जाता है, तब निम्नलिखित पद्धति अपनाई जानी चाहिए :—

(अ) यदि अधिशेष कर्मचारियों की संख्या थोड़ी हो और उन्हें अन्य विभाग/यूनिटों के मंजूरशुदा पदों पर स्थानान्तरित किया जाना हो, तो इस मामले में उनकी वरिष्ठता उस सम्बन्धित यूनिट के साथ संयुक्त कर दी जाय, जिस यूनिट में उन्हें स्थानान्तरित किया गया है। इस तरह के स्थानान्तरण का प्रशासनिक आधार पर किया गया स्थानान्तरण माना जाना चाहिए।

(आ) जब अधिशेष कर्मचारी बहुत बड़ी संख्या में किसी ऐसे यूनिटों/विभागों में स्थानान्तरित किये जा रहे हों जिनका गठन हो रहा है, जैसे नवस्थापित बिजली शेड, तब ऐसे मामले में अधिशेष स्टाफ की वरिष्ठता नए यूनिट की वरिष्ठता के साथ मिला दिया जाना चाहिए और ऐसा करते समय पूर्व सेवा/वरिष्ठता का पूरा लाभ दिया जाना चाहिए।

(इ) जब कभी अधिशेष कर्मचारी बहुत अधिक संख्या में पहले से स्थापित यूनिटों में वहाँ उपलब्ध रिक्तियों अथवा अतिरिक्त मंजूर पदों पर स्थानान्तरित किया जाय तब इस प्रकार आए उक्त अधिशेष स्टाफ की वरिष्ठता उनके मूल कैडर में अलग रखी जाय। इस तरह उनकी वरिष्ठता और उनकी पदोन्नति के अवसर अलग और वही बने रहेंगे जो उन्हें अपने मूल कैडर में उपलब्ध रहते। इस

प्रक्रिया में पहले से विद्यमान स्टाफ की वरिष्ठता और उनके पदोन्नति के अवसर प्रभावित नहीं होंगे ।

(ई) ऐसे मामलों में जहाँ अधिशेष स्टाफ की वरिष्ठता का रखरखाव अलग किया जा रहा है, ऐसे दृष्टांत भी हो सकते हैं, जिनमें पुराने वरिष्ठता यूनिट में पीछे छुटे कुछ कर्मचारी अपनी वरिष्ठता के अनुसार नये यूनिट में स्थानान्तरित अन्य कर्मचारियों के साथ पदोन्नति पाते रहे । कुछ मामलों में यह भी हो सकता है कि पीछे छुटे स्टाफ के स्थानान्तरण से बचने के लिए निर्धारित प्रतिशत से अधिक उच्च ग्रेड के अनेक पदों को ऑपरेट करना पड़ेगा । तथापि यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि पुराने यूनिट के प्रत्येक ग्रेड में पदों के कुल संख्या जिसमें पीछे छुटे और नयी यूनिटों में स्थानान्तरित दोनों तरह के कर्मचारियों की संख्या शामिल है, मूल संस्वीकृत पदों की संख्या से अधिक नहीं होनी चाहिए ।

3. कनिष्ठतम कर्मचारियों के मामले में इस बात का ध्यान रखे बिना कि ये किस तरीके से अपने ग्रेड में प्रविष्ट हुए हैं, अधिशेष घोषित किया जाना चाहिए तथापि जहाँ कर्मचारियों ने अन्य विभागों में अपने भर्त्ती ग्रेड की वरिष्ठता में सबसे नीचे रहने के लिए अपनी सहमति दे दी है, ऐसे इच्छुक कर्मचारियों को रिक्तियों की उपलब्धता को देखते हुए प्राथमिकता दी जानी चाहिए । ऐसी स्थिति में जिन कर्मचारियों ने अन्य विभाग की सम्बन्धित वरिष्ठता सूची में सबसे नीचे रहने का विकल्प दिया है, उन कर्मचारियों की वरिष्ठता सम्बन्धित कोटि में उस ग्रेड के सभी विद्यमान कर्मचारियों की सूची में सबसे नीचे निर्धारित की जाएगी ।

उक्त सभी मामलों में अधिशेष स्टाफ की परस्पर वरिष्ठता का अनुरक्षण किया जाना अपेक्षित है ।

●

[नोट :— इन भाषणों की विस्तृत जानकारी के लिए कृपया अलग से तैयार पुस्तिका (बुकलेट) का अध्ययन करें ।]

लघुकथा

शर्त्त

□ निर्मल निलिंद

उसने अपने पूरे जीवन में लूट, बलात्कार छिनतई जैसे कई मामलों को अंजाम दिया था, और इसके बावजूद पुलिस को चाँदी के जूते दिखाकर चुप किये हुए था । वह इलाके का माना हुआ अपराधी था और किसी राजनीतिक दल में प्रवेश का इच्छुक था ।

ऐसे तो दल में उसके कई शुभचिन्तक थे, पर अध्यक्ष ने अन्तिम निर्णय के पूर्व उसे साक्षात्कार के लिए बुलाया। अध्यक्ष ने उससे कई प्रश्न किये मसलन क्या वह सभाओं के लिए भीड़ और चन्दा जुटा सकता था ? उसने तत्परता से जवाब देते हुए उन्हें सूचित किया कि उसके पास समर्पित लोगों की कमी नहीं है । और उन्होंने उसे एक बार थाने की हाजत से भी छुड़ाया था । यही नहीं नगर में कौन ऐसा था, जो उसे रंगदारी देने में आना-कानी करें । इस तरह दो प्रश्नों के उत्तर सफलतापूर्वक देने के बाद अध्यक्ष ने उसे सबसे बड़ा प्रश्न यह पूछा कि वह दंगा करवा सकता है । उसने अध्यक्ष से थोड़ा समय माँगा और किसी बात पर तकरार करके दिन-दहाड़े अपने विरोधी और दूसरे सम्प्रदाय के किसी अपराधी की हत्या कर दी और फरार हो गया ।

नगर को जो होना था हुआ, पर उसने शर्त्त पूरी कर दी थी । अब शर्त्त पूरा करने की बारी अध्यक्ष की थी।

●

गतांक से आगे

ऋण तथा अग्रिम

□ अंगराज मनोहरन
कार० कार्मिक अधिकारी

राज्य रेलवे भविष्य निधि से अग्रिम :—

रेल कर्मचारी अपनी भविष्य निधि (923 आर-1) से अग्रिम ले सकते हैं। यह अग्रिम दो प्रकार का होता है :—

1. अस्थायी
2. अन्तिम

1. अस्थायी अग्रिम :—

यह अग्रिम निम्नलिखित प्रयोजनों के लिए लिया जा सकता है। किन्तु, इसकी राशि रेल कर्मचारी द्वारा अंशदान की वास्तविक राशि और उस पर मिलने वाले ब्याज की राशि से अधिक नहीं होगी।

जिन प्रयोजनों के लिए अस्थायी अग्रिम की निकासी की जा सकती है, वे निम्नलिखित हैं :—

(क) अगर कोई रेल कर्मचारी चिकित्सा प्रमाण-पत्र पर छुट्टी लेकर भारत से बाहर जा रहा है या किसी प्रकार की डाक्टरी चिकित्सा कराकर विदेश से वापस भारत आ रहा है तो वह यह अग्रिम (923 (जी) 1-आर-1) ले सकता है, जिसकी राशि उतनी ही होगी जितनी यात्रा की लागत है, वशर्ते कि अन्य शर्तें पूरी की जा रही हों (923, परन्तुक (ए) -आर-1)

(ख) अंशदाता और/या उनके परिवार के सदस्यों और/या उनके आश्रित की गम्भीर बीमारी या प्रसूति गृह में रहने की स्थिति में चिकित्सा खर्च पूरा करने के लिए भविष्य निधि से अग्रिम की निकासी की जा सकती है। (923 (जी) (ii) -आर-1) अराजपत्रित अंशदाता की स्थिति में इस प्रकार के अग्रिम की राशि 500/- रुपये और राजपत्रित अंशदाता की स्थिति में 1000/- रुपये होगी (923, परन्तुक (बी)-आर-1) इस अग्रिम की वापसी 12 से कम और 24 से अधिक किस्तों में नहीं होगी।

(ग) अंशदाता या उन पर वास्तविक रूप से आश्रित किसी व्यक्ति को निम्नलिखित प्रकार के मामलों में शैक्षणिक खर्च पूरा करने के लिए या शिक्षा हेतु विदेश यात्रा खर्च को पूरा करने के लिए भविष्य निधि से अग्रिम स्वीकृत किया जाता है (923, (जी) (ii) (ए) (बी)-आर-1)।

(i) उच्च विद्यालय स्तर से ऊपर शैक्षणिक, तकनीकी पेशा से सम्बन्धित या व्यावसायिक पाठ्यक्रम की शिक्षा भारत से बाहर में पाने के लिए (923 (जी) (iii) (ए)-आर-1)।

(ii) उच्च विद्यालय स्तर से ऊपर भारत के अन्दर चिकित्सा, इंजीनियरी या अन्य तकनीकी या विशिष्ट पाठ्यक्रमों के लिए (924, (जी) (iii) (बी)-आर-ii)।

विदेश में शिक्षा पाने की स्थिति में यह रकम तीन महीने की परिलब्धियों के बराबर और भारत में शिक्षा पाने की स्थिति में $1\frac{1}{2}$ महीने की परिलब्धियों के बराबर होगी। फिर भी यदि अंशदाता अराजपत्रित कर्मचारी है तो अग्रिम की राशि 500/- रुपये और यदि राजपत्रित कर्मचारी है तो अग्रिम की राशि 1000/- रुपये होगी, अगर अग्रिम की प्राप्य राशि इन राशियों में कम होती हो। यह अग्रिम 12 से कम और 24 से अधिक किस्तों में वापस होने योग्य नहीं है। (आर-1-923, परन्तुक (बी)।

(घ) अपने या बच्चों या आश्रित सदस्यों का विवाह खर्च पूरा करने के लिए भविष्य निधि से अग्रिम की निकासी की जा सकती है। इस शीर्ष के अन्दर मिलने वाली रकम साधारण और विशिष्ट मामलों से भिन्न है। विशिष्ट मामलों की सिफारिश वरिष्ठ पर्यवेक्षकों द्वारा की जानी चाहिए। प्राप्य राशि निम्न प्रकार है :—

के विवाह हेतु	सामान्य मामले	विशिष्ट मामले
स्वयं/पुत्र	3 महीने की परिलब्धियाँ	6 महीने की परिलब्धियाँ
पुत्री/बहन	6 महीने की परिलब्धियाँ	10 महीने की परिलब्धियाँ

निकास किया गया अग्रिम अधिक-से-अधिक 60 किस्तों में वापस होने योग्य है। (आर-1, 923, परन्तुक (सी) एवं (डी)।

(ङ) ठेका मिल जाने पर रेल कर्मचारियों के ग्रेजुएट पुत्रों/सम्बन्धियों द्वारा रेलवे स्टेशनों पर बुक स्टॉल खोलने के लिए भविष्य निधि से अग्रिम की निकासी की जा सकती है। इसके लिए अग्रिम की रकम 3000/- रुपये है।

(च) मोटरकार, मोटर साइकिल/स्कूटर खरीदने के लिए,लिए गए कर्ज को वापस करने या खरीदने या बुकिंग के लिए भ० नि० से अग्रिम की निकासी की जा सकती है। मोटरकार और मोटर साइकिल खरीदने के लिए अग्रिम की राशि क्रमशः 50,000/- रुपये और 8000/- रुपये होगी। मोटरकार और मोटर साइकिल की बुकिंग के लिए अग्रिम की राशि क्रमशः 10,000/- रुपये 500/- रुपये होगी। यह अग्रिम तभी प्राप्य है, जब मोटरकार/मोटर साइकिल से सम्बन्धित सभी शर्त्तें पूरी की गयी हों।

(छ) किसी मकान या फ्लैट के निर्माण या प्लॉट की कीमत अदा करने के लिए या दिल्ली विकास प्राधिकरण या स्टेट हाउसिंग बोर्ड/प्राधिकरण या भवन निर्माण सहयोग समिति द्वारा आवंटित फ्लैट की कीमत का भुगतान करने के लिए 3 महीने की परिलब्धियाँ या विशेष मामले में 6 महीने की परिलब्धियाँ या अंशदाता के खाता में जमा राशि की आधी रकम अग्रिम के रूप में निकास की जा सकती है।

इस प्रकार का अग्रिम दुबारा तबतक निकास नहीं किया जा सकता है जबतक पहले लिए गए अग्रिम की कम-से-कम 50% रकम की वापसी नहीं हो गयी हो। फिर भी, पूरी रकम अदा होने की पूर्ण अवधि में से आधी अवधि बीतने के पूर्व भी यह अग्रिम स्वीकृत किया जा सकता है।

यह अग्रिम यह देखते हुए स्वीकृत किया जाएगा कि किसी कर्मचारी के वेतन से की जाने वाली सभी अनिवार्य कटौतियों के बाद अंशदाता को प्राप्त होने वाली शुद्ध रकम मूल वेतन के 50% से कम न हो। जबतक कि अंशदाता कम किस्तों में वसूली की स्वैच्छा प्रकट नहीं करता तबतक अग्रिम की रकम 24 से कम किस्तों में वापस नहीं होगी और भी कि जबतक रेलवे बोर्ड का आदेश प्राप्त नहीं होता तबतक किस्तों की संख्या 24 से अधिक नहीं होगी। फिर भी, स्वयं बच्चों या आश्रित सम्बन्धियों आदि के विवाह के प्रयोजन के लिए लिया गया अग्रिम यदि 3 महीने की परिलब्धियों से अधिक होता है तो किस्तों की संख्या बढ़कर 60 हो सकती है।

जिस माह में अग्रिम का भुगतान होगा उसके एक माह बाद मिलने वाले वेतन से अग्रिम की वसूली प्रारम्भ हो जाएगी। (923-आर-1)

चिकित्सा खर्च, शैक्षणिक खर्च तथा विवाह खर्च पूरा करने के लिए, लिए गए अग्रिम के मामले में रेल कर्मचारी लिखित अनुरोध करके शेष बची अग्रिम राशि को अंतिम निकासी के रूप में परिवर्त्तित कर सकता है, वशर्त्ते कि इस निकासी से सम्बन्धित अपेक्षित शर्त्त पूरी कर रहे हों। ऐसी स्थिति में वसूली के लिए शेष बची राशि अन्तिम निकासी मानी जाएगी। (सन्दर्भ 6.3, पृ० 8, एम० सी०)

अंतिम निकासी :

रा० रे० भ० निधि से "अन्तिम निकासी" निम्न-लिखित मामलों में स्वीकृत की जाती है :—

1. भवन या उपयुक्त मकान और/या मकान के लिए जमीन या बिल्कुल निर्मित फ्लैट प्राप्त करने या इस कार्य के लिए, लिए गए कर्ज की बची राशि की अदायगी के लिए राज्य रेलवे भविष्य निधि से

"अंतिम निकासी" की जा सकती है वशर्ते कि अंशदाता ने कम-से-कम 20 वर्ष की सेवा पूरी कर ली है। निकास की जाने वाली यह रकम मकान की वास्तविक लागत जमीन की कीमत सहित या उस प्रयोजन के लिए,लिए गए कर्ज की वापसी के लिए हो सकती है।

अंशदाता आवास हेतु मकान बनवाने के लिए जमीन खरीदने या मकान की जमीन खरीदने के प्रयोजन से लिए गए कर्ज की वापसी के लिए भविष्य निधि से "अंतिम निकासी" कर सकते हैं। दिल्ली में "लीज" पर खरीद की गयी जमीन भी इस प्रावधान में शामिल है। निकास की जाने वाली यह राशि, अंशदाता के खाता में जमा राशि और उस पर मिलने वाले ब्याज की आधी या जमीन की वास्तविक कीमत इनमें जो कम होगी वही प्राप्य होगी।

भविष्य निधि से अंतिम निकासी निम्नलिखित प्रयोजनों के लिए भी की जा सकती है :—

अपने स्वामित्व के या अंशदाता के अपने संसाधनों से या अन्य सरकारी संसाधनों से लिए गए अग्रिम की मदत से या भ० निधि से निकाली गयी राशि से खरीदे गए वर्त्तमान भवन के आवश्यक संवर्धन, परिवर्त्तन और/या पुनर्निर्माण के लिए।

"अंतिम निकासी" अपने पैतृक मकान के अनुरक्षण के लिए भी की जा सकती है।

इन प्रयोजनों के लिए निकास की गई रकम वास्तविक खर्च या 10,000/- रुपये इनमें से जो कम होगी वही प्राप्य होगी चाहे एक बार या दो अवसरों पर निकाली जाय। (925-आर-1)

2. **फार्म लैंड या व्यावसायिक परिसरों के लिए अग्रिम :**

अंशदाता फार्म लैंड और/या व्यावसायिक परिसर या दोनों के अर्जन के लिए अपनी सेवानिवृति के पूर्व छः माह के भीतर अपनी रा० रे० भ० निधि से "अंतिम निकासी" कर सकते हैं। (क्रमांक 904)

अगर अंशदाता दिल्ली का निवासी है तो वह दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा प्रायोजित किसी गृह-निर्माण योजना के अन्तर्गत निबन्धन कार्य के लिए "अंतिम निकासी" कर सकता/सकती है/निकासी की रकम उनके खाते में जमा राशि और उसके ब्याज से अधिक नहीं होगी। फिर भी, इसमें शर्त्त यह है कि अगर अंशदाता 3 वर्षों के अन्दर आवंटन प्राप्त करने में असफल रहता है तो कर्मचारी निकास की गई रकम ब्याज सहित तत्काल वापस कर देंगे। ब्याज की दर वही रहेगी जो दिल्ली विकास प्राधिकरण स्वीकृत करेगा।

3. **विवाह हेतु अंतिम निकासी :**

स्वयं, पुत्र, पुत्री या आश्रित के विवाह के लिए भी भविष्य निधि से अन्तिम निकासी की जा सकती है। किन्तु यह निकासी विवाह की तिथि से तीन महीने के भीतर ही की जा सकेगी। राशि उतनी ही रहेगी जितनी अस्थायी निकासी के मामले में रहेगी जैसा कि ऊपर वर्णित है। (925 (3)-आर-1)

4. **शिक्षा के लिए अंतिम निकासी :**

स्वयं या बच्चों के उच्चतर अध्ययन जारी रखने के लिए भी अन्तिम निकासी की जा सकती है। राशि और शर्त्तें वही रहेंगी जो अस्थायी अग्रिम के मामले में लागू हैं। (925 (4)-आर-1)

5. **चिकित्सा खर्च के लिए अन्तिम निकासी :**

अंशदाता या उन पर आश्रित किसी व्यक्ति की बीमारी और यात्रा खर्च पूरा करने के लिए भी अंतिम निकासी की जा सकती है। किन्तु इस कार्य के लिए निकास की जाने वाली राशि छः माह के वेतन या अंशदाता के खाते में ब्याज सहित जमा राशि के 50% में से जो कम होगी वही प्राप्य होगी। किन्तु यहां यह अनुबन्ध है कि किसी व्यक्ति विशेष की बीमारी के मामले में चाहे अन्तिम निकासी या अस्थायी निकासी कोई एक निकासी ही की जा सकती है। (925 (5)-आर-1)

6. **दाह-संस्कार खर्च के लिए अंतिम निकासी :**

अंशदाता की मृत्यु पर उनके दाह-संस्कार खर्च के लिए भी अन्तिम निकासी की जा सकती है। इसमें अंशदाता के दो महीने के वेतन या 500/- रुपये तक (सं० वे०/73 के अन्तर्गत) इसमें जो राशि कम होगी उसकी निकासी की अनुमति रहेगी। इस राशि का

भुगतान उसी व्यक्ति को किया जाता है जो भ० नि० की राशि पाने का पात्र है। (824, आर-1)

7. मोटर कार/मोटर साइकिल/स्कूटर के लिए अंतिम निकासी :

रेल कर्मचारी, जिन्होंने 15 वर्षों की सेवा पूरी कर ली है (किसी प्रकार के सेवाभंग की अवधि सहित) या जिनको अधिवार्षिकी की उम्र पर पहुँचने में 5 वर्ष से कम है, रा० रे० भ० निधि (अंशदायी/गैर अंशदायी) से मोटर कार, मोटर साइकिल या स्कूटर आदि खरीदने के लिए या इस प्रयोजन से लिए गए सरकारी ऋण की अदायगी के लिए अन्तिम निकासी कर सकते हैं। किन्तु यह अग्रिम निम्नांकित शर्तों पर प्राप्त होगा :—

(क) मोटरकार की खरीद के मामले में आवेदक का मूल वेतन प्रतिमाह 3500/- रुपये या अधिक होना चाहिए और मोटर साइकिल/स्कूटर आदि के मामले में प्रतिमाह 1500/- रुपये या अधिक/ यहाँ मूल वेतन का अर्थ वही होगा नियम 2003 (21) (ए) में परिभाषित है अर्थात् विशेष वेतन, महँगाई वेतन और ऐसे अन्य वेतन को छोड़कर, किन्तु एन० पी० ए० को सम्मिलित किया जाएगा।

(ख) मोटर साइकिल/स्कूटर आदि खरीदने के लिए निकास की जाने वाली राशि अधिक-से-अधिक 50,000/- रुपये होगी (क्रमांक 173/90) वैसे मामलों में जहाँ स्टाफ को इन वाहनों की बुकिंग के लिए डिपॉजिट की स्वीकृति दे दी गयी है, वहाँ आवंटन पर ऐसे वाहनों की खरीद के लिए वे अवशेष राशि पाने के ही पात्र होंगे।

निकास की जाने वाली ऐसी राशि के लिए यह भी शर्त है कि यह राशि अंशदाता के रा० रे० भ० नि० खाते में जमा राशि के 50% से अधिक नहीं होनी चाहिए या रा० रे० भ० नि० (अंशदायी) के मामले में अंशदाता के खाते में क्रय हेतु निकासी के आवेदन-पत्र की तिथि को जमा ब्याज सहित अंशदान की राशि या वाहन की वास्तविक कीमत इसमें से जो भी कम होगी उसी की निकासी की जा सकेगी। (क्रमांक 176/88)

रेलवे में भविष्य निधि से अस्थायी अग्रिम और अन्तिम निकासी स्वीकृत करने वाले सक्षम प्राधिकारी निम्न प्रकार हैं :—

के लिए		सक्षम प्राधिकारी
1. ग्रेड "डी" स्टाफ	:	कनिष्ठ वेतनमान अधिकारी
2. ग्रेड "सी" स्टाफ	:	वरिष्ठ वेतनमान अधिकारी
3. राजपत्रित अधिकारी कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड तक	:	मुख्य कार्मिक अधिकारी (मुकाधि)
4. विभागाध्यक्ष और ऊपर	:	रेलवे बोर्ड

घर की चिन्ताएं घर पर और कार्यालय की चिन्ताएं कार्यालय में छोड़ें।

जमालपुर राजभाषा विभाग : उपलब्धियाँ एवं पुरस्कार

□ उपेन्द्र सिंह
रा० सहायक

साहित्यिक :

राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध रेल इंजन कारखाना, जमालपुर की अर्द्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका "कर्मवीर" पिछले छः वर्षों से लगातार हर बार एक नए कलेवर और नई पठनीय सामग्रियों के साथ प्रकाशित हो रही है, जिसकी प्रशंसा न केवल पूर्व रेलवे, बल्कि अन्य रेलवे द्वारा भी की जा रही है। इसकी अस्मिता में दिनोंदिन इजाफा हो, इसके लिए सम्पादक-मंडल के पदाधिकारीगण पूर्णतः सचेष्ट हैं। हजारों की संख्या में रेलकर्मी पाठक इस पत्रिका से अपना ज्ञानवर्द्धन कर रहे हैं तथा साहित्य की विभिन्न विद्याओं में अपनी प्रतिभा बढ़ा रहे हैं।

सांस्कृतिक :

"कर्मवीर" के संरक्षक एवं मुख्य कारखाना प्रबन्धक श्री अरुण कुमार तिवारी जमालपुर की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्रिया-कलापों में स्वयं काफी अभिरुचि लेते हैं, जिससे जमालपुर रेल इंजन कारखाना साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपनी अग्रगण्यता अक्षुण्ण रखते हुए दिनोंदिन प्रगति के पथ पर बढ़ रहा है।

हिन्दी दिवस/पखवाड़ा :

जमालपुर कारखाने में दिनांक 14 सितम्बर '94 से 28 सितम्बर '94 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इस अवसर पर निम्नांकित कार्यक्रम आयोजित किए गए :—

(क) हिन्दी के प्रयोग-प्रसार सम्बन्धी 200 पोस्टर छपवाकर समस्त रेल कार्यालयों/शॉपों में चिपकाए गए।

(ख) दिनांक 23-9-94 को हिन्दी एवं गैर हिन्दी भाषी कर्मचारियों के बीच अलग-अलग हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं और प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले कर्मचारियों को मु० का० प्र०/पू० रे०, जमालपुर के कर-कमलों द्वारा दिनांक 30-9-94 को तिमाही बैठक में नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। उनके नाम निम्नांकित हैं :—

हिन्दी भाषी कर्मचारी

क्रमांक	सर्वश्री नाम, पदनाम और कार्यालय	स्थान	पुरस्कार की राशि
1.	प्रमोद कुमार सिंह, वरिष्ठ लिपिक, स्था.-2 (कार्मिक शाखा)	प्रथम	200/-
2.	राजेन्द्र पंडित, प्रधान लिपिक, उपमुख्य यांत्रिक इंजी० (परि०) कार्यालय	द्वितीय	150/-
3.	रेणु सिंह, लिपिक ग्रेड-2, कारखाना प्रबंधक (संयंत्र) कार्यालय	तृतीय	100/-

गैर हिन्दी भाषी कर्मचारी

1.	मो० जमील अहमद खाँ, लिपिक ग्रेड-1, स्था.-1 (कार्मिक शाखा)	प्रथम	200/-
2.	पी० के० राय, प्रभारी, कम्प्यूटर केन्द्र, जमालपुर	द्वितीय	150/-
3.	नरेश चन्द्र साहा, प्र० लि०, स्था०-1, कार्मिक शाखा	तृतीय	100/-

(ग) दिनांक 26-9-94 को हिन्दी एवं गैर हिन्दी भाषी अधिकारियों के बीच अलग-अलग "हिन्दी लेखन" प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं। जिन अधिकारियों ने प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया, उन्हें मु० का० प्र०/पू० रे०, जमालपुर के कर-कमलों द्वारा दिनांक 30-9-94 को तिमाही बैठक में "प्रशस्ति-पत्र" प्रदान किए गए। उनके नाम निम्न प्रकार हैं :—

हिन्दी भाषी

1. श्री अनिमेष कुमार सिन्हा, कार० प्रबन्धक (डीजल) : प्रथम
2. श्री परमानन्द सिंह, उपमुराधि एवं उपमुख्य यां० इं० (परियोजना) : द्वितीय
3. श्री परमानन्द प्रसाद सिन्हा, सहायक निरी० अधिकारी : तृतीय

गैर हिन्दी भाषी

1. श्री विश्वनाथ बाग, स० भं० नियन्त्रक : प्रथम
2. श्री दिलीप कुमार मुखर्जी, उत्पादन इंजीनियर : द्वितीय
3. श्री अमूल्य रतन व्यापारी, सहायक कारखाना प्रबन्धक (निर्माण) : तृतीय

(घ) दिनांक 21-9-94 को भंडार हिन्दी पुस्तकालय (हिन्दी भवन) में मु० का० प्रबन्धक, पू० रे०, जमालपुर की अध्यक्षता में 'कवि सम्मेलन' का आयोजन किया गया, जिसमें जमालपुर और मुंगेर के सुप्रसिद्ध कवियों ने भाग लिया ।

(ङ) दिनांक 30-9-94 को कारखाना राजभाषा कार्यान्वयन समिति/जमालपुर की तिमाही बैठक का आयोजन किया गया ।

हिन्दी पखवाड़ा का मुख्य समारोह हिन्दी दिवस 14 सितम्बर' 94 को इर्मी के सभामंडप में आयोजित किया गया, जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम, काव्यपाठ, पुरस्कार वितरण आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए । हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० शिवचन्द्र प्रताप, भू० पू० हिन्दी विभागाध्यक्ष, आर० डी० एण्ड डी० जे० कॉलेज, मुंगेर उक्त समारोह के मुख्य अतिथि, इर्मी के निदेशक श्री एस० एस० गोडबोले विशिष्ट अतिथि और मु० का० प्रबन्धक, श्री अरुण कुमार तिवारी अध्यक्ष थे । उक्त अवसर पर हिन्दी अर्द्धवार्षिक पत्रिका "कर्मवीर" अंक-11 (राजभाषा अंक) का विमोचन कार्य-सम्पन्न हुआ । पूर्ण निष्ठा के साथ अपना सारा काम-काज अपनी गौरवमयी राजभाषा हिन्दी में करने तथा दूसरों को भी प्रेरित करने का दृढ़ संकल्प लिया गया । उक्त समारोह में "कर्मवीर" पत्रिका के उत्कृष्ट सम्पादन-कार्य पर प्रसन्न होकर मु० का० प्रबन्धक ने प्रधान सम्पादक श्री शाह मोहम्मद सिद्दीकी, सम्पादक श्री देवनारायण साह एवं सह-सम्पादक श्री भोला प्रसाद भगत को प्रशस्ति-पत्र तथा सह-सम्पादक श्री उपेन्द्र सिंह, श्री राजकिशोर मंडल और हिन्दी टंकक श्री आमोद प्रसाद को डेढ़-डेढ़ सौ रुपये नकद पुरस्कार प्रदान किया ।

हिन्दी कार्यशाला :

जमालपुर कारखाने में "हिन्दी कार्यशाला" निरंतर चलाई जा रही है । अब तक 46 कार्यशालाएँ चलाई जा चुकी हैं, जिसमें 692 लिपिक वर्गीय कर्मचारी प्रशिक्षित हो चुके हैं । प्रत्येक कार्यशाला की समाप्ति पर एक जाँच परीक्षा ली जाती है और उसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले को क्रमश: 150/- 125/- रु० एवं 100/- का नकद पुरस्कार प्रमाण-पत्र के साथ प्रदान किया जाता है ।

पिछली 45 वीं और 46 वीं कार्यशाला में पुरस्कार पाने वालों के नाम इस प्रकार हैं :—

45 वीं कार्यशाला

		नकद पुरस्कार
1. श्री जयप्रकाश अम्बष्ठ/लिपिक-I/बी० बी० एफ०	प्रथम	100/- रु०
2. श्री मनोहर उरांव/का० अधी०/समय कार्यालय	द्वितीय	75/- रु०

46 वीं कार्यशाला

1. श्री ब्रह्मदेव झा/लिपिक-I/समय कार्यालय	प्रथम	150/- रु०
2. श्री उमाकांत उपाध्याय/प्र० लिपिक/बी० बी० एफ०	द्वितीय	125/- रु०
3. श्री नेम नारायण सिंह/लिपिक-I/समय कार्यालय	तृतीय	100/- रु०

हिन्दी प्रशिक्षण :

अहिन्दी भाषी कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य-साधक ज्ञान देने के लिए हिन्दी प्रशिक्षण की विभागीय व्यवस्था की गयी है, जो निरन्तर जारी है। नवम्बर' 94 में आयोजित परीक्षा में प्रवीण में 10 और प्राज्ञ में 15 परीक्षार्थी सम्मिलित हुए। अब तक कुल 308 कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

हिन्दी प्रोत्साहन योजना—1988

यह योजना जमालपुर कारखाने में 1 अप्रैल, 1989 से चालू की गयी है। वर्ष 1993-94 में यांत्रिक विभाग के 3 यूनिटों के 30 सफल कर्मचारियों तथा भंडार विभाग के एक यूनिट के 10 सफल कर्मचारियों को हिन्दी दिवस 14 सितम्बर' 94 को आयोजित समारोह में मु० का० प्रबन्धक के कर-कमलों द्वारा नकद पुरस्कार प्रदान किया गया।

वर्ष 1994-95 में हिन्दी में किए गए कार्यों का लेखा-जोखा रखने के लिए 150 डायरियाँ वितरित की गयी हैं।

हिन्दी टंकण प्रशिक्षण :

जमालपुर कारखाने में कार्यरत 33 अंग्रेजी टाइपिस्टों में से 30 टाइपिस्टों ने हिन्दी टंकण प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है।

हिन्दी आशुलिपि प्रशिक्षण :

कुल 18 अंग्रेजी स्टेनोग्राफरों में से 14 स्टेनोग्राफर हिन्दी आशुलिपि प्रशिक्षण पा रहे हैं। इनकी परीक्षा जनवरी, 1995 में होगी जिसके लिए ये परीक्षा फार्म भर चुके हैं।

हिन्दी पुस्तकालय :

जमालपुर कारखाने में भंडार एवं डीजल शेड को मिलाकर कुल पाँच हिन्दी पुस्तकालय स्थापित हैं, जहाँ वाचनालय की भी व्यवस्था है। यहाँ अनेक प्रकार की पत्र-पत्रिकाएँ मंगाई जाती हैं, जिनका लाभ रेल कर्मचारी उठा रहे हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ :

जमालपुर कारखाने में भंडार, डीजल शेड एवं चिकित्सा विभाग मिलाकर छः रा० भा० का० समितियाँ स्थापित हैं, जहाँ हिन्दी के प्रयोग-प्रसार की समीक्षा के लिए प्रत्येक तीन माह पर बैठकें हुआ करती हैं।

ऐतिहासिक उपलब्धि :

जमालपुर कारखाने में हिन्दी के प्रगामी-प्रयोग की देख-रेख के लिए उपमुख्य राजभाषा अधिकारी के रूप में श्री परमानन्द सिंह, उपमुख्य यांत्रिक इंजीनियर (परियोजना) नियुक्त हैं। इनके सफल नेतृत्व में तथा विभागाध्यक्ष श्री अरुण कुमार तिवारी, मुख्य कारखाना प्रबन्धक के उत्कृष्ट संरक्षण में राजभाषा विभाग, जमालपुर अपने रास्ते में आने वाली सारी बाधाओं पर विजय प्राप्त करते हुए पूर्व रेलवे में अपना कीर्तिमान स्थापित करने में सफल हुआ है। पत्रिका-प्रकाशन के क्षेत्र में जमालपुर कारखाने के क्रिया-कलापों को देखकर महाप्रबंधक महोदय ने अपने 'शुभकामना संदेश' में कहा है—"पूर्व रेलवे की जितनी हिन्दी पत्रिकाएँ निकल रही हैं, उनमें "कर्मवीर" पत्रिका सबसे अच्छी है।" इतना ही नहीं, वर्ष 1993-94 में "क" क्षेत्र (हिन्दी भाषी क्षेत्र) में स्थित पूर्व रेलवे के कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग-प्रसार करने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य के लिए "जमालपुर कारखाना" को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। इसके लिए डा० बी० सी० राय आडिटोरियम, सियालदह में आयोजित पूर्व रेलवे हिन्दी सप्ताह समारोह के अवसर पर दिनांक 21-11-94 को महाप्रबंधक, पूर्व रेलवे ने जमालपुर को "मुन्शी प्रेमचंद पूर्व रेलवे राजभाषा शील्ड" प्रदान किया है, जिसने जमालपुर के गौरवशाली इतिहास में कीर्ति एवं ख्याति का एक नया पृष्ठ जोड़ दिया है।

●

जैसा मेरा हृदय है, वैसा ही मेरा ईश्वर है।

—लूथर

पूर्व रेलवे क्षेत्रीय हिन्दी सप्ताह समारोह के अवसर पर 21 नवम्बर, 1994 को डा० बी० सी० राय प्रेक्षागृह, सियालदह में जमालपुर के राजभाषा अधिकारी **श्री डी० एन० साह** को "मुंशी प्रेमचन्द पू०रे० राजभाषा शील्ड" प्रदान करते हुए पूर्व रेलवे के महाप्रबन्धक **श्री चमन लाल काव** ।

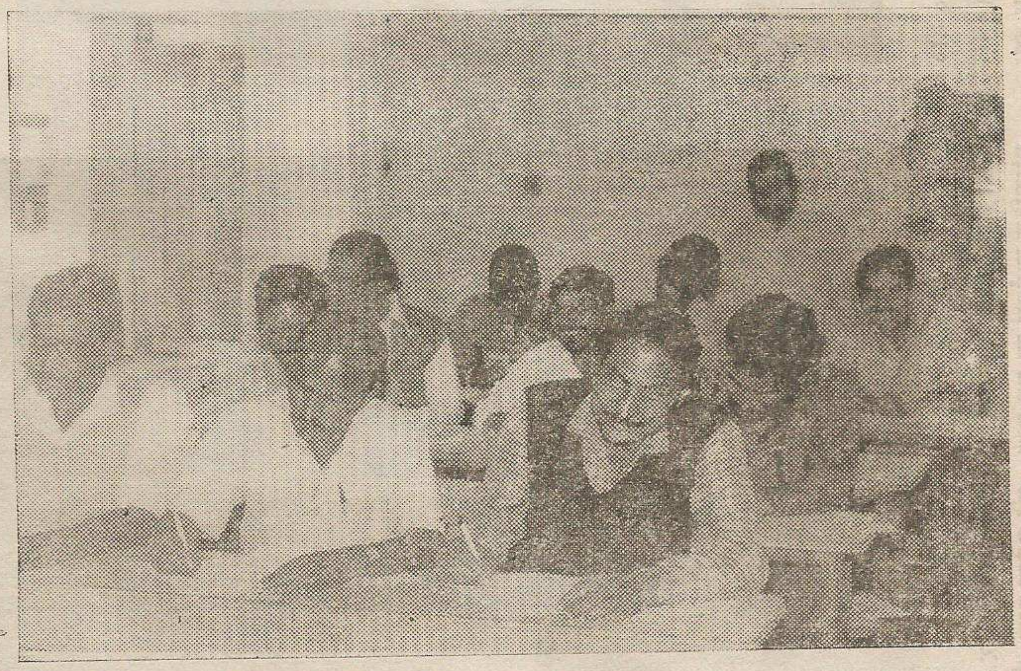

नवम्बर, 1994 में "हिन्दी प्रवीण" की परीक्षा देते हुए परीक्षार्थीगण

पू० रे० क्षेत्रीय हिन्दी सप्ताह समारोह के अवसर पर दिनांक 21 नवम्बर, 1994 को डा० बी० सी० राय प्रेक्षागृह, सियालदह में जमालपुर कारखाना को महाप्रबन्धक, पू०रे० द्वारा प्रदत्त "मुंशी प्रेमचन्द पू० रे० राजभाषा शील्ड के साथ वराधि **श्री जे० एन० प्रसाद** और **श्री रामवरण पांडेय** तथा राधि **श्री डी० एन० साह** और प्रदर्शनी टीम, जमालपुर के सदस्यगण।

हिन्दी दिवस 14 सितम्बर, 1994 के अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम का एक दृश्य—**श्री उपेन्द्र राम "निराला"**, **श्री मुकुंज बिहारी** (तबले पर) और **श्रीमती रेखा चक्रवर्त्ती**।

"हिन्दी दिवस" के अवसर पर दिनांक 14 सितम्बर, 1994 को आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि **डा० शिवचन्द्र प्रताप**, विशिष्ठ अतिथि **श्री एस० एस० गोडबोले** और अध्यक्ष **श्री अरुण कुमार तिवारी** मंच संचालन करते हुए राजभाषा अधिकारी **श्री डी० एन० साह**।

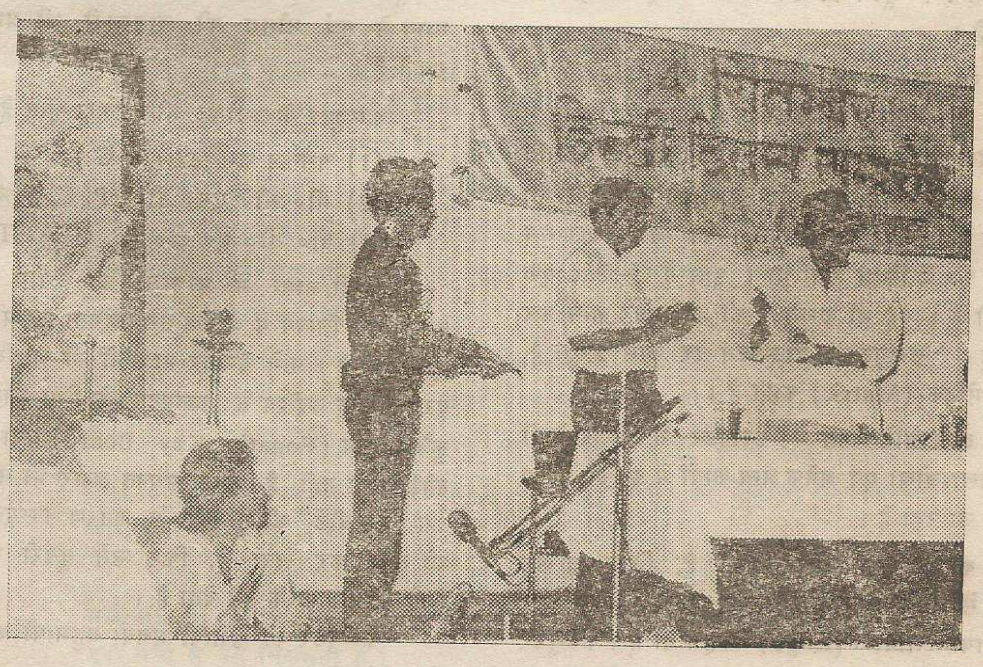

"हिन्दी दिवस" के अवसर पर दिनांक 14 सितम्बर, 1994 को इर्मी के सभामण्डप में आयोजित समारोह में "कर्मवीर" अंक-11 (राजभाषा अंक) का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि **डा० शिवचन्द्र प्रताप**।

निबन्ध

कम्प्यूटर एक जरूरत

□ नरेश कुमार शर्मा
राजभाषा सहायक–I
प्रधान कार्यालय/कलकत्ता

आज का युग विज्ञान का युग है। आज विज्ञान अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका है। इसके एक पक्ष से मानव का जीवन आनन्ददायक होता है तो दूसरे पक्ष से संसार का विनाश भी सम्भव है।

विज्ञान ने आज के मानव को बहुत कुछ दिया है। "कम्प्यूटर" उसकी एक नवीन एवं आधुनिक भेंट है। "कम्प्यूटर"—एक इलेक्ट्रोनिक मशीन है, जो आज के आधुनिक एवं विज्ञान के युग में मानव जगत् के लिए केवल आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य भी है। "कम्प्यूटर" आज हमारे दैनिक जीवन की एक जरूरत बन गया है। इस मशीन की स्मरण शक्ति बहुत तेज होती है। ऑपरेटर सब से पहले "लोगो" (Logo) को पर्दे पर लाता है। "लोगो" कम्प्यूटर की भाषा है। कम्प्यूटर का रूप टी० वी० (T. V) जैसा होता है।

कम्प्यूटर का आविष्कार सर्वप्रथम 450 BC में इजिप्ट देश में मि० चार्ल्स कैबेज ने किया था। बाद में चीन देश में इसको आगे बढ़ाया गया। धीरे-धीरे प्रगति के पथ पर चलकर कम्प्यूटर आज की स्थिति में आ पहुँचा है। आधुनिक कम्प्यूटर का आविष्कार सन् 1912 ई० में किया गया था। पूना में C–Dac एक कम्पनी है। यह भी कम्प्यूटर की प्रगति पर काम कर रही है। "कम्प्यूटर" डोट-पेटर्न पर काम करता है, जिसे मैट्रिक (Matric) कहते हैं।

आज सारे जगत् में कम्प्यूटर ने धूम मचा दी है। लेखा-जोखा एव अनेक अन्य कार्यों में इसका प्रयोग किया जा रहा है।

कम्प्यूटर की भाषा अंग्रेजी है, किन्तु वह उस भाषा से भिन्न होती है जिसे हम बोलते हैं। कम्प्यूटर की भाषा 'लोगो' (Logo) कहलाती है। कम्प्यूटर अभी तक 06 भाषाओं में काम कर रहा है। इसका चालक (ऑपरेटर) सब से पहले पर्दे पर "टरटाइल" △ को लाता है। 'की बोर्ड' की मदद से इसे पर्दे पर ऊपर-नीचे, आगे-पीछे कर सकता है तथा 'लोगो' (Logo) को मिटा भी सकता है।

आजकल कम्प्यूटर की मदद से रेलों पर आरक्षण चार्ट, अस्पतालों में बीमारों की जाँच, मरीजों का इलाज करने में, कॉलेजों/विश्वविद्यालयों में परीक्षा के प्रश्न-पत्रों की जाँच करने, अंक पत्रों को तैयार करने, परीक्षा परिणाम तैयार करने जैसे अनेक काम आसानी से किए जा रहे हैं। इतना ही नहीं कम्प्यूटर से यह भी सुविधा सम्भव होने जा रहा है कि अंग्रेजी भाषा के कागजातों को हिन्दी एवं बंगला भाषा में तुरन्त अनुवाद करके उसे समझा जा सकता है। कम्प्यूटर से खेती में सुविधा तथा प्रगति लाने के लिए समय से पूर्व मौसम की जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं।

कम्प्यूटर के प्रधानत: तीन प्रकार होते हैं—

(1) पर्सनल कम्प्यूटर (P. C)
(2) पी० सी० एस० टी० (P. C. S. T.)
(3) पी० सी० ए० टी० (P. C. A. T.)

हिन्दी भाषा में मात्राओं का प्रयोग होने के कारण इसे लिखने में अधिक समय लगता है, अंग्रेजी में ऐसा नहीं है। आगे चलकर मात्राओं की असुविधा को दूर करने के उद्देश्य से कम्प्यूटर के लिए ध्वन्यात्मक कुँजी पटल (Fonatic Key Board) बना जिसमें कोई मात्रा नहीं है तथा संयुक्त अक्षर भी नहीं है। इस "की बोर्ड" की सुविधा के कारण कम्प्यूटर बात को स्टोर कर लेता है, फिर उसे दूसरी भाषा में लिप्यांतरण करके हमें देता है।

कम्प्यूटर को द्विभाषी अथवा बहुभाषी बनाने के दो तरीके हैं—

(1) Software Solution—इसमें 'फ्लॉफी' (Flophy) डालकर कमांड देने पर वह हिन्दी में छापने लगता है। इसमें एक भाषा को मिटा कर दूसरी भाषा भी भरी जा सकती है, किन्तु Hardware Solution में हम ऐसा नहीं कर सकते हैं।

"जिस्ट कार्ड" (Gist Card) में सभी भारतीय भाषाएँ हैं।

(2) Hardware Solution—'शॉफ्टवेयर' और 'हार्ड वेयर' सोल्यूशन दोनों में कोड (Code) होता है। इस पद्धति में हिन्दी एवं एक अन्य भारतीय भाषा का इस्तेमाल किया जा सकता है।

आज कम्प्यूटर में संसार की सभी भाषाएँ कम्पोज की जा रही हैं। भारत इस काम को बड़ी तेजी से कर रहा है।

शरीर में वायु के कार्य

वायु सम्पूर्ण शरीर को धारण करने के लिए पूरे शरीर में व्याप्त रहकर भी पाँच भागों में विभक्त होकर भिन्न-भिन्न भागों में रहकर अपना कार्य करती है। विभिन्न अंगों में स्थिति के अनुसार इसको अलग-अलग नामों से संबोधित किया गया है। प्राकृत (शांत) अवस्था में होने पर वायु उन अंगों को स्वस्थ रखती है और कुपित होने पर उन अंगों को पीड़ित और रोगग्रस्त कर देती है। पाँचों प्रकार की वायु का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है।

(1) **प्राण वायु**—यह हृदय, उर:स्थान, मुख, नासिका, कान, जीभ, कंठ और मूर्द्धा (तालू के बीच का भाग) में स्थित रहकर इन अवयवों को सक्रिय रखती है। यह मन की नियंता, हर्ष और उत्साह का कारण तथा सभी इन्द्रियों को कार्यरत रखने वाली है। सांस लेना व छोड़ना इसका प्रमुख कार्य है।

(2) **उदान वायु**—इस वायु का काम 'प्रवर्तको वाच:' के अनुसार वाणी को निकालना है, अत: यह कंठ प्रदेश में रहती है। ध्वनि करना, गाना, शब्द उच्चारित करना, उदान वायु के काम हैं।

(3) **समान वायु**—यह आमाशय (Stomach) और पक्वाशय (वृहद आन्त्र) में रहकर अन्न पाक से उत्पन्न विशेष पदार्थों (रस, दोष आदि) को अलग-अलग करती है।

(4) **व्यान वायु**—सारे शरीर में व्याप्त रहने वाली व्यान वायु रस रक्त के संवहन (Circulation) का कार्य करती है और पूरे शरीर की चेष्टाओं को नियंत्रित और संचालित करती है।

(5) **अपान वायु**—पक्वाशय (बड़ी आंत) में रहकर मल, मूत्र, शुक्र, आर्तव और गर्भ को नीचे की ओर गति देकर बाहर निकालती है। इसी के कुपित होने पर गुदा मार्ग से गैस निकलती है।

[निरोग धाम, वसंत ऋतु अंक 95 से साभार]

प्रस्तुति—2

रेल फ्री पास : सुविधा या विशेषाधिकार

□ सुरेन्द्र प्रसाद चौरसिया

रेल विश्व का एक विशाल औद्योगिक संगठन है। इसमें संलग्न 17.5 लाख से अधिक कर्मचारी की संगठित शक्ति निहित है। इन औद्योगिक संगठन के पीछे एक सौ साल से अधिक का लम्बा इतिहास जुड़ा है। इन्हीं कारणों से भारतीय रेल भारत का ही नहीं, बल्कि पूर्ण विश्व का एक विशाल औद्योगिक प्रतिष्ठान माना जाता है। 'संगठन' शक्ति का स्रोत है और इसमें संलग्न कर्मचारी अपने जीवन के बहुमूल्य समय पैंतीस से चालीस वर्ष के सृजनात्मक जीवन का लगभग सारा समय संगठन को समर्पित कर देता है। अतः इसमें संलग्न कर्मचारी उसकी खूबियों और खामियों से कदाचित वंचित नहीं हो सकते।

रेल संगठन के कार्यकर्त्ताओं ने अपने अथक परिश्रम, कार्यकुशलता, समय की पाबन्दी को देखते हुए अपने बुद्धि-कौशल से यातायात की नई परिवहन व्यवस्था को पोख्ता कर ही डाला। इन्होंने व्यवस्था में दिनोंदिन विकास कर 62000 किलोमीटर से ज्यादा पूर्व से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण में रेल की पटरियाँ बिछाकर इसे जीवन का एक अभिन्न अंग बना चुका है। अब तो रेल के बिना व्यक्ति अपने अस्तित्व की कल्पना मात्र भी नहीं कर सकता है।

आपने सुना होगा कि यूरोपीय देशों में 300 कि०मी० प्रति घण्टा की रफतार वाली गाड़ियाँ चलती हैं। इसमें हमारे भारतीय रेल कर्मचारी भी पीछे नहीं हैं। भारत में भी शताब्दी एक्सप्रेस जैसी गाड़ियों को चलाकर एक ज्वलंत उदाहरण कायम किया गया है जिसकी तीव्रतम गति लगभग 140 कि०मी० प्रति घंटा है। इस चामत्कारिक विकास के पीछे रेल कर्मचारियों की अहर्निश सेवा का योगदान है। इस अनवरत सेवा के साथ-साथ रेल कर्मचारियों को अपनी चलाई रेल-गाड़ी में निःशुल्क सफर करने की रियायत संगठन द्वारा मिली है। यह रियायत सौ साल पहले भी थी और आज भी है। समय-समय पर इसमें कुछ कटौतियाँ हुई हैं,किन्तु फिलहाल भी रियायत कम नहीं है। इस रियायत का उपयोग करने के कुछ विशेष नियम भी बनाये गए हैं जिन्हें प्रत्येक रेल कर्मचारी को ही नहीं, बल्कि उनके परिवार के सदस्यों को भी जानना अनिवार्य है। परिवार के सदस्य रियायती पास का उपयोग करने के अधिकारी हैं। अतः उन्हें इस बात की पूरी-पूरी जानकारी रखनी चाहिए कि फ्री पास का उपयोग कैसे किया जाता है और इसके दुरुपयोग से क्या-क्या परेशानियाँ होती हैं।

फ्री पास वर्ष भर में एक सीमित संख्या में कर्मचारियों को दिया जाता है। इसके अलावा कर्मचारियों को रियायती टिकट पर भी यात्रा करने की सुविधा है जिसे पी० टी० ओ० कहते हैं। यह पी० टी० ओ० भी सीमित संख्या में मिलते हैं। पास एवं पी० टी० ओ० की सुविधाएँ कर्मचारी के ओहदे के अनुसार दी जाती हैं।

वर्ष में मिलने वाले सुविधा पासों की संख्या निम्नलिखित हैं—

1. राजपत्रित कर्मचारी श्रेणी ए० एवं बी० को 6 सेट
2. तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी नौकरी के पहले साल से पाँचवें साल तक। सेट एवं छठे साल से नौकरी के अन्त तक तीन सेट पास के हकदार होते हैं।
3. सुविधा पास पर पृष्ठांकित कराकर पास जारी करने वाले अधिकारी के हस्ताक्षर पर अतिरिक्त सामान ले जा सकते हैं। जैसे—टी० बी० सेट (25 कि०) मोटर साइकिल या स्कूटर (150 कि०) एवं साइकिल (40 कि०) सामान की छूट के अन्दर भी ले जा सकते हैं।
4. सुविधा टिकट आदेश–राजपत्रित कर्मचारी श्रेणी ए० एवं बी० अधिकारी श्रेणी सी० एवं डी० के कर्मचारी को छः सेट सुविधा टिकट आदेश मिल सकते हैं, किन्तु यदि कर्मचारी ने अपनी मृत्यु के पश्चात् विधुर/विधवा को पास की सुविधा का

विकल्प दिया हो तो कर्मचारी दो सेट सुविधा टिकट आदेश कम अर्थात् चार ही सेट पाने के हकदार हैं।

5. वर्ष के अन्त में सुविधा टिकट आदेश/पास अगले वर्ष के 30 अप्रैल तक/31 मार्च तक लेने की सुविधा—

रेलवे बोर्ड के पत्रांक ई (डब्ल्यू) 92 पी० एस० 5-1/8 दिनांक 09-12-93 के अनुसार सेवोत्तर मानार्थ पास या सुविधा पास/सुविधा टिकट आदेश अगले वर्ष 31 मार्च या 30 अप्रैल तक लिए जा सकते हैं जिसे 31 दिसम्बर तक ही जारी करने की अवधि रहती थी। पास अनुभाग में दिसम्बर में काम की अधिकता को देखते हुए और खर्च को कम करने के लिए बोर्ड ने ऐसा निर्णय लिया है। एक तरफी यात्रा (आधा सेट) पास अगले तीन महीने यानी 31 मार्च और पूरे सेट पास अगले चार महीने यानी 30 अप्रैल तक जारी किये जा सकते हैं। ये पास पिछले वर्ष के खाते से ही जारी किये जायेंगे। यह नियम सुविधा टिकट आदेश पर भी लागू है, किन्तु वैधता 31 मार्च तक की रहेगी।

6. **यात्रा का मार्ग**—

रेल कर्मचारियों को पास सबसे कम दूरी या सीधे रास्ते के रूट के लिए निर्गत किया जाता है। यदि गंतव्य स्टेशन के लिए कोई वैकल्पिक मार्ग मौजूद है तो उनमें किसी भी मार्ग से यात्रा की जा सकती है। वशर्ते सीधे मार्ग की कुल दूरी की 15 प्रतिशत दूरी बढ़ सकती है। यदि लम्बे मार्ग से गाड़ी कम समय में दूरी तय कर लेती है तो यात्रा लम्बे मार्ग से ही की जा सकती है।

7. सेवारत एवं सेवामुक्त कर्मचारियों को "शताब्दी एक्सप्रेस" एवं "राजधानी" में यात्रा-सुविधा निम्नलिखित हैं—

		शताब्दी एक्सप्रेस	राजधानी एक्सप्रेस
1.	सेवामुक्त एवं सेवारत बोर्ड के सदस्य	एक्जीक्यूटिव क्लास में दो सीटें या कुर्सीयान में दो सीटें	प्रथम श्रेणी वातानुकूल में दो बर्थ या ए० सी० स्लीपर में दो बर्थ या ए० सी० कुर्सीयान में चार बर्थ
2.	7300/-रुपये वेतनवाले सेवारत और उन्हीं स्तर के सेवामुक्त अधिकारी एवं महाप्रबन्धक	कुर्सीयान में दो सीटें	प्रथम श्रेणी वातानुकूल में एक बर्थ या ए० सी० स्लीपर में दो बर्थ
3.	4500/-रु० से अधिक,लेकिन 7100/-रु० तक वेतन पाने वाले सेवामुक्त या सेवारत अधिकारी	चेयर कार में दो सीटें	ए० सी० स्लीपर में दो बर्थ
4.	3700/- रु० से अधिक एवं 4500/-रु० से कम वेतन पाने वाले सेवामुक्त या सेवारत अधिकारी	कुर्सीयान में एक सीट	ए० सी० कार में दो सीटें
5.	प्रथम श्रेणी एवं द्वितीय श्रेणी पास वाले सेवामुक्त या सेवारत कर्मचारी	कुर्सीयान में एक सीट	ए० सी० कुर्सीयान में दो सीटें

उपर्युक्त क्रमांक संख्या एक एवं दो के लिए शताब्दी एक्सप्रेस से एक्जीक्यूटिव क्लास के लिए कुर्सीयान और राजधानी से प्रथम श्रेणी वातानुकूल में चलने के लिए उसके किराये का एक तिहाई अन्तर का भाड़ा भुगतान करना होगा।

8. **सेवा निवृत कर्मचारियों को मानार्थ पास–** जो कर्मचारी सेवा निवृत्त हो चुके हैं और सेवा में रहते समय पास के पात्र रहे हैं, उन्हें सेवा निवृत्ति के पश्चात् निम्नलिखित मानार्थ पास दिए जा सकते हैं,किन्तु सेवा निवृत्ति के बाद आश्रितों को इस सुविधा से वंचित कर दिया जाता है। मानार्थ पास निम्न-लिखित नियमों के आधार पर सेवा मुक्ति के बाद दिया जाता है।

प्रति वर्ष मानार्थ पास मिलने की संख्या

रेलवे सेवा की अवधि	राजपत्रित अधिकारी	श्रेणी सी० कर्मचारी	श्रेणी डी० कर्मचारी
1. 20 वर्ष और इससे अधिक	दो सेट	एक सेट	कुछ नहीं
2. 25 वर्ष और इससे अधिक	तीन सेट	दो सेट	1. 1.7.93 के बाद सेवा मुक्त कर्मचारियों को प्रत्येक वर्ष एक सेट परिवार सहित।
			2. 1.7.93 से पहले सेवामुक्त होनेवाले कर्मचारी को हर दूसरे वर्ष एक सेट परिवार सहित।

रेलवे बोर्ड पत्र सं०–ई० (डब्ल्यू) 87 पी०एस०5-8/3 दिनांक 29-12-93 के अनुसार प्रत्येक डी० श्रेणी के रेल कर्मचारी की सेवामुक्ति के बाद मानार्थ पास में परिवार को भी सुविधा प्रदान की जाएगी जो 29-12-93 के पहले नहीं थी। यह नियम सभी डी० श्रेणी के सेवामुक्त कर्मचारियों पर लागू होगा,चाहे वह कभी भी सेवामुक्त किये हों।

9. **रेल कर्मचारियों के लिए कुछ विशेष उप-योगी जानकारी**—

(क) आरक्षण चार्ज—किसी भी श्रेणी के पास, कार्ड पास, एवं धातु पास पर आरक्षण के लिए किसी भी प्रकार का चार्ज नहीं देना पड़ता है। सिर्फ परिचर का आरक्षण कराने पर स्लीपर चार्ज देना पड़ता है।

(ख) सुविधा टिकट आदेश पर यात्रा करने का समय—इन दिनों सुविधा टिकट आदेश पर बाहरी एवं वापसी दोनों यात्रा 'क' तीन माह के भीतर कर सकते हैं। इन टिकटों पर आरक्षण चार्ज भी एक तिहाई अन्तर का आरक्षण चार्ज भुगतान करना पड़ता है।

(ग) सेवामुक्त कर्मचारी अपना मानार्थ पास डाक द्वारा (रजिस्टर्ड डाक) से रेल के खर्च से मंगा सकता है।

(घ) वेतनमान 825-1200/- रुपये वाले रेल कर्मचारी को पास के तहत वही सुविधा मिलेगी जो 'श्रेणी' 'सी' कर्मचारी को मिलती है।

(ङ) पासों पर कितने भी यात्रा भंग की अनु-मति ले सकते हैं।

(च) प्रथम श्रेणी के सुविधा पास पाने वाले निरन्तर अथवा सेवामुक्त कर्मचारी एक परिचर को दूसरी श्रेणी में ले जा सकते हैं।

(छ) जो कर्मचारी स्वेच्छा से सेवामुक्त होना चाहते हैं या अस्वस्थ हो जाने पर वैकल्पिक पद स्वी-कार नहीं करते हैं और सेवामुक्त हो जाते हैं,उन कर्म-चारियों को निरन्तर सेवा अवधि में पाँच वर्ष की सेवा अवधि जोड़कर पास नियम के लाभ में लाभान्वित किया जाता है।

(ज) सेवामुक्त के बाद रेल प्रशासन द्वारा एक पहचान कार्ड जारी किया जाता है जिसमें उसके परिवार का फोटो लगा रहता है। यह कार्ड विधवा पास के साथ यात्रा करते समय रखना चाहिए। यदि विधवा पास के साथ यह कार्ड नहीं रखा जाता है तो टिकट जाँच अधिकारी द्वारा विधवा पास रहने पर भी अवैध घोषित कर रेलभाड़ा वसूल किया जा सकता है।

(झ) निलम्बित कर्मचारी श्रेणी 'ए' और 'बी' के लिए महाप्रबन्धक को एवं श्रेणी 'सी' और 'डी' के लिए उपविभागाध्यक्ष या समकक्ष को पास/टिकट आदेश जारी करने का विशेष अधिकार रहता है।

(ञ) निलम्बन की अवधि में स्कूल पास पर कोई असर नहीं पड़ता ।

(ट) शारीरिक रूप से विकलांग सेवामुक्त रेल-कर्मचारी अपने मानार्थ पास पर उसी श्रेणी में एक अनुरक्षक अपने साथ ले जा सकते हैं । यह सुविधा वरिष्ठ मण्डल रेल चिकित्सक के प्रमाण-पत्र पर मिलेगा । किन्तु कर्मचारी का कोई परिवार का सदस्य नहीं रहना चाहिए । शारीरिक रूप से अपंग सेवारत कर्मचारी पर जो शर्तें लागू हैं वे इन पर भी लागू रहेंगी । (रेलवे बोर्ड पत्र सं०—ई (डब्ल्यू) 93 पी० एस० 5-1/10 दिनांक 16-12-93, बाहरी का 182/93)

जिन कर्मचारियों को प्रथम श्रेणी 'ए' के तीन सेट पास मिलते हैं, वे अपना एक सेट पास छोड़ देने पर बचे दो सेटों पर उसी श्रेणी में अनुरक्षक को शामिल कर सकते हैं ।

1. जो कर्मचारी दो सेट के अधिकारी हैं, वे अपना एक सेट छोड़ देने पर बचे एक सेट में अनुरक्षक को ले जा सकते हैं । यह प्रथम श्रेणी पास में भी लागू है ।
2. जिन कर्मचारियों को दूसरी श्रेणी के पास मिलते हैं उन कर्मचारियों को एक सेट उच्चतर श्रेणी में (किन्तु प्रथम श्रेणी से ऊँचा नहीं) में अनुरक्षक को शामिल करने की सुविधा अपने पासों की समूची पात्रता के बदले में मिलेगी ।
3. नेत्रहीन कर्मचारी को अकेले यात्रा करने पर एक परिचर की अनुमति उसी दर्जे में ।
4. सुविधा पास पर ऐसे कर्मचारी को ह्वील चेयर या तीन पहिया वाला साइकिल ले जाने की अनुमति है, किन्तु मण्डल चिकित्सा अधिकारी के प्रमाण-पत्र के तहत ।
10. स्कूल पास जारी करने के लिए कम-से-कम स्कूल/कॉलेज की छुट्टियाँ तीन दिनों तक होनी चाहिए (रविवार छोड़कर) । स्कूल पास जारी कराने के लिए वर्ष में एक बार स्कूल/कॉलेज का प्रमाण-पत्र जमा करना अनिवार्य है । इसी के तहत स्कूल पास जारी किये जा सकते हैं । स्कूल प्रमाण-पत्र में निम्नलिखित बातों का उल्लेख होना अनिवार्य है—विद्यार्थी का नाम, विद्यार्थी के पिता का नाम, विद्यार्थी किस क्लास में पढ़ रहा है, विद्यार्थी का सत्र, विद्यार्थी की जन्म तिथि (जो पारिवारिक ब्यौरा के अनुरूप हो), स्कूल/कॉलेज की छुट्टियों का वर्णन ।
11. **रेल संस्थाओं के तहत कार्य करने वाले कर्मचारियों के लिए पास**—सहकारी समिति/बैंक के डायरेक्टरों को किसी प्रकार की सभा में शामिल होने के लिए पास जारी किया जाता है । इसके लिए किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं है । यह पास महाप्रबन्धक/मुख्य लेखा अधिकारी के आदेश पर जारी किया जाता है ।

जगमग अन्दर में हिया, दिया न बाती तेल
परम प्रकासक पुरुष का, कहाँ बताऊँ खेल

—तुलसी

ताजमहल : कल और आज

□ नजरूल इस्लाम खाँ "नजरू जमालपुरी"

इसको चाहत भरी नजरों का अमल कहते हैं,
संगमरमर पर लिखी साफ गजल कहते हैं।

आप सोचेंगे कि भूख, बेरोजगारी, मंहगाई एवं आर्थिक मंदी के इस वर्त्तमान दौर में ताजमहल जैसे कलात्मक और भावनात्मक विषय पर लिखने की ऐसी महती आवश्यकता क्यों आन पड़ी। क्या ताज पर कई लेखकों द्वारा कही और लिखी गई पिछली बातें पर्याप्त नहीं हैं ?

मगर मेरा मानना है (शायद आप भी इससे सहमत होंगे) कि ताजमहल एक सैर-सपाटे और मौज-मस्ती की चीज नहीं है। एक ओर यदि ताज हमारे राष्ट्र की शान उसके स्वाभिमान का प्रतीक है तो दूसरी ओर इसका सीधा सम्बन्ध पर्यटन से जुड़ा हुआ है।

पर्यटन आधुनिक विश्व में एक उद्योग के रूप में विकसित हो चुका है। पर्यटन से ज्ञानवर्द्धन तो होता ही है, साथ ही साथ विश्व सभ्यता और संस्कृति को गहराई से समझने में सहायता मिलती है। तभी तो सरकार ने पर्यटन सम्बन्धी एक मंत्रालय अलग से खोल रखा है। आर्थिक शब्दावली में कहें तो पर्यटन विदेशी मुद्रा अर्जन (Foreign Exchange Earning) का एक प्रमुख स्रोत है। जिस राष्ट्र का पर्यटन उद्योग जितना ही विकसित और उन्नत है, उस राष्ट्र की आर्थिक स्थिति उतनी ही सुदृढ़ है। भारत जैसे विकासशील देश में तो इसकी आवश्यकता और भी अधिक है।

ताज का अर्थ है मुकुट जो राजा या बादशाह अपने सर पर धारण करता था। ताजमहल भारत-राष्ट्र-रूपी शरीर का शोभायमान मुकुट है, जिस पर हर भारतवासी गर्व करता है, विश्व जिसे हसरत की निगाहों से देखता है। ताज की आकृति से मिलती-जुलती सैकड़ों इमारतें इस संसार में मौजूद है मगर ताज आज भी अपने आपमें बेजोड़ है, उसकी तुलना में अन्य किसी भी इमारत की शान फीकी पड़ जाती है। इसकी कारीगरी का लोहा आज भी दुनिया के स्थापत्य-कला-विशेषज्ञ मानते हैं। शायद ही कोई विदेशी पर्यटक ऐसा हो जो हिन्दुस्तान में आकर बिना ताज देखे चला जाए।

मुगलकाल (विशेषकर शाहजहाँ के शासन-काल के दौरान) भारतीय स्थापत्य-कला का स्वर्णिम काल कहलाता है। इस दौर में यह कला अपने चरमोत्कर्ष पर थी। उस दौर की इमारतों मे जो सबसे खूबसूरत और सबसे बेजोड़ बन सकी, उसका उत्कृष्ट नमूना है—ताजमहल।

शाहजहाँ ने अपनी मलिका बेगम मुमताज की याद में इस मकबरे को बनाया था। इसमें इन दोनों प्रेमियों की रूहें दफन हैं। अपने जीवन की संध्या बेला में अपने लख्ते-जिगर, अपने प्यारे साहबजादे, बादशाह औरंगजेब के हाथों आगरे के किला में कैद बादशाह शाहजहाँ अपनी बेगम की यादों में खोया हुआ अपनी किस्मत पर आठ-आठ आँसू रोता, ताज को दूर से ही हसरत भरी नजरों से निहारता इस दुनिया से चला गया।

किंवदंती है कि बीस वर्षों की कड़ी मेहनत, उस समय के अनुसार बीस करोड़ रुपये और बीस हजार मजदूरों के श्रम और स्वेद-कर्णों से निर्मित ताजमहल की तामीर के बाद शाहजहाँ ने इसे बनाने वाले कारीगरों के हाथ महज इसलिए कटवा दिए थे ताकि ये अभागे मजदूर अपने पापी पेट की आग बुझाने के एवज किसी और बादशाहत के तहत इस इमारत के मुकाबले की कोई दूसरी इमारत इस दुनिया में न खड़ी कर दें।

मुझे तो इस बात पर यकीन नहीं आ रहा है कि शाहजहाँ जैसा कला-प्रेमी, हुस्न का पुजारी व्यक्ति भी ऐसी घिनौनी हरकत कर सकता है, पर साथ ही साथ जेहन में ये ख्याल भी आता है कि बादशाहत और हुकूमत में तलवार ही का जोर चलता है, "दिनकर" के शब्दों में—

चर्खा चलता हाथों से, शासन चलता तलवार से।

शायद शाहजहाँ अपनी मुहब्बत को इस कायनात (सृष्टि) में लाजवाल (अमर) करना चाहता हो और उसकी इसी हसरत ने उसे यह कदम उठाने पर मजबूर किया हो। मगर इस नश्वर बादशाह को क्या पता था कि संसार में प्रत्येक वस्तु चाहे वो कितनी भी सुन्दर क्यों न हो नाशवान है।

बकौल "इकबाल"

खुदा से हुस्न ने इक रोज ये सवाल किया
जहाँ में क्यों न मुझे, तूने लाजवाल किया।
मिला जवाब कि तस्वीर खाना है दुनिया,
शबे-दराज अदम का फसाना है दुनिया
चमन से रोता हुआ मौसमे-बहार गया,
शबाब सैर को आया था, शोगवार गया।

शाहजहाँ ने जब अपने मुहब्बत की अमरकृति के रूप में इसे बनवाया था, उस वक्त क्या उसने यह सोचा था कि आने वाले वर्षों में ऐसा भी दिन आएगा जब इसके अस्तित्व पर सवालिया निशान लग जाएगा।

तुझे खा जाएगी एक दिन, इसी यमुना की भूखी धार।
—बच्चन

इन्सान होने के नाते तो इतना तो जरूर जानता होगा कि जिसका जन्म होता है, उसकी मृत्यु भी होती है। शायद कयामत की कल्पना इसी ख्याल को मद्दे-नजर रखकर की गई होगी। जब कुदरत ने उसकी हसीन मलिका को नहीं बख्शा जो सात परदों में रहती थी, मखमल पे सोती थी और सोने-चाँदी और हीरे जवाहरातों के बर्त्तन में मेवा और अंगूर खाती थी, फिर यह बेचारा संगमरमर की निर्जीव पत्थर धूप, आँधी, हवा, बारिश के थपेड़े सहते कितने दिनों तक अपने दामन को दागदार होने से बचाएगा ? क्या ताकयामत यह यूँ ही खूबसूरत चाँद की तरह जगमगाता रहेगा ?

फना होना हर दुनियावी शै की फितरत है, यही कुदरत का निजाम है, क्योंकि अगर पुरानी चीजें नष्ट नहीं होगी तो फिर इन्सान नई चीजों की तामीर कैसे कर सकेगा ?

मगर मानव संस्कृति में कुछ चीजें ऐसी भी हैं जिन्हें "मास्टर-पीस" कहते हैं और ये अनुपम चीजें इतिहास की सभ्यता और संस्कृति की धरोहर होती है और उन्हें बचाकर रखना इन्सान की जिम्मेवारी है। प्रकृति का नियम है कि प्रकृति में कोई अनुकृति नहीं होती, (There is no imitation in nature) इसलिए कोई फनकार, कोई बाजीगर लाख कोशिशों के बावजूद भी इसकी हू-ब-हू नकल नहीं कर सकता।

ताज जो विश्व के मानचित्र पर भारत की शान है, लाखों धड़कते दिलों के लिए मुहब्बत का पैगाम है, प्यासी निगाहों के लिए जन्नत का जाम है, रूहानी कशिश है, तभी तो कवीन्द्र रवीन्द्र ने इसे काल के कपोल पर ठहरे हुए एक अश्रु-विन्दु कहा है। (A still drop of tear on the cheek of time.)

बकौल शायर—

एक शाहंशाह ने बनवा के हसीं ताजमहल,
सारी दुनिया को मुहब्बत की निशानी दी है।

ताज के चबूतरे पर बैठ चाँदनी रात मे यमुना के स्वच्छ दर्पण में ताज का प्रतिबिम्ब निहारते हुए एक अंग्रेज प्रेमी-युगल के मुख से अनायास निकल पड़ा था—Fantastic ! We are ready to die at once now if we are dead assured that a monument like this would be constructed on our grave yards.

मगर इन्सान की यह फितरत है कि वह सिर्फ लाल सुर्ख गुलाब की खूबसूरती को देखता है, उसके इर्द-गिर्द फैली खुशबू से प्रभावित होता है, मगर वो यह नहीं सोचता कि चमन ने इस हसीं फूल के खिलने तक कितने सितम झेले हैं, कितनी मुसीबतें सही हैं, कुदरत से कितनी जद्दोजहद के बाद इस फूल को बचाकर रखा है "निराला" के शब्दों में—

अबे ! सुन बे गुलाब।
भूल मत गर पाई खुशबू रंगो-आब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा है कैपटिलिस्ट।

ताज जिस पर आज हम रसिक प्रेमीजन गर्व से इतराते फिरते हैं, हिन्दुस्तानी अवाम की मेहनत मशक्कत का कितना खजाना इस पर लुटाया गया है कितने

मजदूरों के खून-पसीने की नींव पर यह खड़ा मुस्कुरा रहा है, इस बात का अंदाजा विरले ही लगा पाते हैं। इसी गुस्से में आकर साम्यवादियों ने कह दिया था कि—This is relics of feudal Exploitation of mankind, hence the structure should be razed to the ground for ever.

मगर अवाम के इन तथाकथित खैरख्वाहों को यह समझ में क्यों नहीं आया कि यदि हम इसे मिटा देंगे तो क्या मानव जाति का शोषण इस धरती से सदा के लिए समाप्त हो जाएगा। सच तो यह है कि इसके मिटने से हमारी आर्थिक प्रगति का एक स्तम्भ टूट जाएगा। Exploitation still exists in nature in some form or the other, only struggle against it is the way out.

विश्व के सात आश्चर्यों में एक ताज के बारे में चाहे जो कुछ भी राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक या ऐतिहासिक विवाद रहा हो, हम इसकी महानता को कम नहीं आंक सकते।

आज जो सवाल हमारे सामने है, वह है प्रकृति के क्रूर हाथों इसके आस-पास के क्षेत्र में फैले औद्योगीकरण के जहरीले धुएँ, मथुरा तेल शोधक-कारखानों की चिमनियों से निकलने वाली गैसों की तेजाबी वर्षा से प्रदूषण के शिकार पीले पड़ते सफेद पत्थर, यमुना की उफनती मौजे-दरिया से क्षरित होती हुई इसकी संगे-बुनियाद, मनचले प्रेमियों के हाथों अपने इश्क की दास्तान को हमेशा-हमेशा के लिए ताज के दामन पर अमर करने की बेहूदा हरकतें एवं आज के मौजूदा-हालत से जूझते उफनते विशाल जन-समुदाय के रिहाइशी इलाकों से उत्पन्न कूड़ा-कचड़ा, गन्दे पानी की मार से इसे कैसे बचाया जाए।

एक तरफ ताज का अस्तित्व दांव पर है तो दूसरी तरफ विशाल जन-समुदाय की रोजी-रोटी से जुड़ा सवाल मुँहबाये खड़ा है। अगर हम इसके आस-पास के कल-कारखानों को बन्द कर कहीं दूसरी जगह ले जाएँ तो फिर विस्थापित जन-समुदाय का क्या होगा? और अगर मनुष्य को बचाएँ तो फिर इस बदरंग-बदनुमा होते हुए ताज का क्या होगा? अजब मुअम्मा है। अजब दुविधा है। कुछ रास्ता नहीं सूझ रहा। आखिर हम करें तो क्या करें? अपने इतिहास के धरोहर को बचाएँ या वर्त्तमान की चिन्ता करें, निर्जीव पत्थर की हिफाजत करें या लाखों-लाख सजीव इन्सानों के अस्तित्व की रक्षा करें।

इसका उत्तर तो विश्व के पर्यावरणवादी (Ecologists) ही दे सकते हैं। सरकार का यह कर्त्तव्य है कि वह इस गम्भीर मसले पर सोच-समझ कर अमल करे और साथ ही हम भारतवासियों का भी पुनीत दायित्व है कि सरकार द्वारा सोचे-समझे और ठंडे दिमाग से लिए गए निर्णयों के कार्यान्वयन में पूर्ण मनोयोग से काम लें, क्योंकि इन्सान भगवान द्वारा बनाए गए पर्यावरण की रक्षा करने का ट्रस्टी है। यह सवाल हमारा राष्ट्रीय सवाल है और इसका उत्तर खोजना हम सब देशवासियों का धर्म है, क्योंकि अगर हम अपने क्षणिक सुख के कारण पर्यावरण को नष्ट कर देते हैं तो पृथ्वी सभी जीव-जन्तुओं के रहने लायक नहीं रह जाएगी और ऐसी हालत में हमें जो कष्ट होगा वो तो दरकिनार, आने वाली हमारी पीढ़ियाँ हमें इस धृष्टता के लिए कभी माफ नहीं करेगी।

अन्त में मैं अपने मजदूर भाइयों के लिए अजीम शायर साहिर लुधियानवी की कलम से निकली इन पंक्तियों को भी उद्धृत करना चाहूँगा—जिसका दृष्टिकोण ही कुछ अलग है—

ये मुनक्कश दरो-दीवार ये मेहराब, ये ताक,
एक शहंशाह ने दौलत का सहारा लेकर,
हम गरीबों की मुहब्बत का उड़ाया है मजाक।

●

खूबसूरती किसी व्यक्ति या वस्तु में नहीं, वह तो अपनी रसानुभूति, अपने जी की स्वीकृति अपनी आँखों की आरती ठहरी।

—राधिका रमण

'योग' एक अनमोल खजाना

प्राणायाम

□ भोला प्रसाद भगत

(स्वामी सत्यानन्द सरस्वती)

['कर्मवीर' पत्रिका के गत अंकों में मैंने परमपूज्य स्वामी सत्यानन्द सरस्वती परमहंसजी द्वारा बतलाये गये हठयोग की कुछ प्रमुख क्रियाओं नेति, धौति, शंखप्रक्षालन, नौलिवस्ति कपालभाति, त्राटक एवं उनके संदेश का उल्लेख किया था। यहाँ मैं योग की एक परम शक्तिशाली क्रिया 'प्राणायाम' के बारे में परिचय कराने जा रहा हूँ। आशा है, आप इसका अभ्यास कर लाभान्वित होंगे।]

'प्राणायाम' दो शब्दों के मेल से बना है। प्राण + आयाम = प्राणायाम। सामान्यत: लोग प्राण को वायु समझ बैठते हैं। पर वायु या हमारा श्वास-प्रश्वास प्राण नहीं है। 'प्राण' एक अतिसूक्ष्म शक्ति है। जैसे प्रकाश, विद्युत, चुम्बकत्व, ताप आदि। शायद यह उससे भी सूक्ष्मतर है, यह सबों का आधार है। यह समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। सजीव-निर्जीव गोचर-अगोचर सभी में प्राण-शक्ति व्याप्त है। 'प्राण' यानी जीवन-शक्ति। यदि किसी जीव के शरीर, मस्तिष्क तथा इन्द्रियाँ ठीक काम करते हों, श्वास-प्रश्वास भी ठीक कार्य कर रहे हों, परन्तु यदि उसके अन्दर प्राणशक्ति अधिक मात्रा में क्षय होने लगे तो एक सीमा के बाद उसकी चेतना और क्रियाशीलता लुप्त हो जायेगी और वह मृत हो जायेगा। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'प्राण' वह अतिसूक्ष्म शक्ति है जो हमारे अस्तित्व का आधार है और जो वायु एवं समस्त सृष्टि में व्याप्त है।

आयाम का अर्थ है—"विस्तार"। अत: प्राणायाम प्रक्रियाओं की वह शृंखला है जिसका उद्देश्य शरीर की प्राण-शक्ति को उत्प्रेरणा देना है। उसे बढ़ाना तथा उसे विशेष अभिप्राय से विशेष क्षेत्र में संचारित करना है।

हमारे महान् ऋषियों ने प्राणायाम विद्या का आविष्कार ध्यान की एक पद्धति के रूप में, उच्चचेतना की प्राप्ति के लिए किया है। यह मन की चंचलता को दूर करने तथा चेतना को उसकी गहराइयों में मोड़ने का साधन है। प्राणायम का अन्तिम उद्देश्य सम्पूर्ण शरीर में प्रवाहित 'प्राण' को नियन्त्रित करना है।

प्राणायाम के अभ्याम से शरीर को सिर्फ पर्याप्त ऑक्सीजन ही नहीं मिलता, बल्कि प्राणमय कोष की नाड़ियों, प्राण नलिकाओं एवं प्राण के प्रवाह पर भी प्रभाव पड़ता है। फलत: नाड़ियों की शुद्धि होती है, भौतिक और मानसिक सन्तुलन एवं स्थिरता प्राप्त होती है। कुम्भक यानी प्राण को रोकने से प्राण पर नियन्त्रण होता है। प्राण नियन्त्रित होने पर मन भी स्वत: नियन्त्रित हो जाता है। फिर हम मन के दास नहीं रहते, बल्कि मन के स्वामी बन जाते हैं।

योगशास्त्रों में शरीर स्थित 'प्राण' को पाँच उपविभागों में बाँटा गया है जिन्हें 'पंच-प्राण' कहा जाता है।

1. **प्राण**—यह सम्पूर्ण शरीर में नहीं, बल्कि अंग विशेष में स्थित 'प्राण' है। कंठनली तथा श्वास पटल (diaphram) में स्थित रहता है। श्वसन, वाणी

तथा अन्ननलिका सम्बन्धी अंगों आदि से इसका संबंध होता है। यह क्रियाशील बनाने वाली मांसपेशियों से भी सम्बन्धित है। यह वह शक्ति है जिसके द्वारा श्वास नीचे की ओर खींचा जाता है।

2. **अपान**—यह नाभि प्रदेश के नीचे स्थित है। यह बड़ी आँत, वृक्क, गुदाद्वार तथा मूत्रेन्द्रियों को शक्ति प्रदान करता है। मुख्य रूप से इसका सम्बन्ध प्राण वायु के गुदा द्वार तथा नासिका एवं मुँह द्वारा निष्कासन से है।

3. **समान**—इसका सम्बन्ध छाती एवं नाभि के मध्यवर्ती क्षेत्र से है। यह पाचन संस्थान, यकृत, आँत, क्लोम, जठर तथा उनके रसश्राव को प्रेरित करता है और नियन्त्रित करता है। हृदय तथा रक्त संचालन संस्थान को भी क्रियाशील बनाता है। यह भोज्य पदार्थ को ग्रहण करने योग्य बनाता है।

उदान—इस प्राण-शक्ति के द्वारा कंठनली के ऊपर के अंगों का नियन्त्रण होता है। आँख,कान,नाक मस्तिष्क आदि सम्पूर्ण शरीर की इन्द्रियाँ इसी की शक्ति द्वारा कार्य करते हैं। इसके अभाव या अनुपस्थिति में सोचने-विचारने की शक्ति नहीं रह जाती। बाह्य संसार के प्रति चेतना भी नष्ट हो जाती है।

व्यान—यह प्राण-शक्ति सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त है। यह अन्य शक्तियों के बीच समन्वय और सहयोग स्थापित करती है। सम्पूर्ण शरीर की गतिविधियों को नियमित तथा नियन्त्रित करती है। यह शरीर के अंगों तथा उसकी माँसपेशियों, पेशीय तन्तुओं, नाड़ियों संधियों में समरूपता लाती है तथा उन्हें क्रियाशील बनाती है। शरीर के लम्बरूप स्थिति के लिए यही जिम्मेदार है।

वायु और प्राण—सभी प्राण-शक्तियों पर 'वायु' का नियन्त्रण रहता है। जैसे अपान वायु का सम्बन्ध अपान प्राण से है, समान वायु का सम्बन्ध समान-प्राण से है इत्यादि। श्वसन क्रिया द्वारा यही वायु उत्पन्न होती है। वायु के माध्यम से ही प्राणायाम की क्रिया शरीर की प्राण-शक्ति पर प्रभाव डालती है। मानवीय जीवन अवधि श्वसन-प्रणाली पर निर्भर है। दीर्घ एवं धीरे श्वास लेने वाला व्यक्ति, अल्प एवं जल्दी श्वास लेने वाले व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक काल तक जीवित रहता है। ऋषियों ने अनुभव से पाया कि दीर्घश्वास लेनेवाले सर्प,हाथी, कछुआ आदि जानवर दीर्घकाल तक जीवित रहते हैं। इसके विपरीत तीव्रगति से श्वास लेने वाले पक्षी, कुत्ता, चूहा, खरगोश आदि की जीवनावधि कम है। उनका विचार था कि व्यक्तिगत भिन्नता के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के जीवन-काल में श्वसन संख्या निश्चित रहती है। अतः प्रत्येक श्वास को दीर्घ-गहरा बनाकर प्रत्येक श्वास से अधिक प्राण शक्ति ग्रहण की जा सकती है और उम्र की अवधि बढ़ायी जा सकती है। तीव्र श्वास चलने से दिल के धड़कन की गति बढ़ जाती है। ह्वेल के दिल की धड़कन प्रतिमिनट 16 है और चूहे के दिल की धड़कन की गति एक हजार बार प्रति मिनट है। अतः चूहा ह्वेल से अल्पायु होता है।

श्वसन एवं शारीरिक,मानसिक एवं भावनात्मक क्रियाकलाप—

ये दूसरे को प्रभावित करते हैं। उदाहरणार्थ यदि एक व्यक्ति क्रोधित है या उसमें भावनात्मक उथल-पुथल है तो उसके श्वास की गति और दर बढ़ जाती है। इससे जीवन की अवधि एवं क्षमता कम हो जाती है।

नाड़ी नासिक एवं श्वसन—कभी दाहिने नासिका छिद्र से श्वास अधिक चलता है तो कभी बायें से। कहा जाता है कि यह परिवर्त्तन लगभग प्रति घंटे होता है। यदि किसी कारणवश इसमें व्यवधान उत्पन्न हुआ तो इसकी प्रतिकूल प्रभाव मन, भावना एवं शरीर पर पड़ता है। आपने अनुभव किया होगा, यदि कोई एक स्वर घण्टों बिना बदले चल रहा है तो मानसिक तनाव, सर दर्द आदि रोग होने लग जाते हैं। बात यह है कि इन श्वासों का सम्बन्ध सीधे हमारे नाड़ियों से है। प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार हमारे शरीर में 72 हजार नाड़ियाँ हैं। यहाँ 'नाड़ी' का अर्थ 'नस' नहीं। यह भी अति सूक्ष्म तत्त्व है जिसे किसी सूक्ष्मदर्शी यन्त्र से देखा नहीं जा सकता, क्योंकि यह भौतिक शरीर में स्थित नहीं है। हाँ, भौतिक शरीर में स्थित नसों को उनके समरूप या उनके द्वारा उत्पन्न की गई भौतिक रचना समझने के लिए कहा जा सकता

है। इन्हीं सूक्ष्म नाड़ियों से प्राण-शक्ति प्रवाहित होती रहती है। उपर्युक्त 72 हजार नाड़ियों में सर्वप्रमुख तीन नाड़ियाँ मानी जाती हैं—इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना। इड़ा को चन्द्र या शीतल नाड़ी कहते हैं। पिंगला को सूर्य या गर्म नाड़ी कहते हैं। जब श्वसन बायीं नासिका छिद्र से होता है तो इड़ा को सक्रिय समझा जाता है। उसी प्रकार जब दाहिना स्वर चलता है तो पिंगला नाड़ी की सक्रियता समझी जाती है। ये सभी नाड़ियाँ सुषम्ना की उपनाड़ियाँ हैं और इनका समावेश भी इसी में है। सुषम्ना का प्रवाह मेरुदण्ड में मूलाधार चक्र से आज्ञाचक्र तक है। यदि दोनों नासिका छिद्रों में समान वायु-प्रवाह हो रहा हो तो समझना चाहिए कि सुषम्ना नाड़ी जागृत है। परन्तु सामान्य लोगों में यह अवस्था क्षण भर के लिए आती है, जिस समय स्वर बदलने लगता है। जब दाहिना स्वर यानी पिंगला चल रहा हो तो उस समय प्राण-शक्ति अधिक क्रियाशील होती है। इस समय शारीरिक कार्य, पाचन आदि में सहायता मिलती है। इसीलिए कहा जाता है कि भोजन करने तथा उसके बाद कुछ देर तक दाहिना स्वर चलना चाहिए। इस समय मन बहिर्मुखी रहता है और शरीर में अधिक ताप उत्पन्न होता है। यदि बायीं नासिका में अधिक प्रवाह हो यानी इड़ा नाड़ी चल रही हो तो मानसिक शक्तियों की प्रधानता रहती है। मन अन्तर्मुखी और शान्त होता है। इस समय चिन्तन, चित्त-एकाग्रता आदि कार्य करना चाहिए। रात्रि में इसके चलने से नींद अच्छी आती है और पिंगला के चलने पर नींद आने में असुविधा का अनुभव होता है। और जब सुषुम्ना चले तो आध्यात्मिक कार्य, ध्यान आदि करना चाहिए। प्राणायाम के द्वारा इड़ा एवं पिंगला को शुद्ध तथा नियन्त्रित किया जाता है। इन दोनों में सन्तुलन आने पर ही प्राण के प्रवाह में सन्तुलन आता है और सुषुम्ना में यह प्रवाहित होता है। ध्यान के अभ्यास में उच्चत्तम अवस्था प्राप्त करने के लिए सुषुम्ना का प्रवाहित होना अनिवार्य है, क्योंकि सुषुम्ना से ही कुण्डलिनी विभिन्न चक्रों से होती हुई जाती है। मानव-शरीर विज्ञान के अनुसार अनैच्छिक नाड़ी संस्थान की दो नाड़ियों यानी अनुकम्पी एवं परानुकम्पी तन्त्रिकाओं से 'इड़ा-पिंगला' की समानता स्थूल रूप में समझायी जा सकती है। उदाहरणार्थ—अनुकम्पी तन्त्रिका हृदय की गति को तीव्र करती है, रक्त नलिकाओं में फैलाव लाती है। श्वसन दर में वृद्धि करती है, कान, आँख की क्षमता को बढ़ाती है। इस प्रकार व्यक्ति को वाह्य क्रियाओं के लिए तैयार करती है। परानुकम्पी इसके विपरीत कार्य करती है। यानी ये तन्त्रिकाएँ हृदयगति को न्यून कर देती है, रक्त नलिकाओं का आकुंचन करती हैं, श्वसन क्रिया मन्द कर देती है। फलतः व्यक्ति अन्तर्मुखी हो जाता है। यही बात इड़ा और पिंगला के लिए भी लागू है। प्राणायाम तथा अन्य यौगिक क्रियाओं द्वारा इन्हें नियन्त्रित करते हैं। पूज्य स्वामी शिवानन्द जी के अनुसार—"प्राणायाम वह माध्यम है जिसके द्वारा योगी अपने छोटे से शरीर में समस्त ब्रह्माण्ड के जीवन के अनुभव का प्रयास करता है।"

प्राणायाम की पूर्व तैयारी—

प्राण शक्ति को जाग्रत एवं नियन्त्रित करनेवाले इस प्रभावशाली प्राणायाम के अभ्यास करने के पूर्व हमें अपने गलत श्वसन क्रिया में सुधार तथा अन्य निम्नलिखित निदेशों का अनुपालन करना जरूरी है अन्यथा इसका बुरा परिणाम भी पड़ सकता है—

(1) अधिकांश व्यक्ति गलत ढंग से श्वास-क्रिया करते हैं। फेफड़ों के कुछ भाग की क्षमता का ही उपयोग करते हुए अधूरी श्वास ही लिया करते हैं। श्वास गति में न समानता रहती है और न लयबद्धता। परिणामस्वरूप हमारे सम्पूर्ण शरीर एवं मस्तिष्क में पोषण की कमी हो जाती है। फेफड़ों में अधिक काल तक वायु जमा रहने के कारण अनेक बीमारियाँ जैसे क्षय रोग आदि से ग्रसित हो जाया करते हैं।

अतः गहरी लम्बी श्वास-प्रश्वास क्रिया करने का अभ्यास करना चाहिए ताकि यह हमारी प्रकृति बन जाय। इसके लिए नीचे उदर, छाती एवं यौगिक श्वसन क्रियाओं का अभ्यास बतलाया जा रहा है—

(क) **उदर श्वसन**—जिस प्रकार शिशु पेट से स्वाभाविक श्वसन क्रिया करता है, उसी प्रकार हमें भी श्वसन करने का अभ्यास करना चाहिए। सीधा बैठकर

या चित लेटकर एक हाथ को नाभि पर रखकर इसकी अनुभूति स्वयं की जा सकती है। श्वास लेने को पूरक, छोड़ने को रेचक और रोकने को कुम्भक कहते हैं। पहले दीर्घ पूरक कीजिए। इससे उदर प्रदेश फूल जाता है तथा हाथ ऊपर उठ जाता है। जैसे-जैसे उदर बाहर की ओर फूलता जाता है, वैसे-वैसे हृदय-पटल नीचे दबता जाता है। पूरक के समय इसकी स्थिति जितनी नीचे रहेगी उतने ही अधिक वायु का प्रवेश फेफड़ों में होगा और फेफड़े फैलेंगे।

दीर्घ रेचक कीजिए। अब आप देखेंगे कि पेट संकुचित होता है, फलत: हाथ मेरुदण्ड की ओर नीचे आता है। इस समय हृदय-पटल में चढ़ाव आता है और फेफड़े से अधिकतम मात्रा में वायु बाहर निकलती है।

इस क्रिया को बार-बार दुहराइए। ध्यान रहे अभ्यास काल में छाती या कन्धों में हलचल न हो।

(ख) **छाती द्वारा श्वसन**—पहली क्रिया की भाँति ही बैठिये या चित लेट जाइए। छाती या पसलियों का विस्तार करते हुए पूरक कीजिए। आप अनुभव करेंगे कि इस क्रिया से पसलियाँ ऊपर बाहर की ओर उठ जाती है। रेचक करने के साथ ही इसमें उतार आ जाती है।

इस श्वसन काल में उदर प्रदेश में गति न होने दीजिए।

(ग) **यौगिक श्वसन**—उपर्युक्त दोनों प्रकार की श्वसन प्रक्रियाओं के योग से यह सम्भव है कि फेफड़े में अधिकतम मात्रा में वायु का प्रवेश किया जाय एवं रेचक द्वारा अधिक से अधिक गन्दी वायु बाहर निकाली जाय।

अभ्यास—क्रमश: उदर एवं छाती का धीरे-धीरे विस्तार करते हुए फेफड़े में अधिक से अधिक भरिये। सबसे पहले छाती फिर उदर को शिथिल करते हुए रेचक कीजिए। अन्त में उदर के स्नायुओं के आकुंचन पर बल डालिए ताकि फेफड़ों से अधिक-से-अधिक वायु बाहर निकल सके।

उदर से छाती एवं छाती से उदर तक की गति एक तरंग की भाँति हो। ध्यान रहे,सम्पूर्ण क्रिया धीरे-धीरे बिना झटके के सम्पादित होनी चाहिए। पूरक एवं रेचक क्रियाएँ उपर्युक्त विधि के अनुसार होनी चाहिए। प्रारम्भ में प्रतिदिन कुछ मिनट, विशेषकर प्राणायाम के अभ्यास के पूर्व इस श्वसन क्रिया को चेतना पूर्वक करना होगा। बाद में यह स्वत: स्वाभाविक बन जायेगी और इसमें पूरे दिन का अभ्यास किया जा सकेगा।

इस अभ्यास से जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्त्तन आ जायेगा। सर्दी,जुकाम,फेफड़ों की बीमारियों आदि के प्रति आप कम ग्रहणशील हो जायेंगे। आप में अनन्त जीवन शक्ति का विकास होगा और जल्दी थकान का अनुभव नहीं होगा। आपकी चिन्तन-शक्ति विकसित होगी। चिन्ताओं एवं तनावों से मुक्ति मिलेगी।

(2) **अशुद्ध वायु को फेफड़ों से निष्कासन**—प्राणायाम करने के पूर्व जमीन पर सीधे बैठिये या खड़े हो जाइए। पीठ बिल्कुल सीधी रहे। बैठी अवस्था में हाथ भूमि पर और खड़ी अवस्था में हाथ जाँघ पर रहे। दोनों हाथों को धीमी गति से उठाते हुए उदर से पूरक कीजिए। हाथों को उठाने से छाती में विस्तार होगा और अधिक से अधिक मात्रा में वायु का प्रवेश फेफड़ों में होगा। उदर के स्नायुओं संकुचित करते हुए तथा हाथों को धीरे-धीरे नीचे लाते हुए रेचक कीजिए। इस क्रिया द्वारा फेफड़ों से अधिक से अधिक वायु का निष्कासन होगा। इसे दुहराइये।

(3) प्राणायाम के पूर्व जठर, आँतों एवं मूत्राशय को खाली कर लेना जरूरी है। भोजन के कम-से-कम चार घण्टे बाद ही प्राणायाम करना चाहिए।

(4) प्राणायाम, आसन के बाद तथा ध्यान के पूर्व करना चाहिए।

(5) प्राणायाम के समय शरीर को अधिक-से-अधिक शिथिल करना चाहिए।

(6) प्राणायाम के समय किसी प्रकार का तनाव शरीर पर नहीं पड़ना चाहिए। सुखदायक स्थिति तक ही कुम्भक लगाना चाहिए अन्यथा फेफड़ों पर कई प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

(7) हवादार, साफ, सुखद वातावरण में ही प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए। गन्दे, बदबूदार,

धूल, धुआँ भरे स्थल पर जहाँ अति तीव्र वायुप्रवाह हो वहाँ इसका अभ्यास नहीं करना चाहिए।

(8) प्राणायाम के समय बाहरी बाधा, जैसे—मच्छर, मक्खी आदि से बचने के लिए शरीर पर हल्का कपड़ा या मच्छरदानी का उपयोग किया जा सकता है।

(9) सिद्धासन या सिद्धयोनि आसन प्राणायाम के लिए सर्वोत्तम माना जाता है, क्योंकि इसमें कन्धों का फैलाव अधिकतम रहता है।

(10) प्राणायाम के अधिकता से अभ्यास करने वाले को धूम्रपान, तम्बाकू, मांस आदि जैसे उत्तेजक वस्तुओं का त्याग करना जरूरी है।

(11) प्राणायाम के उच्च अभ्यास अच्छे प्रशिक्षित निर्देशक की उपस्थिति में ही करना चाहिए।

(12) प्राणायाम की प्रारम्भिक अवस्था में अपचन या मूत्र की मात्रा में कमी हो सकती है। यदि कड़े दस्त हों तो नमक एवं मिर्च-मसाले त्याग देना चाहिए। यदि पतले दस्त हों तो कुछ दिनों के लिए अभ्यास बन्दकर चावल एवं दही का सेवन करना चाहिए।

अब मैं कुछ महत्त्वपूर्ण तथा सबों के लिए उपयोगी कुछ प्राणायाम का अभ्यास कराना चाहूँगा—

भ्रामरी प्राणायाम

विधि—ध्यान के किसी आरामदायक आसन (जैसे—सिद्धासन या स्त्रियों के लिए सिद्धयोनि आसन) में बैठ जायँ। मेरुदण्ड सीधा हो, मुँह सामने रहे। नेत्र बन्द करें तथा शरीर को शिथिल बनायें। पूर्ण अभ्यास में मुँह बन्द रहेगा। दोनों नथुनों से पूरक कीजिए। अन्तरंग कुम्भक लगाइए। जालंधर या मूलबन्ध का अभ्यास पाँच सेकेण्ड तक कीजिए। (नोट—इन बन्धों एवं आसनों का अभ्यास पिछले अंकों में कराया जा चुका है।)

दोनों अभ्यास एक साथ भी किए जा सकते हैं। अब बन्धों को मुक्तकर दोनों कर्ण छिद्रों को प्रथम अंगुलियों से बन्द कीजिए। मुँह बन्द करते समय दाँतों को विलग कीजिए। फिर मधुमक्खी या भौंरे की गुंजार-सी दीर्घ अखण्ड ध्वनि करते हुए धीरे-धीरे अविरल रेचक कीजिए।

मस्तिष्क में इस ध्वनि की तरंगों का अनुभव कीजिए। यह प्रथम आवृत्ति हुई।

इस प्रकार पाँच आवृत्तियों से अभ्यास प्रारम्भ कर क्रमशः आवृत्तियों की संख्या बढ़ाते जाइए।

लाभ—भ्रामरी प्राणायाम मानसिक तनाव, क्रोध, चिन्ता, विक्षेपों को दूर करता है। रक्तचाप एवं गले के रोगों को कम करता है। स्वर में मधुरता लाता है। आध्यात्मिक ध्वनि या नाद के प्रति जागरुक बनाता है।

मैंने गूँगे और बहरे बच्चों पर इसका प्रयोग किया। इससे उन्हें काफी लाभ मिल रहा है। उनकी ध्वनि पहले से अधिक स्पष्ट निकलने लगी है।

परमपूज्य स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती परम हंस (बिहार योग विद्यालय, मुंगेर) के निर्देशन में डाक्टरों ने हृदय रोगियों, पागलों तथा अन्य कई प्रकार के रोगियों पर प्रयोग कर आश्चर्यजनक सफलता हासिल की है। अभी-अभी हाल में मुंगेर सदर अस्पताल के डाक्टरों ने ऑपरेशन के मरीज को औषधि देकर बेहोश किए बिना सिर्फ भ्रामरी प्राणायाम कराकर ऑपरेशन करने में सफलता पायी। इसी प्रकार इसका व्यापक रूप से प्रयोग पागलों, अपराधियों पर किया जा रहा है और वे लाभान्वित भी हो रहे हैं।

●

जब आप से कोई गलती हो जाय, तो अपनी गलती फौरन स्वीकार करें। यदि स्पष्टीकरण मांगा जाय, तो स्पष्टीकरण दें, बहाने कभी नहीं।

"हे गुरु ! लॉटरी खेलहू मन लाई

□ राजकिशोर मण्डल

श्रद्धेय सम्पादक जी,

'कर्मवीर' की जय हो !

सुना है, इन दिनों आप 'कर्मवीर' के 12 वें अंक के प्रकाशन-कार्य में जुटे हैं। खुशी की बात है कि 12 वाँ अंक निकालने जा रहे हैं और अभी तक अपनी पत्रिका के बारह नहीं बजे हैं जबकि कुछ लोगों का कहना था कि दो-चार अंकों के बाद ही 'कर्मवीर के बारह बज जायेंगे जैसाकि आम पत्रिकाओं का हश्र होता है। खैर, लोगों की बात छोड़िए, लोग ऐसे ही कहते रहते हैं। किसी शायर ने ठीक ही कहा है—

कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना।
छोड़ो,बेकार की बातों में कहीं बीत न जाये रैना ।।

सम्पादकजी, आपने ठीक ही लिखा है कि इन दिनों शहर में लॉटरी की बड़ी धूम है। गली-गली में, नुक्कड़-नुक्कड़ पर लॉटरी की छोटी-बड़ी दूकानें खुली हैं। सुबह होते ही लोग इन दूकानों में इस तरह जमा होने लगते हैं जैसे मरे पशु के आस-पास चील और कौवे 6 नं० गेट पर की भीड़ तो और गजब ढाती है। इस वेला में अगर कोई शरीर से अस्वस्थ आदमी पड़ जाये तो उसकी स्थिति बड़ी दयनीय हो जाती है। टिकट बेचने वाले "नमस्तेजी···नमस्तेजी" "कमांडर ···कमांडर", "राज्यश्री·····राज्यश्री" इस तरह बड़-बड़ाते रहते हैं,जैसे सीधे राँची से भाग आये हों। दो-चार इधर,दो-चार उधर फुसुर-फुसुर करते नजर आते हैं कि आज कौन-सा नम्बर किस्मत बनाने वाला है। कुछ लोग कागज-कॉपी निकालकर हिसाब करते देखे जाते हैं कि आज का दिन तिग्गी खेलेगा या सत्ता जैसे कोई पंडित लाल-पतरा निकालकर ग्रह-गोचर देख रहा हो। कुछ लोग चुपके से टिकट खरीदकर इस तरह ससरते नजर आते हैं जैसे शराबी बोतल दबाकर भाग रहा हो।

लॉटरी की दुनिया भी विचित्र है, सम्पादकजी ! यहाँ कुछ ऐसे शब्द प्रचलित हैं जिनके अर्थ इसी दुनिया के लोग ठीक-ठीक जानते हैं। जैसे—रोज खुलनेवाली लॉटरी को 'डेली-ड्रॉ' कहते हैं। जो लॉटरी मोटे इनाम देती है, उसे 'बम्पर' कहा जाता है। जिस लॉटरी में तुरन्त इनाम मिले उसे 'इंसटेंट' कहा जाता है। समय से पहले नम्बर घोषित करने को 'टेलेक्स आउट' कहा जाता है। जिस नम्बर की आशा कम हो अगर वही नम्बर उठ जाय तो उसे 'काउन्टर गेम' कहते हैं। लोग जिस लॉटरी में ईमानदारी देखते हैं, उसे 'फेयरगेम लॉटरी' कहते हैं। जो रोज लॉटरी खेलते हैं उसे 'खिलाड़ी' और जो कभी-कभी खेलते हैं,उसे 'शौकिया' कहा जाता है। जो नौकरी-पेशे वाले लोग अपना काम-धन्धा छोड़कर लॉटरी के पीछे घूमते नजर आते हैं उसे 'गुठली बाज' कहा जाता है। इस बाजार में भी कोई 'आर्गेनाइजर' हैं तो कोई स्टॉकिस्ट', कोई 'एजेन्ट' है तो कोई 'सेलर' और 'परचेजर'। जो खिलाड़ी 'ड्रॉ' के ऐनवक्त पर टिकट खरीदकर पूरे खेल को अपनी ओर बदल लेने का प्रयास करता है, उसे 'कलाकार' कहा जाता है। यहाँ आठ या नौ कहकर टिकट नहीं मांगा जाता, बल्कि 'अट्ठा' या 'नहला' कह-कर मांगा जाता है।

सम्पादकजी अधिकांश लोग लॉटरी को 'लक' का खेल, किस्मत का खेल मानते हैं। पर कुछ लोग ऐसे भी हैं जो इसे किस्मत का खेल नहीं मानते। उनका कहना है कि लॉटरी हिसाब-किताब का खेल है, गणित का खेल है। इस गणित में जो महारत हासिल कर लेता है उसे ही पक्का खिलाड़ी कहा जाता है और ऐसा खिलाड़ी जो नम्बर कह दे, उससे अलग नम्बर उठ नहीं सकता। लेकिन,कुछ लोग ऐसे भी हैं,सम्पादक जी, जो लॉटरी के खेल को जुआ के अलावा और कुछ नहीं मानते। चलिए,उनकी बात भी मान ली जाए,तो भी इसमें हर्ज क्या है,सम्पादकजी ? जुआ तो बड़े-बड़े राजा-महाराजा खेलते रहे हैं। युधिष्ठिर जैसे लोगों ने जब इसे सम्मान दिया है, तो और लोगों की बात ही

क्या ? अरे ! लॉटरी-जुआ तो राजसी खेल है, बड़े लोगों की शान-शौकत है।

बहुत लोग लॉटरी को दलदल की संज्ञा देते हैं और कहते हैं कि जो इसमें एक बार भी फँसता है, वह धंसता ही धंसता चला जाता है। इसमें भी एक नशा है। जिस तरह नशाखोर को शराब के बिना चैन नहीं मिलता, उसी तरह लॉटरी खेलने वालों को लॉटरी के बिना चैन नहीं मिलता। इसलिए लॉटरी बुरी चीज है। अब आप ही बताइए सम्पादकजी, किसी को किसी के बिना चैन नहीं मिले तो इसमें खराबी क्या है ? मृग को मृगजल के बिना, चकोर को चाँद के बिना, परवाने को शमा के बिना और प्रेमी को प्रेयसी बिना चैन नहीं मिलता, तो क्या ये सारे के सारे बुरे हैं, बेवकूफ हैं ? क्या वे इनसे प्यार करना छोड़ दें ?

सम्पादकजी, आपने भी लोगों के मुँह से सुना होगा कि लॉटरी खेलने वाले निन्यानबे के चक्कर में फँसे रहते हैं। सुबह को लखपति बनने की उम्मीद लिए लॉटरी खरीदते हैं और जैसे ही 'ड्रॉ' निकलता है कि उनके सपने टूट जाते हैं। कोई-कोई तो इतने साधुस हो जाते हैं कि चुपचाप चूहे की दवा खाकर चूहे की मौत मर जाते हैं। अब आप ही कहिए, सम्पादक जी, इस नुकताचीनी का भी कोई सिर-पाँव है ? अरे, सपना तो सपना है और सपना का बनना टूटना तो होता ही रहता है। आजादी के समय हमने क्या-क्या सपने देखे थे ! क्या वे पूरे हो गये ? क्या हमारी गरीबी मिट गई ? क्या सबको दो जून की रोटी नसीब हो गई ? क्या हर हाथ को काम मिल गया ? ये दूर की बातें हैं, इन्हें रहने दीजिए। आये दिन चुनाव होते रहते हैं। लोग आते हैं और हमारी खुशहाली की बातें करते हैं, हमें सब्ज बाग दिखाते हैं। हम मीठे सपनों में खो जाते हैं और उन्हें वोट दे देते हैं। वोट के बाद हमारे सपनों का क्या हश्र होता है, यह हम अच्छी तरह जानते हैं। तो क्या, हम वोट देना छोड़ देते हैं ? क्या सपना देखना बन्द कर देते हैं ? अगर नहीं, तो फिर लॉटरी से सपना टूटता है तो टूटे, हम लॉटरी को क्यों छोड़ें ? एक लॉटरी से सपना टूटा कि फटाक से दूसरी लॉटरी खरीद ली। और दूसरी लॉटरी खरीदते ही हजारों नये सपने जाग उठते हैं, खिजाँ में बहार झांकने लगती है, सूखे में सावन का अहसास होने लगता है, मन बुलन्द हो जाता है।

सम्पादकजी, शराब को वे ही गाली देते हैं जो शराब नहीं पीते। ठीक इसी तरह, लॉटरी जुआ को वे ही खराब कहते हैं जो इसे खेलते ही नहीं। दूर से ही दही देखा और कह दिया कि दही खट्टा है। यह कहाँ की बात हुई ? अरे, दही को चखिए, मुँह में रखिए और तब कहिए कि दही कैसा है ? मेरा तो ख्याल है, सम्पादक जी, कि जो लोग ताड़ी दारू को, लॉटरी-जुआ को गालियाँ देते रहते हैं, उन्हें चाहिए कि पहले वे इन चीजों का सेवन करें, अमल में लायें, तब कुछ कहें। ये सारी चीजें इतनी अच्छी है, सम्पादक जी कि इनके पास जाते ही इसका रंग लग जाता है।' "लाली देखन मैं गई मैं भी हो गई लाल" वाली बात हो जाती है, क्योंकि 'संग का रंग' लगता ही है। फिर तो लोग गाने लगते हैं—

तेरे पास आया सनम, तेरे होके रह गये।"

सम्पादकजी कौन काम अच्छा है और कौन काम खराब, यह कहना बड़ा कठिन है। इसीलिए बड़े-बड़े लोगों ने कहा है कि काम अच्छा या बुरा नहीं होता, काम के पीछे जो भावना रहती है, वही काम को अच्छा या बुरा बना देती है। इस कसौटी पर तो जुआ-लॉटरी भी बुरी चीज नहीं है, बस हम अपनी भावना को ठीक रखें। लॉटरी खेलने वालों की भावनायें कैसी रहती हैं, इसका पता इसी बात से चलता है कि लोग काली माई, दुर्गा माई, भोलेशंकर आदि का नाम लेकर ही लॉटरी खेलते हैं। कुछ लोग मन-ही-मन इन देवताओं से लड्डू चढ़ाने की बात करते हैं और कुछ तो इन देवताओं के नाम लॉटरी की रकम का फिफ्टी परसेन्ट दे डालते हैं और कहते हैं कि अगर दो लाख आया तो एक लाख आपका और एक लाख मेरा। एक लाख से आपका घर बनवा दूँगा, मन्दिर बनवा दूँगा। ऐसा लालच देते हैं, कि बेचारे भगवान भी सकते में पड़ जाते हैं और तब इस हालत में कभी-कभी गरीबों को भी लॉटरी मिल जाती है। पता नहीं,

भगवान को अपना घर है या नहीं ? सुना है, उनके पास भी तीन ही घर थे। दो मुट्ठी चावल खिलाकर सुदामा ने दो घर अपने नाम करवा लिए और शेष एक घर जो था, उसे बाबर ने तोड़-ताड़कर मस्जिद बनवा ली। भगवान ने देखा कि अब क्या करें तो उन्होंने भगवान से खुदा बनकर उसमें शरण ले ली। फिर, लोगों ने मस्जिद तोड़ दी और 'टेम्परारी हट' का निर्माण किया तो खुदा ने अपने को राम लला के रूप में ढाल लिया और इस तरह भगवान घर से बेघर होते-होते बच गये। आखिर, बचे भी क्यों नहीं ? जब साधारण लोग दूसरों के क्वार्टर में घुसकर शान से रहते हैं तो भगवान क्या साधारण लोगों से भी गये गुजरे हैं ?

हाँ, तो मैं कह रहा था, सम्पादकजी, कि लॉटरी कोई बुरी चीज नहीं है, अच्छी चीज है। और, तभी तो सरकार भी इसे खेलाने लगी है। क्या सरकार भी कोई बुरा काम करती है ? सरकार गरीबों को देखना नहीं चाहती और इसीलिए गरीब बेचारे कोशिश में हैं कि येन-केन प्रकारेण अमीर हो जायें। इसलिए वे लॉटरी खेलते हैं। कमाने-धमाने से तो कुछ होता नहीं है, सम्पादकजी ! खाकपति के खाकपति बने रहते हैं। सरकार बेचारी भी जोर लगाती है, पर उन्हें गरीबी रेखा से ऊपर कर नहीं पाती। वह योजना पर योजना बनाये जा रही है ताकि जनता अपनी गरीबी छोड़ दें। आये दिन विदेशों से कर्ज ले-लेकर घी पिलाती है, पर गरीब अभी भी 'भिक्षुक' कविता का नायक बना बैठा है—

पेट-पीठ दोनों मिलकर है एक
चल रहा लकुटिया टेक।

अब सरकार बेचारी क्या करे। वह तो गाये फिरती है—

"क्या-क्या न जुल्म सहे, सितमगर तेरे लिए"

गरीबों को गरीबी रेखा से ऊपर लाने के लिए उसने क्या नहीं किया ? ऊँच-नीच, बैकवर्ड-फोरवर्ड, अगड़ा-पिछड़ा, पिछड़ा-अत्यन्त पिछड़ा आदि अनेक भागों में विभक्त किया। फिर आरक्षण दिया, मण्डल दिया·····। पर गरीब फिर भी कमण्डल लेकर घूमते रहे और मण्डल से मिलने वाले लाभों का खड़मण्डल हो गया। सब तरफ से हारकर सरकार लॉटरी के सहारे गरीब जनता को खाकपति से लाखपति बना रही है···धीरे-धीरे करके एक-एक करके। पर लोग हैं, जो टीका-टिप्पणी किये बिना बाज ही नहीं आते।

इसलिए सम्पादकजी, लॉटरी कोई बुरी चीज नहीं है। यही तो एक जरिया है जिससे हम लखपति करोड़पति हो सकते हैं। इसलिए आप अपने कर्मवीर कर्मचारियों को भी सलाह दीजिए कि अगर वे सुख-सम्पत्ति चाहते हैं तो लॉटरी खेलें, खूब खेलें,, क्योंकि कहा भी गया है—

जो चहहू सुख-सम्पत्ति भाई।
लॉटरी खेलहु मन लाई॥

आशा है, सम्पादकजी, आप भी हमारे विचार से शत-प्रतिशत सहमत होंगे।

आपका
मूरखानन्द

शरीर श्रमी हो, मन संयमी और हृदय अनुरागी, तभी
जिन्दगी को हर फसल लहलहाती रहेगी निरन्तर।

—राधिका रमण

छोटे शहर का बड़ा कवि यानी रमेश नीलकमल

□ वैद्यनाथ सिंह
एम० ए०

साहित्यिक गतिविधियाँ छोटे शहरों में जिस रफ्तार से संचालित होती हैं, साहित्य के मठाधीशों के केन्द्र पर वह प्रायः अचर्चित ही रह जाती हैं और अचर्चित रह जाते हैं वैसे कवि-साहित्यकार भी जिनके लिए दिल्ली और भोपाल, काबा और काशी की तरह दर्शनार्थ ही बने रह जाते हैं। जमालपुर जैसे कस्बा-नुमा शहर में साहित्य-सृजन का अनवरत प्रयास किन मुश्किल हालातों से दो-चार होता होगा, सहजता से नहीं समझा जा सकता है।

रमेश नीलकमल ने अपने छोटे शहर जमालपुर में साहित्यिक गतिविधियों को ऊँचाई दी, स्वयं तो सतत रचनाशील रहे ही, साहित्यिक आयोजनों की धूम मचाकर साहित्य की पताका फहराई। कविता को पहाड़ की ऊँचाई तक ले जाने के क्रम में "कविता पहाड़ पर" शीर्ष से कई काव्य आयोजन सम्पन्न किए, लेकिन जैसा कि कहा गया है—घर का जोगी जोगड़ा···। रमेश नीलकमल भी उतने चर्चित नहीं हो पाए जितने का वे हकदार थे। छोटे शहर का बड़ा कवि भी चर्चा के केन्द्र में नहीं उतर पाया, यह मलाल "आग और लाठी" के भूमिका-लेखक विजेन्द्र अनिल को भी है। किसी कवि को मूल्यांकन के कटघरे में खड़ा करने के लिए उसका कृतित्व चाहिए, व्यक्तित्व नहीं। व्यक्तित्व तो कृति सापेक्ष होता है। रमेश नील-कमल ने चार कविता-पुस्तकें लिखीं, जिनमें से प्रकाशित हैं—"आग और लाठी", "बोल जमूरे" तथा "मांझी-मन होशियार" और शीघ्र प्रकाश्य है—"अपने ही खिलाफ"। इनकी दो कहानी-पुस्तकों में से एक "नया घासीराम" प्रकाशित हो चुकी है और एक "एक और महाभारत" भी शीघ्र प्रकाश्य हैं। इनके अति-रिक्त इनकी दो अन्य पुस्तकें "वैश्यों का उद्भव और विकास" (शोध-इतिहास) तथा "काला दैत्य, राज-कुमारी और पहियों पर राजमहल" (रम्य रचना) भी प्रकाशित हैं। समीक्षा-संग्रह 'समय के हस्ताक्षर' भी शीघ्र प्रकाश्य हैं। इतना ही नहीं, समय-समय पर इनसे लिए गए साक्षात्कारों का एक संकलन शीघ्र प्रकाश्य है। इन साक्षात्कारों को पढ़ने से कवि-कहानीकार समीक्षक-सम्पादक रमेश नीलकमल की साहित्यिक अवधारणाओं की परिचिति मिलेगी।

रमेश नीलकमल द्वारा सम्पादित पुस्तकों की एक लम्बी सूची है—सम्भावनाओं से परे, राजकमल चौधरी : सृजन के आयाम, एक और आसमान, कहा-नियों का सच, जकी अनवर और उनकी कहानियाँ, दर्द अभी तक हमसाए हैं, कोसी के आर-पार, कथा-पारिजात और मूल्यांकन के घेरे में। सम्प्रति वे "कारखाना" लघु-पत्रिका का सम्पादन कर रहे हैं। इसके अबतक प्रकाशित कुल उन्नीस अंकों ने साहित्यिक जगत का ध्यान आकर्षित किया है।

"कविता पहाड़ पर" काव्य-समारोह के अध्यक्ष पद से श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए रमेश नील-कमल ने एक बार कहा था—"कविताएँ केवल शब्द नहीं होतीं, वे स्थितियाँ होती हैं जिनसे होकर आदमी गुजरता है और मानव-मन की गुत्थियों से परित्राण पाता है।" तब रमेश नीलकमल को जानने के लिए, उनके कवि-मन को पहचानने के लिए उनकी कृति और उनकी जीवन-स्थितियों से रूबरू होना मेरे लिए एक सुखद आश्चर्य है।

"देखिए ! मैं कविता अपनी मिट्टी से उठाता हूँ। अपने परिवेश के प्रति सजग रहकर प्रत्युत्पन्नमति से अपनी प्रतिक्रियाओं को शब्द देना ही रचनाकार की रचना-प्रक्रिया होती है। तब वैयक्तिक चिन्तन भी सामाजिक चिन्तन का द्योतक होता है, तब आत्मपरक कविताएँ आत्मग्रस्त नहीं होतीं। ऐसे में अपनी कविता-प्रक्रिया के मुख्य आधार को बताने के लिए दार्शनिकता के लबादे से ढँके-पुते शब्दों के प्रयोग को मैं बेमानी मानता हूँ। जो भोगता हूँ या फिर तादात्म्यानुभव से उन विसंगतियों का अहसास करता हूँ, जिनसे कविता फलवती होती हैं तो फिर मेरी कविता-प्रक्रिया शुरू हो

जाती है। शब्द उतरने लगते हैं पन्नों पर अपने पूरे अर्थ के साथ, लयों में, छन्दों में।"[1]

उपर्युक्त कथन है जन-चेतना एवं मानव-मूल्यों की समन्वित चिन्तनधारा के कवि रमेश नीलकमल का जो उन्होंने डॉ० अशोक लव (दिल्ली) से एक साक्षात्कार में कहा था। रमेश नीलकमल कवि हैं, कहानीकार हैं, एक पत्रिका के सम्पादक भी हैं। इनकी काव्य-चेतना का मूल स्वर ही है अन्याय का विरोध करना। यही कारण है कि कवि रमेश नीलकमल की पहली कविता पुस्तक का शीर्ष ही है "आग और लाठी" जिसमें इनकी कुल छोटी-बड़ी बयालिस कविताएँ हैं। यह 1985 ई० में छपी और 1987 ई० में भारत सरकार के रेलवे मंत्रालय ने इस पर सात हजार रुपयों का मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार देकर इन्हें सम्मानित किया। इस पुस्तक की अबतक लगभग एक दर्जन समीक्षाएँ आई हैं। रमेश नीलकमल को विद्वान् समीक्षकों के माध्यम से जानने के पहले मैं उनके काव्य-उत्स को जानने के लिए उनके स्वयं से साक्षात्कार का कुछ अंश आपके सामने रख रहा हूँ जो स्वयं व्याख्यायित हैं।[2]

"—अच्छा भरा-पूरा व्यवसायजीवी परिवार कब तीन-तेरह हो गया, घड़ियालों के बीच बैठकर क, ख, ग से मैट्रिक तक की परीक्षा देने से पूर्व तक पता नहीं चला। घर पर दूध का व्यवसाय था, पर "पानी" ने पानी नहीं रहने दिया (मगरमच्छों ने दूध में पानी मिला-मिलाकर देना शुरू कर दिया था और पिताजी को "जल में रहकर मगर से बैर" का मुहावरा याद रहा होगा) और पिताजी ने कर्ज की नदी में उब-डूब करते हुए अस्तित्व की लड़ाई लड़ी। मैं भी इस अस्तित्व की लड़ाई का एक प्रमुख पात्र था, घर का बड़ा बेटा होने के कारण। इस बीच मरे को और मारने के लिए चाचा जी ने बाँट-बखरे की बात उठा दी और कर्ज की नदी पाटने के अपने हिस्से के उत्तरदायित्व से इनकार कर दिया यह कहकर कि पाँच बेटे-बेटियों को पालने-पोसने का बड़े भैया का दायित्व भला मैं क्यों ओढ़ूँ, क्यों बिछाऊँ।

"—अपने गाँव को एक देश मान लूँ, तो उपनिवेश की तरह दो टोले अब भी इससे जुड़े-बँधे हैं। दो और थे जो गंगा के कटाव से आक्रान्त होकर गाँव से दूर जा ठिकाने लगे और गाँव कहलाये। मास्टर जयन्त तब हमारे गाँव के स्कूल में ही लगे थे। तुलसी जयन्ती में आने का आमन्त्रण स्वीकार कर भी वे नहीं आए थे, क्योंकि मेरा घर "टोला" पर था, "डीह" पर नहीं और उनके अनुसार "टोला" पर पिछड़ी जातियों के लोग रहते हैं और उन्हें कुछ बताना अपने पाँवों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा है। बात लगी थी मुझे। तब और भी, जब यह जान पाया कि मास्टर जयन्त कम्युनिस्ट हैं।

"—राजेन्द्र यादव ("हंस" के सम्पादक, क्षमा करें, वे नहीं) को तब मेरे टोले में तेज-जहीन विद्यार्थी माना जाता था। उसे खाट पर बैठे देखकर एक फारवर्ड जाति के अ-फारवर्ड आदमी ने पीट दिया था कि तुम्हारी यह मजाल कि मेरे सामने खाट पर बैठे रहो।

"—आर्थिक तंगदस्ती से साक्षात्कार कितनी जान-लेवा होती है, यह मैंने तब जाना, जब पिताजी कर्ज की नदी को बेपेन्दी की नाव से पार करने का उपक्रम कर रहे थे, जब कॉलेज में नाम लिखाने के लिए मेरी बारह साल की पत्नी से उसके गहने उतरवा लिए गए थे, जब कॉलेज-खर्च के लिए ट्यूशनें तथा पेट-खर्च के लिए तीन-चार व्यक्तियों का खाना बनाने के लिए मैं मजबूर हो गया था। विसंगतियों से परत-दर-परत साक्षात्कार हुआ था, मेरा और तब ही अपने अहसास को शब्द देने की मेरी जुर्रत साकार होने लगी थी, क्योंकि मैंने अहसासा था कि संसार का 'सबसे बड़ा सुख' अपनी बात को कह देने में है।"

और इसी "सुख को प्राप्त करने के लिए रमेश नीलकमल ने कविताएँ लिखीं, कहानियाँ लिखीं और ऐसे उन समस्त लोगों के लिए, जिन्हें अपनी बात कह देने से बड़ा "सुख" कुछ और नहीं लगता था, पत्रिका निकाली और उन्हें प्रकाशित करते रहे।

"आग और लाठी" उनकी पहली कविता-पुस्तक है जिसकी समीक्षा करते हुए पटना विश्वविद्यालय के प्रो० डॉ० अमर कुमार सिंह ने लिखा।[3]

"जनवादी कवि के रूप में रमेश नीलकमल यह समझते हैं कि काव्य का एक उद्देश्य शोषण के खिलाफ जनमत तैयार करना है और सामाजिक हल को खोजने में कविता को भी माध्यम बनाया जा सकता है। मैं समझता हूँ कि न केवल विषय की दृष्टि से, बल्कि काव्य-भाषा और मुहावरों की प्रयोग-विधि की दृष्टि से भी नीलकमल का काव्य हमारे अध्ययन की अपेक्षा रखता है। कवि समाज चेतना के भीतर उठ रहे तनावों को वाणी देने में तत्पर रहा है। चेतना का यह उभार कवि-परिवेश, उसकी समूह-परक अनुभूतियों और निजी निरीक्षण अनुभूति की उपलब्धि है। अपने परिवेश के मूल्यांकन विवेचन का सजग दायित्व कवि पर होता है और नीलकमल ने अपनी कविताओं में कवि और सामाजिक परिवेश के अन्तःसम्बन्धों को उद्घाटित करने वाले प्रसंगों तथा चिंतन-सूत्रों को उपस्थापित करने वाले उन संवेदन-सूत्रों को उठाया है जो हमारे सामाजिक जीवन या परिवेश को अधिक परिमार्जित और कल्याणकारी बना सकते हैं।··· "आग और लाठी" के पढ़ने से पता चलता है कि कुव्यवस्था के ज्वर से पीड़ित समाज में कविता को अधिक रचनात्मक भूमिका अदा करनी है। "घुटनों में छिपे सिर" में कवि कहता है—

लोग रोज बाघ मारते हैं
गीदड़ों की कतार करते हैं लम्बी
हुआँ-हुआँ का शोर
हुआ कुछ नहीं
कुछ नहीं करना भी तो कुछ करना है
अतः बाँधे एक विस्फोट
घुटनों में छिपे सिर की शिखा से
निकाल दें उसे घर से बाहर
वह जहाँ-जहाँ भी जाए
अप्रतिहत। अमान्य मान्यताएँ मिटाए
छिपे सत्य को उभारे
या फिर गीदड़ों की कतार ही करे छोटी
बहुत छोटी।"

नीलकमल की कविताएँ एक ही साथ अतीत, वर्त्तमान और भविष्य की बातें करती हैं। अतीत उन्हें खिलौना लगता है। वर्त्तमान बौना, किन्तु भविष्य का सुनहलापन उनका मन मोह लेता है। अतीत के चित्र खींचने में उन्होंने मिथकों का सहारा लिया है। प्राचीन भारतीय मिथक उन्हें अत्यन्त प्रिय हैं। वे चेतना-सम्पन्न कवि हैं, इसका प्रमाण इस बात से भी मिलता है कि मिथकों का उपयोग वे हमेशा अपने ढंग से करते हैं। मिथक कभी उन पर हावी नहीं होता, जैसा कि मिथकीय कविता लिखने वालों को यह खतरा रहता है।

नीलकमल को गाँव अत्यन्त प्रिय है। गाँव के खेतों, खलिहानों, गलियारों और संघर्षरत जनता की चर्चा अपनी कविताओं में अनेकशः की है। गाँव की जो विपद्ग्रस्तता उन्हें दुखाती है, उसका भी कारण कवि ने उन सामंतवादी षड्यंत्रों में ही ढूँढ़ा है जो कभी आदमी को आदमी बनकर रहने के पक्षधर नहीं हुआ करते। ग्रामीण बिम्ब इन्हें अतिप्रिय हैं और वे जानते हैं कि इस "गजब के देश" का उद्धार ग्रामीण जनता के हाथों ही सम्भव है। वे जानते हैं कि सुविधाभोगी वर्ग कभी किसी जनवादी राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकता और ग्रामीण जनता का "सुविधाभोग" भी वे बखूबी जानते हैं।

साहित्य में "क्या कहा गया" जितना महत्त्वपूर्ण है, उससे थोड़ा भी कम यह नहीं कि कैसे कहा गया? इससे रचनाकार के शैल्पिक प्रयोग की सफलता-असफलता का दिग्दर्शन होता है। अपने शैल्पिक प्रयोगों में भी नीलकमल ठीक-ठाक हैं। वाक्य-संयोजन तथा शब्द-चयन भावों के अनुकूल होते हैं। तत्सम शब्द के साथ फारसी के लफ्जों तक से उन्हें परहेज नहीं। क्रियाओं में उन्होंने कुछ नये प्रयोग किए हैं जो ध्यान देने लायक हैं। उदाहरणार्थ—कुदालना (कुदाल चलाना), शहराना (शहर बन जाना) आदि।

शब्द-आलोचना की बात लें तो "प्रकर" (दिल्ली) में प्रकाशित डॉ० श्याम सुन्दर घोष द्वारा लिखित "आग और लाठी" के समीक्षांश[1] का उल्लेख युक्तिसंगत ही होगा, क्योंकि यह रमेश नीलकमल की रचनाओं के शब्द विधान की परिचिति देते हैं।

"संग्रह की पहली कविता है "खुरपी" जिसे कवि अपनी इज्जत अस्मत सब कहता है और इसे गिरवी न

रखने और ओढ़ने-बिछाने के संकल्प को प्रकट कर कहता है, "आवश्यकता पड़ी तो हथियार बनायेंगे"। केवल खुरपी ही नहीं, गाँव-देहात की अन्य अनेक बातों का कवि उल्लेख करता है। कुदाल उसके लिए ईश्वर की अमानत है। उसी के बल पर उसे सब कुछ करना है—"पालना है, पोसना है, बनाना है, संवारना है।" और फिर यह भी कहता है—"ईश्वर की अमानत ईश्वर को सौंपकर गढ़े में उतर जाना है।" यहाँ हमें कबीर की "ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया" का स्मरण हो आता है। यहीं कवि की यह उक्ति "मन में कबीर ने जन्म लिया है" सही मालूम होती है।

"उसने गाँव-घर की और भी कई बातें कही हैं। जैसे—"गालियाँ सो बातचीत की पत्तल में चटनी है" या छुट्टी में मिली तहजीब की तरह औरतें/रात भर नाचती हैं डायन नाच"। चूल्हे से उठती चिरायंध गंध सेवते वस्त्रहीन बच्चे और बुढ़ाते हुए नवजवान ही नहीं, अलग-अलग टोलों की बात भी कवि करता है "जहाँ राहतों में सिंह अपना हिस्सा ले जाता है। सियारों के नाम बचते हैं कम तौल, सड़े अनाज, रिरियाती हुई आवाज" या "चुनावी मैदान में/भोंपू की डरावनी आवाज में कानों को पीना पड़ता है भाषण"। गाँवों की बात उसे तिक्त और उदास भी करती हैं। इसलिए वह कहता है—"ओ वसन्त मत आना गाँव के सिवाने पर, ओ वसन्त मत आना दर्द के मुहाने पर।" लेकिन वह इतना हताश और निराश भी नहीं है। उसमें कहीं-न-कहीं आशा, विश्वास, संकल्प शेष है, इसलिए वह अंत करता है—"डूबने लगे जब मस्तूल। ओ वसन्त तब आना हथचिट्ठी पाने पर।" यहाँ "हथ-चिट्ठी" शब्द का कवि ने बड़ा कारगर इस्तेमाल किया है। इस शब्द में पूरी संस्कृति, जातीय अस्मिता, आत्मीयता सब कुछ सिमट आयी है।

"साधारण मन की अस्मिता को कवि ने कहीं-कहीं बिल्कुल सीधे या कहीं तनिक तिरछे ढंग से व्यक्त किया है। "ऑपरेशन थियेटर की मेज से उछलकर खून भरी बाल्टी में गुम हुआ मेढ़क" साधारण जन ही है। वही खेतों की दरार से टर्राता आवाज देता है। ऐसों के ही "सख्त हाथ कुदालों पर हैं" और "आसमान को खोदकर रख देंगे, ऐसा संकल्प/ज्योतित है/उनके भाल पर"। ऐसे ही लोगों को कवि ने कहीं "उबलता हुआ पारा" या "धरती पर पाँव और हाथ में मशाल, यह जलता तारा है आदमी "कहकर व्यक्त किया है।

"कवि को अपनी सीमा और सामर्थ्य का बोध है। यह उसके विवेक-बोध का परिचायक है। आज की जो स्थिति है, उसमें कोई कवि अपने को निरंतर संकटग्रस्त महसूस कर सकता है। यह संकटग्रस्त मनः-स्थिति रमेश नीलकमल की भी है जो उसके वर्णनों से लेकर विश्लेषणों और विशेषणों तक में स्पष्ट है। कहीं तो "दीवारों पर लटके कैलेण्डर का एक-एक दिन गुनाहों की झोली में चूता रहता है, तो कहीं "गिर गयी सरकार एक राज्य में। दूसरी ढनमनाती है। तीसरी तोड़ती है दम।" यहाँ "ढनमनाती" शब्द भी खासा रोचक और व्यंजक है। "भाई और बुढ़िया माई को बरगद की छाँव में बाँधकर ठाँव-कुठाँव मारना, चौखटे में जड़े दर्द का खिड़की पर आकर खड़ा होना, केवल खड़ा होना ही नहीं, उसका बयान देना, चिचियाते हुए नवजात का अदेखे संसार को टुकुर-टुकुर देखना, हाथ में ले आवेदन-पत्र/यत्र-तत्र सर्वत्र/नंगी सड़कों पर परेड कर रहे कितने सारे में, सुबह नलों पर जाने में हिचकते बेजान पाँव, माताल व्यवस्था वर्त्तमान, ऊब की शरण में जाने, मन्दिर-मस्जिद-गिरजाघर-गुरुद्वारा-बौद्धविहार, उम्मीदों पर जीना और चोट-नजर से जीवन-रस पीना और वह भी क्लेशों की रेत छानकर···यह सब कुछ स्पष्ट करता है कि कवि वर्त्तमान से बहुत गहरे जुड़कर जीता रहा है और उसने अपने एहसासों को बहुत तड़प और शिद्दत के साथ भोगा और व्यक्त किया है।"

इन्हीं सारे एहसासों को भोगने की तड़प का अक्षर-परिणाम है, कवि रमेश नीलकमल का काव्य नाटक "बोल जमूरे" जिसे भूमिका लेखक प्रो० रामनाथ मिलिन्द ने "नाटकोन्मुखी चिन्तन प्रधान लम्बी कविता माना है। इस पुस्तक का लोकार्पण स्वनामधन्य साहित्यकार विष्णु प्रभाकर ने किया था और पुस्तक पर अपनी टिप्पणी देते हुए बताया था कि रमेश नील-कमल ने "बोल जमूरे" में एक सार्थक प्रयोग कर विषय

को अर्थवत्ता प्रदान की है।[5] मानवीय सम्बन्धों को स्थापित करने के साथ-साथ सामाजिक कुव्यवस्थाओं के खिलाफ जेहाद के उद्देश्य से लिखा गया यह काव्य-नाटक जन-सामान्य की कविता है।[6]

नवभारत टाइम्स (पटना) के समीक्षा-स्तम्भकार श्री शरद रंजन शरद ने "बोल जमूरे" की समीक्षा[7] करते हुए कहा है—

"आधुनिक काल में हिन्दी-साहित्य की अन्य विधाओं के मुकाबले नाट्य-लेखन की प्रवृत्ति काफी सीमित रही है। यथार्थवादी नाट्य प्रस्तुतियों के दौर में भी मौलिक गद्य-नाटक बहुत कम लिखे गए। फिर काव्य नाटकों की गुंजाइश तो और भी कम रही। आठवें दशक के बाद भी, जब ज्यादातर नाट्यकर्मी लोक नाटकों की ओर प्रवृत्त हुए, काव्य नाटक बहुत ही कम लिखे गए—लोग पुराने नाटकों और नाट्य-शैलियों में ही नाटकीयता और काव्यात्मकता तलाशते रहे। छिट-पुट प्रयोगों को छोड़कर नुक्कड़ नाट्यकर्मियों और लेखकों ने भी काव्य नाटकों की तरफ बहुत कम ध्यान दिया। ऐसे में रमेश नीलकमल के काव्य नाटक "बोल जमूरे" का प्रकाशन और वह भी बिहार में, एक खास महत्त्व रखता है।"

प्रकर (दिल्ली) में ही राजस्थान विश्वविद्यालय के प्राध्यापक हितेश व्यास ने बोल जमूरे की समीक्षा[8] करते हुए अपने मन्तव्य इस तरह प्रस्तुत किया है—

"रमेश नीलकमल ने "मुझे कहने दीजिए" शीर्षक के आत्मकथ्य में अपनी कुछ मान्यताएँ स्पष्ट की हैं जो उनके काव्य-नाटक "बोल जमूरे" को समझने में सहायक हो सकती है। लेखक रचना को हथियार मानता है और यह भी मानता है कि इस हथियार से राजनीति की घनीभूत पीड़ा भी हार मानती है। लेखक तटस्थता का पक्षधर है और पक्षधरता के विपक्ष में है। उसकी मान्यता है कि तटस्थता से कथ्य की सामासिकता साकार होती है और किसी भी ओर की अनुरक्ति मौलिक ईमानदारी से हटकर ही होती है। फिर नाटककार मनुष्य को सर्वोपरि मानता हुआ टैगोर के इन शब्दों का हवाला देता है कि "सबार ऊपर मानुष सत्य, ताहार ऊपरे नाई" और चाहता है कि उसे मनुष्य की तरह पढ़ा जाय।

"नाटकारम्भ से पूर्व, जो कि न तो समर्पण है, न आत्मकथ्य, न पराई भूमिका और न नाटकांश, रमेश नीलकमल ने एक काव्यांश दिया है, जिसमें नाट्य-कथा का समाहार आ जाता है, "एक था बाजीगर/एक था जमूरा/जमूरों की ही भीड़। लेकिन बाजीगर जैसा चाहता था। करता था, कराता था। नाचता था, नचाता था। फिर एक दिन जमूरों ने बाजीगर को पहचान लिया। उसका सारा रहस्य जान लिया।" समर्पण में जो कि फिर काव्यांश है, नाटककार ने पूर्व स्थिति का रेखांकन, नया आह्वान, दर्शक-पाठक से अपेक्षा और "बोल जमूरे" काव्य-नाटक का उद्देश्य इन शब्दों में समेट लिया है—"रो चुके अब तक बहुत तुम, अब खड़े हो, बनो तुम सब आदमी, फिर लो, पढ़ो यह काव्य-पुस्तक/नाट्य-पुस्तक जो लिखी मैंने तुम्हारे ही लिए—यह जान लो, पढ़ो, पढ़कर गुनो, फिर से स्वयं को पहचान लो।"

उत्तरशती के सम्पादक प्रख्यात चिन्तक-लेखक प्रो० डॉ० खगेन्द्र ठाकुर ने "बोल जमूरे" का मूल्यांकन करते हुए लिखा है[9] कि "रमेश नीलकमल की प्रस्तुत काव्य-कृति "बोल जमूरे" आज की जनता की ही पीड़ा और चिन्ता को व्यक्त करती है। कवि ने जनता की चिन्ता में युग की चिन्तन दिशा शामिल कर के उसे उदात्त बनाने की कोशिश की है। इस उदात्तता और बाजीगर-जमूरे के काव्य-रूप में अन्तर्विरोध है। कई जगह कविता बाजीगरी के स्तर से ऊपर उठ गयी है। उसकी भाषा भी तमाशे के स्तर से ऊपर उठी है। फिर भी कवि ने यही रूप इसलिए अपनाया है कि वह देश में चल रही मौजूदा बाजीगरी और तमाशे का भेद लोगों के सामने खोलना चाहता है।"

यहाँ पर "बोल जमूरे" काव्य-नाटक के भूमिका-लेखक प्रो० रामनाथ मिलिन्द[10] को उद्धृत करने का लोभ मैं संवरण नहीं कर पा रहा हूँ। वे कहते हैं—

"बोल जमूरे" के संवाद में गजल भी है, नवगीत भी। साफ-सुथरे और अर्थगर्भित। गजल पढ़कर दुष्यन्त की याद आ जाती है, तो नवगीत पढ़कर गाँव की

मिट्टी की सोंधी महक की। एक ओर आसमान के बौनेपन और बलिष्ठ शेर के गीदड़पन का इजहार है, तो दूसरी ओर "हम और हमारे स्वाभिमान" का पर्दा-फाश। महनीयता गोटी बिठाकर सियाराम चन्द्र की जय मानने में नहीं है, प्रत्युत् असलियत को सामने लाकर व्यवस्था—वैपरीत्य का विनाश करने में है। इस कौशल का उत्स है "बोल जमूरे" का विचार-सौष्ठव और शिल्प। आरम्भ से लेकर अन्त तक कुछ ऐसे चित्र आए हैं जो अपने-आप में अर्थ-संप्रेषण और रस-निष्पत्ति दोनों ही दृष्टियों से पूर्ण समर्थ हैं। कुछ पंक्तियाँ देखिए—

बाजीगर—लोकतंत्र है कहाँ ?—जमूरे बोल ध्यानकर
जमूरा —यहाँ-वहाँ हर कहीं/चढ़ा/सबकी जुबान पर
बाजीगर—सत्य-अहिंसा ?
जमूरा —सदाचार के ताखे पर है।
बाजीगर—प्रजातन्त्र की प्रजा ?
जमूरा —चल रही फाके पर है।

X X X

जमूरा —बस करो, चाचे !
होकर तुम्हारी इसी साजिश का शिकार
संवेदन शून्य हो गया है आदमी
कड़ाहियों में खौलते शिशुमुण्ड
दहशत पैदा नहीं करते/न ही आक्रोश
आदमी कितना बेबस है, अकल !

X X X

जमूरा —आपका अंगूठा तो गिरवी है दिल्ली में
शहर-गाँव-जंगल में भील बनी जिन्दगी
और
खुदगर्जी, इन्तकाम, गोली, गाली, गुरबत
अखबारी शक्ल न्यूजरील बनी जिन्दगी"

X X X

रमेश नीलकमल की शीघ्र प्रकाश्य कविता-पुस्तक "अपने ही खिलाफ" में संकलित इनकी कुछ प्रमुख रचनाएं हैं—"हमारे गाँव का प्राइमरी स्कूल, अश्विनी पाल, काले सूरज के खिलाफ, मुझ पर लिखो न कोई कविता, सुबह होने से पहले आदि।

"रमेश नीलकमल जी का साहित्य के क्षेत्र में बहुआयामी व्यक्तित्व है। ये जिस तेजी से लेखन, सम्पादन और प्रकाशन का कार्य कर रहे हैं और हिन्दी-साहित्य की श्रीवृद्धि कर रहे हैं, आने वाला समय इनको जल्द ही श्रेष्ठ साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित कर देगा।" इसी बहुआयामी व्यक्तित्व के कृतित्व को आंकने-परखने के लिए बाबू वीर कुँवर सिंह, विश्व-विद्यालय के हिन्दी विभाग के यूनिवर्सिटी प्रोफेसर डॉ० दीनानाथ सिंह, एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट् के निर्देशकत्व में इन पंक्तियों के लेखक को शोध-प्रबंध प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

सन्दर्भ-स्रोत :

1. मानसी (दिल्ली), वर्ष 1 अंक 3, मार्च, 1991
2. कथा-बिम्ब (बम्बई) जनवरी-जून, 1991
3. पाटलिपुत्र टाइम्स (पटना), 20-10-85
4. प्रकर (दिल्ली), वर्ष 21 अंक 7, जुलाई, 1991
5.6. आजकल (दिल्ली), फरवरी, 1988
7. नवभारत टाइम्स (पटना), 12 जून, 1988
8. प्रकर (दिल्ली), वर्ष 21 अंक 9, सितम्बर, 1989
9. बोल जमूरे पृ० 16 (डॉ० खगेन्द्र ठाकुर की भूमिका)
10. बोल जमूरे पृ० 10-11-12 (प्रो० रामनाथ मिलिन्द की भूमिका)
11. मुक्त कथन (बेगूसराय) 18 जनवरी, 1992 (उमा शंकर निशेष के लेख "मील के पत्थर" से)

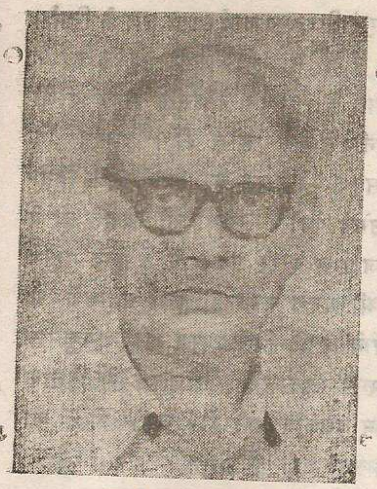

दिवंगत राजभाषा प्रहरी

ब्रजमोहन प्रसाद

भूतपूर्व कार्यालय अवीक्षक प्रथम कोटि केन्द्रीय अभिलेख अनुभाग

को

श्रद्धांजलि

□ जितेन्द्र झा "पंकज"
वरि० ले० परीक्षक

यात्रा त्वेषा यद् विमुच्येह वाष्पं
प्राप्तानृण्या यातिबुद्धिः प्रसादम् ।

यह तो संसार का व्यवहार है कि रोकर, आँसू बहाकर मनुष्य ऋण से उऋण हो जाता है । दुःख कम हो जाने से मन निर्मल हो जाता है ।

कुर्मी टोला, महाराज गंज, गुलजार बाग, पटना में सन् 1927 के नवम्बर महीने की 17 तारीख को प्रादुर्भूत ब्रजमोहन प्रसाद को भला कौन साहित्य-प्रेमी नहीं जानता है । उनके पिता स्व० मोती लाल जी थे । ब्रजमोहन बाबू अपने संक्षिप्त नाम बी० एम० पी० से जाने जाते थे । इन्होंने 11-7-1947 में रेलसेवा में योगदान किया । जमालपुर कारखाने के संयुक्त भवन के केन्द्रीय अभिलेख अनुभाग के पूर्व से खाद्यान्न भंडार में काम करते थे । इन्होंने 1948 ई० में हिन्दी-साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की विशारद परीक्षा पास की । कार्यालयी कार्य के अतिरिक्त ये मुंगेर के 'सरस्वती पुस्तकालय' से निकलने वाली एक हस्तलिखित मासिक पत्रिका 'शंखनाद' के कुशल लिपिकार थे ।

सरल मन, सुन्दर तन, सादा वेश किञ्चित केश उन्नत भाल मन्थर चाल आदि उनके स्तुत्य एवं स्मार्य वैशिष्ट्य थे । मृदुल स्वभाव परमसहिष्णु सर्वानुरागी प्रसाद बाबू अपनी विनम्रता एवं सर्वसुलभता के कारण बहुत लोकप्रिय थे । किसी पाण्डुलिपि को वे अपनी विशिष्ट अदा के साथ लिपिबद्ध कर देते थे । ये कार्यालय की संचिकाओं के मुखपृष्ठ पर अपने मुक्ताक्षरों का कमाल दिखाते थे । प्रसाद बाबू ने जगजीवन श्रमिक महाविद्यालय जमालपुर में नियमित छात्र बनकर स्नातकीय परीक्षा पास की । प्रधान हिन्दी में इन्हें विशिष्टता मिली थी ।

समयान्तर में ब्रजमोहन प्रसाद ने साहित्य के शिक्षक के रूप में ख्याति अर्जित की । वैसे तो आप हिन्दी के विद्वान् थे, फिर भी अंग्रेजी साहित्य में भी इनकी पैठ अच्छी थी । आई० ए० एवं बी० ए० की छात्राओं को आप हिन्दी और अंग्रेजी पढ़ाते थे । जमालपुर कारखाने में प्रसाद बाबू का आशय साहित्यिक प्रयास यहाँ के राजभाषा प्रेमियों के लिए बहुत ही प्रेरक रहा । राजभाषा अनुभाग हो या भण्डार कार्यालय का राजभाषा अनुभाग, वहाँ इन्होंने तन-मन-धन से हिन्दी की सेवा की । पूर्व रेल उपनिवेश स्थित एम० पी० स्कूल के भवन में चलने वाले सन्ध्या महिला शिक्षण केन्द्र में आपने अनवरत 15-20 वर्षों तक राष्ट्रभाषा का अध्यापन किया । अपनी शिष्याओं की उत्तर पुस्तिकाओं में आप मात्र शुद्धियों को ही नहीं दर्शाते थे, अपितु सुधार के अनमोल अनुदेश देते हुए हिन्दी व्याकरण के नियमों का विश्लेषण कर दिखाते थे । छठ से वसन्त पंचमी, होली, पौष संक्रान्ति, चौठचन्द्र और दुर्गा पूजा के प्रसाद वितरक प्रसाद बाबू अपनी संचिकाओं में यथास्थान हिन्दी में टिप्पण एवं प्रारूप

लिखते थे। अपने सहकर्मियों को भी ये हिन्दी में काम करने को प्रेरित करते थे। राजभाषा अनुभाग से भिन्न अनुभाग में काम करने के बावजूद भी प्रसाद बाबू क्षेत्रीय या अखिल भारतीय हिन्दी सम्मेलनों, सप्ताहों तथा अन्य राजभाषा समारोहों में अपना पैसा खर्च कर भाग लेते थे। समारोहों में ये वहाँ के कार्य-कलापों का संग्रहण कर एक आकर्षक साहित्य सृजन करते थे। इनके अनेक साहित्य सार संकलन आज भी राजभाषा अनुभाग एवं भण्डार अनुभाग के हिन्दी पुस्तकालय में अक्षय निधि के रूप में सुरक्षित हैं।

द्वितीय श्रेणी लिपिक में नियुक्त हो कार्यालय अधीक्षक प्रथम कोटि के पद पर इन्होंने अपनी कर्मठता का परिचय दिया। प्रधान लिपिक से 1-6-83 को आपकी प्रोन्नति कार्यालय अधीक्षक द्वितीय कोटि में हुई। रेल सेवा के अन्तिम वर्ष 1985 के मार्च महीने में एक तारीख से आपने जमालपुर कारखाने के प्रशासनिक भवन के हृदय केन्द्रीय अनुभाग में कार्यालय अधीक्षक प्रथम कोटि के पद को अलंकृत किया। इसी पद से 38 वर्ष 4 महीने 20 दिन की अर्हक सेवा के बाद 30-12-1985 को ब्रजमोहन प्रसाद महोदय सेवा निवृत्त हुए। सेवा निवृत्ति के बाद भी आप हिन्दी की सेवा एवं अध्ययन अध्यापन में लगे रहे।

वृद्धावस्था एवं निरन्तर कार्यरतता वश ये निर्मम पक्षाघात की चपेट में आ गए। कीमती चिकित्सा के बावजूद भी पक्षाघात के दुश्चक्र ने इनसे सहज वाणी एवं वाणी निनादनी लेखनी छीन ली। शारदा के शिक्षास्नात इस सपूत को देखने के लिए इनके हितैषियों की सैलाब उमड़ पड़ी। लोगों को देखते ही ये अस्फुट स्वरों में जार-जार रो पड़ते थे। कुछ महीने अपने ज्येष्ठ पुत्र श्री अरुण कुमार, लेखा सहायक के साथ रहने के बाद ये अपने द्वितीय पुत्र श्री रामकुमार के साथ जमशेदपुर में रहने लगे। कालचक्र से दिनांक 21-12-1994 दिन बुधबार को बी० एम० पी० का देहान्त हो गया।

प्रभु से मेरी प्रार्थना है कि इस महान् साहित्य-सेवी, लोकोपकारी, सहृदयी, महापुरुष की आत्मा को शान्ति प्रदान करें एवं इनके परिवार के सदस्यों को इस असह्य दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करें। दिवंगत प्रसाद की हिन्दी सेवा का अनुकरण करना ही उनके प्रति वास्तविक श्रद्धाञ्जलि होगी।

"जातस्यहि ध्रुवो मृत्युः, ध्रुवं जन्म मृतस्य च"।

इत्यलम्

दौलत की रंगरलियाँ इस जिन्दगी की शाख पर शबनम के मोती हैं। इस ओस चाटने से कभी जीवन की प्यास नहीं मिट सकती। यह विषभरी मिठाई जबान पर लज्जत तो देगी, मगर सेहत नहीं।

—राधिका रमण

रेणु जी की जन्म तिथि 4 मार्च के अवसर पर

रेणु जी की मधुर यादें–

□ उमा शंकर सिंहोप
प्रधान लिपिक (टिकट)
बरियारपुर

रह-रहकर मन में विचारों की बिजली कौंध जाती है। मन शरीर के पिंजरे से निकलकर एक आजाद पक्षी की तरह उड़ जाना चाहता है···उड़कर उस मिट्टी को, उस धरती को जहाँ संगीत की दुनिया है, मन की मिठास है, शुद्ध आत्मा की पुकार है, झुक-कर चूमने को मन हो जाता है।

तो रे मन, चल उस गाँव में···जहाँ रेणु का निवास था। उस गाँव की मिट्टी से, धरती से, खेत की पगडंडियों से पूछ कि कहाँ चले गये वो इस गाँव वालों को छोड़कर, उससे रुठकर। अभी भी उनके हाथों की सुगन्ध एक अमर स्मृति बनकर यत्र-तत्र बिखरी पड़ी है, जिन हाथों ने कभी आम की अमराइयों में जाकर कच्चे-पक्के आमों को तोड़ा था, धान की बालियों को देखकर स्वयं भी झूम उठा था, नदियों की कल-कल ध्वनि को सुनकर जिसका मन संगीत की स्वर लहरियों में खो गया था। इस मिट्टी को छूकर उसकी गंध को महसूस किया था। उसने क्या देखा···इस गाँव में, यहाँ के लोगों में कि उसने तुरत जादूभरी कलम लेकर हीरामन का, हीराबाई का, बावनदास का चित्रण कर इसे साहित्य में अमर कर दिया। अभी भी वहाँ रेणु की कल्पनाओं का यथार्थ-लोक यत्र-तत्र बिखरा पड़ा है। मैं उस मिट्टी को चूमना चाहता हूँ, उसे प्रणाम कर अपनी श्रद्धा निवेदित करना चाहता हूँ।

धन्य है उस पूर्णिया के गाँव "औराही हींगना" की मिट्टी। जहाँ रेणु ने 4 मार्च, 1921 को जन्म लिया। उस मिट्टी में कौन-सी विशेषता थी, कौन-सी महक थी कि वे अन्त-अन्त तक उसके ही होकर रहे। वे जहाँ कहीं भी गये और जिस भी परिस्थिति में रहे इस मिट्टी के प्रति उनकी ललक और आसक्ति वैसी ही बनी रही। सारी जिन्दगी खेतों, खलिहानों, नदी, नालों, खेत की पगडंडियों, आम की अमराइयों, गाँव की नौटंकियों, गाँव के अनपढ़ लोगों के बीच बिताया। इन्हीं लोगों ने इनके लिए मानसिक खुराक जुटाई। इनको साहित्य, संगीत और नाटक से जुड़ना सिखाया और इन्हें लिखने की प्रेरणा दी। अभी तक अधिकांश लेखक शहरों और कस्बों से जुड़े रहे हैं। गाँव से, देहातों से, वहाँ के अपढ़ लोगों से जिनकी आत्मा गंगा जल की तरह पवित्र है, उनकी ओर किसी ने भी आजकल झाँकने का सार्थक एवं रचनात्मक प्रयास नहीं किया, किन्तु रेणु जी ने अपने आपको गाँवों, उसकी समस्याओं, उसकी असंगतियों, विसंगतियों से, रूढ़ियों-कुप्रथाओं से, लोक गीतों और लोक गाथाओं और सबसे बढ़कर लोक परम्पराओं से निरन्तर जोड़े रखा। उनके पूर्व प्रेमचन्द, शिवजी तथा नागार्जुन ने इसे खूब नजदीक से देखा था। शायद इसीलिए ये आज हिन्दी के अमर शिल्पी माने जाते हैं। रेणु जी जहाँ भी जाते थे सिर्फ अपने शरीर को ही ले जाते थे। उनकी आत्मा गाँवों में ही रहती थी। उनको अपने गाँव से कितना प्रेम था, यह उनकी कृतियों से, उनके आचार विचार से, उनके रहन-सहन से स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

साहित्यकार तो बहुत होते हैं, पर एक ऐसा साहित्यकार जो गाँवों में रहकर गाँव की मिट्टी से जुड़कर वहाँ के जन-जीवन में रच-बसकर, गरीबों, बेसहारों, निस्सहायों, अनपढ़ों, किसानों की जिन्दगी में झाँककर उसकी जिन्दगी को अपनी जिन्दगी समझे, उसकी आंतरिक पीड़ा को अपनी पीड़ा समझे। उसके सुख-दुःख में सहभागी बने। ऐसा व्यक्ति तो युगों के बाद जन्म लेता है। यह व्यक्ति तो कोई संत, साहित्यकार

या मसीहा ही हो सकता है—तो सही अर्थों में रेणु जी एक साहित्यिक संत थे। एक मसीहा थे। युग की पीड़ित मानवता को जो वाणी दे, उसे मुखर करे, वही तो सच्चा साहित्यकार है।

अपनी तपस्या से, अपनी साधना से जब साहित्यकार महल खड़ा कर देता है तो लोग सोचने लगते हैं—यह तो कोई मसीहा है। हमने तो इसे एक साधारण मनुष्य समझा था। रेणु जी इसी कोटि के साहित्यकार थे। कलम उनके हाथों में आकर उनकी अन्तरात्मा को छूकर अपने को धन्य समझती थी। वह साधारण कलम भी हीरे की कलम बन जाती थी और उससे जो कुछ भी निकलता था वह शाश्वत, चिरंतन साहित्य बन जाता था।

सोना को तो सभी सोना कहते हैं—पर लोहा को जो सोना बना दे, उसे "पारसमणि" कहते हैं, तो रेणु साहित्य के "पारसमणि" थे। जिस भी व्यक्ति के चरित्र को उन्होंने छुआ उसे अमर कर दिया, उसे लोहा से सोना बना दिया।

आजादी के बाद जो कथाकार हिन्दी जगत में आये, उन्होंने कथा के लिए अपने पात्रों का चुनाव आदर्श और कला की भूमि से परे हटकर उन चरित्रों को टटोला, जिनके अन्तर में कथा कहने की, कथा गढ़ने की अपूर्व क्षमता थी।

भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। भारत गाँवों का देश है। इसे रेणु जी अच्छी तरह जानते थे। वह "औराही हिंगना" का रेणु, मैला आँचल का बावनदास, तीसरी कसम का टप्पर गाड़ीवाला हीरामन, गुलाब बाग मेला में नाचने वाली हीराबाई रेणु के निकट रहने वाला जनकदास मिरदंगिया, कुसुमलाल आँचलिक शब्दों का शब्दकोश कौन पढ़ेगा ? कौन इन चरित्रों को उजागर करेगा अपने साहित्य में ? कहाँ है ऐसा साहित्यकार जो गाँवों, शहरों, कस्बों की रंगीनी से अलग हटकर गाँवों में रहकर अपना साथी, अपना मीता ढूँढ़ेगा ! उसके साथ बैठकर गाना गायेगा, खेतों-खलिहानों में संगीत पैदा करेगा, गाँवों की अमराइयों में उसकी मिठास को मन मिजाज में भरकर कला की सुगंधि बिखेरेगा और अपनी कलम से उन्हें अमर कर देगा।

रेणु जी मात्र साहित्यकार ही नहीं थे, बल्कि वे राष्ट्र के, देश के गौरव-पुरुष थे। इस गौरव को बढ़ाने के लिए उन्होंने अपने जीवन की आहूति भी दे दी और साहित्य-रचना से लेकर क्रान्ति तक का रास्ता तय किया।

28 दिसम्बर, 1965 का दिन मेरे लिए जीवन का एक अविस्मरणीय ऐतिहासिक दिन है। मैं पटना गया था। उस समय रेणु जी की ख्याति देश के कोने-कोने में फैल चुकी थी। रेणु जी से मिलने की इच्छा थी और इसी इच्छाशक्ति के वशीभूत होकर पटना गया तो अपने साहित्यकार मित्र श्री लखन अकेला के यहाँ ठहरा। लखन जी से मैंने रेणु जी से मिलने की बात कही। लखन जी भी तुरन्त राजी हो गये और हम दोनों उनसे मिलने के लिए चल पड़े। 4 बजे संध्या के बाद राजेन्द्र नगर ब्लॉक नं०-2 कमरा नं०-30 तीसरी मंजिल पर दो कमरा का फ्लैट जहाँ कि रेणु जी रहते थे। "तीसरी कसम" फिल्म की पटकथा लिखने में उन दिनों काफी व्यस्त थे। उनका एक पैर पटना और दूसरा पैर बम्बई में रहता था। काफी व्यस्त थे इस फिल्म को लेकर। उसकी जिन्दगी का काफी हिस्सा भागदौड़ में ही बीतता था।

संयोग अच्छा था कि रविवार का दिन था। अकेला जी ने उनके फ्लैट का अलार्म बजाया। आलार्म बजते ही एक वयस्क महिला सौम्य चेहरा लिए बाहर आई और पूछने लगी—किसको खोजते हैं ?···उनकी बोली से उनके बंगाली होने का आभास होता था। अकेला जी ने धीरे से कहा—यही लतिका जी हैं—"रेणु जी की दूसरी पत्नी। इतना सुनते ही मेरे दोनों हाथ अपने आप अभिवादन के लिए जुड़ गये। वह धीरे से मुस्कुराकर अन्दर चली गई। इसके बाद ही एक व्यक्ति कंधों पर बालों का गुच्छा छिटराये, कुरता और पैजामा पहने अपनी गोद में एक छोटा-सा सफेद कुत्ता लिए जो देखने में काफी खूबसूरत था (शायद नेपाली कुत्ता था) बाहर आए। रेणु जी ने अकेला जी को पहचान लिया और हमदोनों व्यक्तियों को अन्दर लिवा ले

गये। मैंने देखा कि रेणु जी के सुन्दर और घनेबाल उनके कंधों पर लहरा रहे थे और दो-चार लटें उनके मुखमंडल को चूम रही थी। मानों शरद ऋतु के हलके बादलों के छोटे टुकड़े हों और उनके मुखचन्द्र से अठ-खेलियाँ कर रहे हों। कहने लगे—आज रविवार है न! इसलिए आज फुरसत में रहने के कारण अपने बालों को साफ कर सुखा रहा था। इसे सूखने में काफी समय लगता है, इसलिए खाना खाकर लेटकर पढ़ रहा था।

अकेला जी से उन्होंने मेरे बारे में पूछा। उन्होंने मेरा परिचय देते हुए बताया कि ये जमालपुर से आपसे मिलने के लिए आये हुए हैं। इनका नाम उमा शंकर निशेष है। साहित्य में अभिरुचि है। इतना सुनने के बाद धीरे-धीरे मुस्कुराने लगे। मेरी तरफ मुखातिब होकर कहने लगे—बम्बई से लौटने के बाद बुरी तरह थक गया हूँ। फिल्म को पूरा करने के लिए काफी दौड़-धूप करनी पड़ती है। दो और फिल्मों का भी कॉंट्रेक्ट हो गया है, इसलिए व्यस्तता काफी बढ़ गयी है। स्क्रिप्ट लिखते में व्यस्त हूँ। बम्बई में रहकर कुछ भी लिखना मेरे लिए कठिन है। लिखने के लिए शांत और एकांत वातावरण चाहिए और यह वातावरण तो अपने गाँवों या पटना में ही मिल सकता है। यह सुनकर काफी प्रसन्नता हुई कि 'मैला आँचल' का फिल्मीकरण हो रहा है। रेणु जी ने बातचीत के दौरान कॉफी और बिस्किट मंगवा ली। अभी भी याद है रेणु जी के हाथों की दी हुई कॉफी और बिस्किट। उस बिस्किट और कॉफी में कितनी मिठास थी।···कितना अपनापन था। सोचता हूँ तो मेरा मन अंधी गलियों में खो जाता है, जहाँ अंधेरे के सिवा कुछ भी नहीं रहता। कुछ घंटों की स्मृतियाँ आज भी ताजी होकर मन-मस्तिष्क को भाव-विभोर कर जाती है और रह-रह कर उनका मुस्कुराता हुआ चेहरा सामने आ जाता है, जिससे मन एक पीड़ा का अनुभव करने लगता है। यद्यपि यह मेरी रेणु जी से पहली और अन्तिम मुलाकात थी, तथापि इस मुलाकात में भी उन्होंने मुझे अपना बना लिया था और मेरा हृदय उनके प्रति श्रद्धा से भर उठा था। वे कितने महान् थे, यह मैंने उनसे मिलने के बाद महसूस किया। "मैला आँचल" के प्रकाशित होते ही उनकी ख्याति भारत के कोने-कोने में फैल चुकी थी और एक सशक्त उपन्यासकार के रूप में रेणु जी स्वीकृत और स्थापित हो चुके थे। आगे चलकर "तीसरी कसम" फिल्म को लेकर भी रेणु जी को पर्याप्त ख्याति मिली। फिर भी फुर्सत के क्षणों में उनसे मिलने के बाद यह आभास नहीं होता था कि यही "फणीश्वर नाथ रेणु" हैं।

इस संक्षिप्त किन्तु आत्मीय मुलाकात के बाद मैं उनको प्रणाम कर वहाँ से चल पड़ा। आज भी यह मुलाकात मेरे जीवन की एक अमूल्य धरोहर है।

रेणु जी त्याग और तपस्या की प्रतिमूर्त्ति थे। जिन्दगी भर गाँवों में रहकर उन्होंने साधना की। उनका जीवन सही अर्थों में साधना का जीवन था।

ऐसा साहित्यकार तो कभी-कभी ही आविभूत होता है, जो अपने व्यक्तित्व और कृतित्व की स्थायी छाप छोड़ जाता है। रेणु जी ने अपने युग को न केवल अभिव्यक्ति दी, बल्कि उसको व्यक्तित्व भी दिया। वे तन से, मन से एक संवेदनशील साहित्यकार थे। यद्यपि उन्होंने कविता लिखने में विशेष रुचि नहीं दिखाई, किन्तु वे एक सशक्त कवि भी थे, ऐसा सभी लोग मानते हैं। उनका मन कवियों का मन था। उनकी छवि, उनकी भाव-भंगिमा, उनकी वाणी में कविता रची-बसी थी। यही कारण है कि "मैला आँचल" जैसा वृहद् आँचलिक कथा काव्यात्मक उपन्यास हिन्दी जगत को दे सके, जिसमें जन-जीवन का सम्यक् चित्रण है। उनके गुजर जाने से एक जीवन-पद्धति का अन्त हो गया।

उन्होंने मात्र छप्पन वर्ष की आयु में ही सामाजिक, राजनैतिक और भाषायी पक्षों पर अनेक रचनात्मक लड़ाइयाँ लड़ीं। साथ ही उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध जमकर संघर्ष किया। उनके साहित्य में कोमल-कठोर, दोनों का समन्वय है। उनका संस्कार और विद्रोह दोनों एक साथ आज की युवापीढ़ी में देखा जा सकता है।

रेणु जी हिन्दी के साथ ही बांग्ला के भी विद्वान् थे। शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ उन्होंने न सिर्फ

अपनी रचनाओं में, बल्कि व्यावहारिक जीवन में भी जमकर संघर्ष किया और भावी पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त किया। राजनीति को शुद्ध कर उसमें भारतीय तत्त्वों का समावेश चाहते थे, इसीलिए उन्होंने राजनीति को दल-विहीन बनाने की भरसक कोशिश भी की। उनका दृढ़ विश्वास था कि मनुष्य में स्वतन्त्र रहने और अपना बुरा-भला सोचने-समझने की मौलिक सूझ-बूझ होती है। वे मनुष्य को मनुष्य समझकर मूल्यांकन करना चाहते थे।

रेणु जी में बचपन से ही क्रांतिकारी प्रवृत्ति थी और वे अन्याय तथा दमन का विरोध हर स्तर पर किया करते थे। प्रजातन्त्र की बहाली के लिए सन् 1950 ई० में नेपाल में राणा शासन को अपदस्थ करने के लिए उन्होंने सशस्त्र क्रांति में सक्रिय भाग लिया था और मुक्ति सेना की फौजीवर्दी में उन्होंने बन्दूकें भी उठायी थी।

अपने देश में आपातकाल के दौरान भूमिगत रहकर सरकार के खिलाफ उन्होंने न सिर्फ अपनी आवाज बुलन्द की थी, बल्कि गिरफ्तारी के पूर्व पटना सम्मेलन में जे० पी० आंदोलन का नेतृत्व भी किया था और साहित्यकारों, कवियों, पत्रकारों, चित्रकारों, नाट्यकर्मियों की टोली लेकर इस तानाशाही के खिलाफ अपनी आवाज बुलन्द की थी।

रेणु जी काल से भी टकरा जाने वाले व्यक्ति थे। गम्भीर बीमारी की हालत में भी उनमें नवयुवकों से भी ज्यादा स्फूर्ति थी। इस क्रम में उन्होंने पुलिस की लाठियाँ खाई थीं और जेल के सलाखों में रहकर तानाशाही सरकार के खिलाफ यातना भी सही थी।

12 फरवरी को उन्होंने लोकतन्त्र की रक्षा के लिए "लोकतन्त्र रक्षा साहित्य-मंच" की स्थापना की थी। 20 मार्च को चुनाव परिणाम निकलने के बाद वे काफी प्रसन्न थे। लेकिन उनकी यह प्रसन्नता कुछ ही दिनों की थी — उनको तो अपना काम करके इस दुनिया से विदा होना था। उन्होंने पद और पदवी को कभी महत्व नहीं दिया। वे अपने व्यक्तिगत राजनीति और राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा के लिए कोई भी कीमत चुका सकते थे। सम्भवत: वे हिन्दी के पहले साहित्यकार थे, जिन्होंने आपातकाल में जनतन्त्र का गला घोंटे जाने के विरोध में अपनी 'पद्मश्री' की उपाधि विरोध-स्वरूप लौटा दी थी और उनलोगों के सामने एक चुनौती भरा आदर्श उपस्थित किया था जो पैसा, पद, और पदवी के लिए कुछ भी करने और सहने के लिए तैयार रहते हैं।

28 मार्च को पटना में डॉ० यू० एन० शाही द्वारा पेट की एक गांठ (ट्यूमर) निकालने के लिए किए गए ऑपरेशन के बाद उन्हें होश नहीं आया था और सारी कोशिशों के बावजूद सोमवार की रात मौत की भयानक रात में बदल गई। 11 अप्रैल, 1977 को पटना के राजेन्द्र सर्जिकल वार्ड में "सोने के पिंजरे वाला" हीरामन सदा के लिए पिंजरा छोड़कर उड़ गया।

"तीसरी कसम" का प्रसिद्ध गीत "चलत मुसाफिर मोह लियो रे पिंजरे वाली मुनिया" की तरह ही रेणु जी का स्वभाव और व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षक और मोहक था। राह चलतों को भी मोह लेने की उनमें एक अपूर्व क्षमता थी।

रेणु जी के जाने के बाद भी ऐसा लगता है कि 'रेणु' अभी मरे नहीं हैं, क्योंकि उन्हें बहुत सारे कार्य करने थे। वे कर्म को ही अपना जीवन समझते थे। वे बिना सारे काम निबटाए चले जाएँगे ऐसा मानने को मन तैयार नहीं होता। किन्तु, सच्चाई बड़ी क्रूर होती है। हम रेणु को चाहे जितना भी जीवित माने सच्चाई यही है कि वे हमें ही नहीं पूरे हिन्दी-साहित्य जगत को रोता-बिलखता छोड़कर चले गए हैं, हमेशा-हमेशा के लिए। रह गया है उनका साहित्य और अमर बन गई है अपनी मधुर स्मृतियाँ।

विद्यालय पुस्तकालय और पुस्तक-चयन

□ ललित कुमार पाण्डेय
एम० ए०, बी० लिब० एस-सी०, बी० एड
पुस्तकाध्यक्ष
पूर्व रेलवे इण्टर महाविद्यालय, जमालपुर

"एक विकसित और सफल पुस्तकालय को पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों, नक्शों, चित्रों, फिल्मों, संगीत, रेकार्ड आदि का संग्रह करना चाहिए और उनका उपयोग करने में पाठकों का मार्गदर्शन करना चाहिए।"

—यूनेस्को

अर्थात् किसी भी ग्रन्थालय का महत्त्व उसमें उपलब्ध एवं संग्रहीत पाठ्य सामग्री के आधार पर समझा जाता है न कि पुस्तकालय भवन की भव्यता एवं मोहकता, संगठन एवं प्रशासन या कानून एवं नियम से। मूल्यांकन का प्रमुख आधार पाठ्य-सामग्री ही है।

पुस्तकालय—पुस्तक और आलय दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है—पुस्तकों का घर।

शैक्षणिक संस्था के लिए तो पुस्तकालय उसकी आत्मा ही है और किसी भी आदर्श विद्यालय पुस्तकालय के लिए "उत्तम पुस्तक चयन पद्धति" अत्यावश्यक है।

उद्देश्य : पुस्तक चयन एक महत्त्वपूर्ण कार्य है, इसके निम्नांकित उद्देश्य हैं—

(1) छात्रों के लिए विद्यालय में शैक्षणिक कार्यक्रम से सम्बन्धित तथा निजी अध्ययन, सूचना संग्रहण और मनोरंजनार्थ व्यापक रूप से पाठ्य-सामग्री की उपलब्धता।

(2) पाठ्य-सामग्री को छात्रों के पाठ्य-विषय, आयु-स्तर और अध्ययन रुचि के अनुसार संतुलित रखना।

(3) चयन प्रक्रिया के प्रत्येक स्तर पर पाठ्य-सामग्री की गुणवत्ता और भौतिक बनावट की स्तरीयता बनाये रखना।

पुस्तक-चयन कौन और कैसे करें ?

यह प्रश्न अत्यन्त विचारणीय है कि एक शैक्षणिक पुस्तकालय के पुस्तक-चयन का कार्य कौन और कैसे करें ? पुस्तक-चयन का गुरुतर दायित्व मात्र पुस्तकाध्यक्ष पर ही नहीं छोड़ा जा सकता, चाहे पुस्तकाध्यक्ष कितना ही शिक्षित, विद्वान और अनुभवी क्यों न हो ? सर्वोत्तम तरीका यह है कि उत्तम पुस्तक चयन के लिए संस्था के प्रधान की अध्यक्षता में एक समिति गठित कर दी जाय। इस समिति में पुस्तकाध्यक्ष, शिक्षक-छात्र-अभिभावक प्रतिनिधि शामिल हों। चयन समिति को और उपयोगी बनाने के लिए स्थानीय सार्वजनिक पुस्तकालय के पुस्तकालयी, विद्वतजन, समाज-सेवी लोगों को आमंत्रित सदस्य के रूप में रखा जा सकता है।

सिद्धांत : मेलविक डीवी के अनुसार—

पुस्तक-चयन का सिद्धांत कम-से-कम खर्च में अधिक-से-अधिक लोगों के लिए और अत्युत्तम पठन पर आधारित होना चाहिए।"

तत्त्व : पुस्तक-चयन के मुख्यतः तीन तत्त्व हमारे सामने आते हैं—पाठक, पाठ्य सामग्री और धन। पाठ्य सामग्री का संग्रह आधुनिक और अद्यतन रहना चाहिए। पुरानी पाठ्य सामग्री के स्थान पर नई पाठ्य सामग्री का उचित मात्रा में प्रतिस्थापन अनवरत एवं निर्बाध रूप से होते रहना चाहिए।

स्रोत : पुस्तक-चयन के निम्न स्रोत हैं—

(1) **सुझाव-पंजिका**—पुस्तकालय में एक सुझाव पंजिका होनी चाहिए, जिस पर पाठक और आगन्तुक समय-समय पर उपयोगी पुस्तकों के बारे में अपने सुझाव देते रहा करें। पाठकों को चाहिए कि पुस्तक के बारे में विस्तृत विवरण-पुस्तक एवं लेखक का नाम, प्रकाशन, संस्करण और मूल्यादि दें। पुस्तकाध्यक्ष को समय-समय पर इस बात की जाँच करते रहना चाहिए कि सुझाव-पंजिका में अंकित सुझावों का पाठ्य-सामग्री चयन में समुचित प्रयोग हो रहा है या नहीं।

(2) **विषय शिक्षकों की सूची**—पुस्तकालय में उपलब्ध अद्यतन पुस्तक, विषय एवं प्रकाशन सूचियाँ शिक्षकों को उपलब्ध कराते रहना चाहिए, जिससे शिक्षक अपने विषय से सम्बन्धित उत्कृष्ट साहित्य की सूची तथा सुझाव देकर पुस्तक-चयन में सक्रिय योगदान कर सकें।

(3) **स्थानीय सार्वजनिक पुस्तकालय**—विद्यालय पुस्तकालय के पुस्तकालयी को स्थानीय सार्वजनिक पुस्तकालय के पुस्तकाध्यक्ष से निरन्तर मार्ग-दर्शन और सहयोग प्राप्त करते रहना चाहिए तथा उस पुस्तकालय में आनेवाले उपयोगी पाठ्य-सामग्री का समावेश अपने पुस्तकालय में करते रहना चाहिए।

(4) **स्थानीय पुस्तक विक्रेता और प्रदर्शनियाँ**—पुस्तकाध्यक्ष स्थानीय पुस्तक-विक्रेताओं से सम्पर्क रखकर बिकने वाली उच्च स्तर की पुस्तकों की सूची बनाकर पुस्तक-चयन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

पुस्तकाध्यक्ष पुस्तक-चयन में प्रदर्शनियों से प्राप्त उत्तम पाठ्य-सामग्री की सूचियाँ प्राप्त कर सरल एवं छात्रोपयोगी पुस्तक-चयन में सहायता कर सकता है।

इसके अतिरिक्त पुस्तकाध्यक्ष पाठकों के माँग-पत्रक और पुस्तकालय के आगत-निर्गत अभिलेख से भी पुस्तक-चयन में सहायता ले सकता है।

निस्संदेह पुस्तक-चयन पुस्तकाध्यक्ष के लिए एक गम्भीर चुनौती और दुस्साध्य कार्य है, किन्तु इस प्रक्रिया में अपने विद्यालय के शिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्वानों के सुझाव एवं पुस्तक समीक्षाओं के सहयोग से विद्यालय पुस्तकालय को समृद्ध एवं उपयोगी बनाने की कल्पना को मूर्त्त रूप प्रदान कर सकता है।

●

गजल

□ सत्येन्द्र कुमार मिश्रा
बड़ा बाजार, मुंगेर

रोओ नहीं अब चुप रहो,
मुझसे कहा यह आपने।
बोलिए, क्यूँ आप ही अब,
इस तरह रोने लगे॥

क्या हुआ जो बह रहा है,
अश्क का दरिया यहाँ।
देखकर हालात को क्यूँ,
दर्दे दिल धोने लगे॥

गम की फैली आग में,
मैं रातभर जलता रहा।
दर्द की इस आग में क्यूँ,
आप भी जलने लगे॥

अश्क से भींगी हुई है,
बाखुदा मेरी गजल।
इस गजल को सुनके 'सत्यम्',
आप भी रोने लगे॥

समीक्ष्य पुस्तक—भाषा : विविध संदर्भ

(सम्पादक—डॉ० श्री भगवान सिंह)

□ गणेश प्रसाद महतो
पूर्व व्याख्याता, पू० रे०
इन्टर महाविद्यालय/जमालपुर

प्रस्तुत पुस्तक में कुल छह निबन्ध हैं, जिनके लेखकों ने विभिन्न दृष्टिकोणों से हिन्दी की समस्याओं पर विचार किया है। पुस्तक बिहार की सुप्रसिद्ध प्रकाशन-संस्था 'अनुपम प्रकाशन', पटना द्वारा प्रकाशित की गयी है। पुस्तक के प्रारम्भ में सम्पादक डॉ० श्री भगवान सिंह ने जो स्वयं भागलपुर विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के प्राध्यापक हैं, एक लम्बी-भूमिका लिखी है। उनकी स्थापना है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की सिफारिश भारतीय नवजागरण के जनक राजा राममोहन राय, आचार्य केशवचन्द्र सेन, 'वंदेमातरम्' राष्ट्रगीत के रचयिता बंकिमचन्द्र चटर्जी, योगिराज महर्षि अरविन्द, आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द, भारतीय स्वाधीनता-संग्राम के पुरोधा महात्मा गाँधी आदि महानुभाव थे, जिनकी मातृभाषा हिन्दी से भिन्न थी। स्वाधीनता-प्राप्ति के उपरान्त राष्ट्रभाषा के सवाल का राजनीतिकरण होने लगा। यही कारण है कि सभी प्रकार से सक्षम होने पर भी हिन्दी राष्ट्रभाषा, राजभाषा अथवा सम्पर्क भाषा के रूप में अब तक पूर्णरूपेण प्रतिष्ठित नहीं हो पायी है।

पुस्तक में संकलित प्रथम निबन्ध का शीर्षक है—राष्ट्रभाषा : हिन्दी या अंग्रेजी ?, जिसके लेखक राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी हैं। राष्ट्रभाषा के समस्त लक्षणों की जाँच-पड़ताल करने के बाद गाँधी जी जोर देकर कहते हैं कि राष्ट्रभाषा होने के लिए हिन्दी भाषा में सारे लक्षण मौजूद हैं। अंग्रेजी के प्रति गाँधीजी का दृष्टिकोण द्वेषपूर्ण नहीं है। दूसरे निबन्ध के लेखक हिन्दी के उपन्यास-सम्राट् मुंशी प्रेमचन्द हैं, जिन्होंने राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर विस्तारपूर्वक विचार करते हुए एक स्थल पर लिखा है कि स्वाधीनता के साथ यदि देश की भाषा का प्रचलन नहीं हुआ, तो यह स्वाधीनता वैसी ही हुई, जैसे—'जॉन' की जगह 'गोविन्द' का बैठना। तीसरे लेखक हैं—हिन्दी के वरेण्य समालोचक एवं इतिहास लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, जिन्होंने 'हिन्दी और हिन्दुस्तानी' शीर्षक से अपने सुचिन्तित निबन्ध में हिन्दी की शैली के सम्बन्ध में फैले भ्रमों को दूर करने का प्रयत्न किया है। चतुर्थ लेखक हैं—बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न विद्वान्, समीक्षक एवं भाषा-विज्ञान के शलाका-पुरुष डॉ० रामविलास शर्मा, जिन्होंने अपने निबन्ध 'भारत की भाषा-समस्या' में वृहत्तर भारत को दृष्टिगत रखते हुए भाषा की समस्या का समाधान खोजने का प्रयत्न किया है। पाँचवें लेखक हैं—समाजवाद के जनक, सजग प्रहरी, प्रखर नेता एवं सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ० राममनोहर लोहिया, जिन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी और देशी भाषायें, शीर्षक से अपने निबन्ध में यह स्थापित किया है कि स्वतन्त्र भारत के लिए हिन्दी का क्या और कितना महत्त्व है ! अन्तिम लेखक डॉ० राधाकृष्ण सहाय स्वयं विश्व-विद्यालय प्राध्यापक हैं, जिन्होंने अपने निबन्ध "भाषा का समाजशास्त्र" में सर्वथा नवीन एवं समाजशास्त्रीय दृष्टि से भाषा के महत्त्व को आंका है।

यद्यपि प्रस्तुत पुस्तक भागलपुर विश्वविद्यालय की बी० ए० कक्षा के हिन्दी के विद्यार्थियों के लिए निर्धारित है, तथापि राष्ट्रभाषा, राजभाषा एवं सम्पर्क भाषा के विविध आयामों पर जितनी सामग्री इसमें है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। अतः प्रत्येक राष्ट्रभाषा-प्रेमी द्वारा यह पठनीय है। यह प्रत्येक पुस्तकालय द्वारा संग्रहणीय भी है।

●

सुहाग के फूल में यदि प्रेम का पराग न रहा, तो वह खिला या कुम्हलाया, दोनों एक-सा है।

—राधिका रमण

इक्कीसवीं सदी

□ डॉ० सलीमराज पुष्करणा

ईमानदारी का संकल्प लेकर एक नवयुवक ने इंजीनियर का पदभार संभाला और अपने क्षेत्र में अपने कार्य एवं कुशल-व्यवहार से जहाँ वह धीरे-धीरे लोकप्रिय होने लगा, वहीं दूसरी ओर अपनी सच्चाई एवं परिश्रम के कारण ठेकेदारों की आँख की किरकिरी बनने लगा। जब ठेकेदारों को किसी प्रकार से अपनी दाल गलती दिखाई न दी, तो उन्होंने आज का सर्वपरिचित नुस्खा "रिश्वत" का सहारा लिया। परन्तु अपने को असफल पाकर उस क्षेत्र के सभी ठेकेदार खिसिया गये, और फिर एक दिन योजनाबद्ध ढंग से सभी एकजुट होकर दिन दहाड़े उसके कार्यालय में पहुँचे—

"स्सर ! आप बहुत ही ईमानदार हैं।"

"तो !"

"तो, ऐसा है, स्सर ! ईमानदारी अब अठारहवीं सदी की बात हो गयी है। यानी, आउट आफ डेट।"

"भाई ! आपलोग कहना क्या चाहते हैं ! मैं कुछ समझा नहीं।"

"बात बहुत सीधी-सी है—कि अब संसार इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर रहा है और हम चाहते हैं कि आप भी इक्कीसवीं सदी की ओर बढ़ें, और हमें भी बढ़ने दें।"

"मैंने कब रोका है, आपलोगों को। आप अपना काम करें और मुझे अपना..... ।"

"नहीं स्सर ! नहीं.....हमें अपना काम तो करते ही रहने दीजिए, किन्तु आप..... ! आप चुपचाप होने दीजिए वही, जो परम्परागत ढंग से होता चला जा रहा है।"

"मतलब !"

ठेकेदारों के अगुए ने नोटों का बंडल आगे बढ़ाते हुए कहा, "स्सर ! ये लीजिए इक्कीसवीं सदी में जाने का पासपोर्ट। वरना, (पिस्तौल की झलक दिखाते हुए) अब क्या कहूँ ? आप फैसला खुद ही कर लें। हमलोग (नमस्कार करते हुए) पुनः चार दिन बाद इसी जगह आपसे मिलकर साथ-साथ चलने का फैसला करेंगे। ठीक है न, स्सर ?"

उनके जाते ही नवयुवक इंजीनियर एकाएक अपनी कुर्सी से उठा और फिर धम्म से बैठ गया। फिर कुछ सोचकर चार दिन की छुट्टी लेकर अपने घर आ गया। घर आने पर उसने अपनी सारी आपबीती अपने अग्रज से कह सुनाई।

अग्रज ने कहा, "देखो ! जब देश में सभी बेईमान हो गये हैं तो तुम ईमानदार रहकर ही क्या कर लोगे।"

प्रत्युत्तर में इंजीनियर ने बहुत ही निराशाभाव से, किन्तु दृढ़ निश्चयी होते हुए कहा, "भईया ! मैं और तो कुछ नहीं कर सकता, किन्तु बेईमानी की इतनी लम्बी गिनती में, कम-से-कम एक अपनी गिनती तो नहीं जुड़ने दूँगा।"

●

यदि सेवक सुख चाहे, भिखारी मान चाहे, व्यसनी धन चाहे, व्यभिचारी शुभ गति चाहे, लोभी यश चाहे तो समझ लो कि ये लोग आकाश से दूध दुहना चाह रहे हैं।

—वाल्मीकि

बच्चों के कान का बहना

□ डा० आर० आर० सिंह
मण्डल चिकित्सा अधि०
पू० रे० मुख्य अस्पताल, जमालपुर

बच्चों के कान तथा नाक का बहना एक सामान्य बीमारी मानी जाती है, लेकिन वास्तव में नाक की तरह कान का बहना एक सामान्य बीमारी नहीं वरन् यह एक गम्भीर बीमारी है तथा इसके भयंकर दूर-गामी परिणाम हो सकते हैं। अभिभावक तभी अपने बच्चों को चिकित्सक के पास ले आते हैं जब बीमारी दीर्घकालिक हो गई होती है तथा शिशु के सुनने की क्षमता कम हो जाती है।

इस बीमारी के बारे में जानने के लिये हमें सबसे पहले मनुष्य के कान की बनावट के बारे में थोड़ा जानना होगा।

मनुष्य के कान तीन भागों में विभक्त रहते हैं, जिसे सामान्यतः कान कहते हैं, वह वास्तव में कान का बाहरी भाग है। कान के मध्य भाग तथा अन्दर वाले भाग खोपड़ी के अन्दर अवस्थित होते हैं।

कान का सम्बन्ध सुनने तथा वातावरण में शरीर के सन्तुलन को बनाए रखने से है।

बाहरी कान का मुख्य काम ध्वनि की तरंगों को अपनी तरफ निर्देशित करना तथा उसे मध्य कान की तरफ भेजना होता है। बाहरी कान मध्य कान से कान के पर्दे के द्वारा बँटा रहता है। जब ध्वनि की तरंगें कान के पर्दे पर पड़ती हैं तो वे उसमें कम्पन पैदा करती हैं तथा वही कम्पन मध्य कान द्वारा होता हुआ अन्दर वाले भाग को प्रेषित होता है तथा वहाँ से वह ध्वनि तरंग से मिला आवेग (नेरो इनपल्स) में बदल जाता है जो सुनने वाले शिए (ऑडिटोरि नर्व) के माध्यम से हमारे मस्तिष्क में जाता है। वहाँ उसका अनुवाद (डिकोडिंग) ध्वनि या वाणी में हो जाता है।

अतः हम देखते हैं कि कान के पर्दे का हमारे श्रवण तन्त्र में बहुत महत्व है।

यह कान का पर्दा मध्य कान की बीमारी के दौरान आंशिक रूप से/पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त हो जाता है, क्योंकि मध्य कान यूसरेसियन ट्यूब (Esutachian Tube) के द्वारा गले से जुड़ा हुआ होता है। अतः बीमारियाँ इसको आसानी से ग्रसित कर सकती हैं। बच्चों में, क्योंकि यूसरेसियन ट्यूब चौड़ा तथा छोटा होता है तथा समतल (तकरीबन कान के स्तर पर) होता है। अतः गले से बीमारी के कीटाणु आसानी से मध्य कान में चले जाते हैं, जबकि वयस्कों के कान में यह तिरछा होता है तथा गला काफी नीचे की तरफ होता है। अतः गले से संक्रमण उतनी आसानी से नहीं होता है।

अतः बच्चों को सुलाकर दूध पिलाने से उनके मध्य कान में बीमारी पहुँचने की सम्भावना ज्यादा होती हैं। अतः उन्हें हमेशा गोद में बैठाकर ही दूध पिलाना चाहिए।

दूसरे, बच्चे में उभरी श्वास तन्त्र की बीमारियाँ वयस्कों की अपेक्षा कुछ ज्यादा ही होती है जो कि उनकी कम प्रतिरोध क्षमता तथा कुपोषण के चलते होता है। अतः उसमें भी मध्य कान की बीमारियाँ ज्यादा होती हैं।

कभी-कभी कान में पुराना सुराख भी देखा गया है। उन सुराख के द्वारा भी बाहरी कान से बीमारियाँ आ सकती हैं जो अक्सर जल में तैरते समय या पानी में डुबकी लगाते समय होती है। एक बार जब मध्य कान बीमार हो जाता है तो शिशु के कान में दर्द महसूस होता है, वह बार-बार कान को पकड़ता है। यह दर्द मामूली दर्द से लेकर भयंकर दर्द तथा बुखार भी हो सकता है, अगर शिशु में प्रतिरोध क्षमता ज्यादा है तथा उसे समय पर दवा मिल जाती है तो बीमारी इसी अवस्था में समाप्त हो जाती है, लेकिन अगर ऐसा नहीं हुआ तो कान के अन्दर स्राव जमा होने लगता है तथा वह उतना ज्यादा हो जाता है कि उसके दबाव के चलते कान का पर्दा फट जाता है तथा शिशु को

अचानक आराम मिल जाता है। कान के अन्दर का स्राव बाहर निकल जाता है तथा कान सूख जाता है एवं उसमें सुराख अपने आप बन्द हो जाता है।

लेकिन अगर यही कम बार-बार चलता है तो कान के पर्दे में एक स्थायी सुराख बन जाता है जिसके द्वारा बाहरी कान से बीमारी या इनफेक्शन (Infection) बड़ी सरलता से मध्य कान में पहुँचकर उसको बार-बार ग्रसित कर देता है तथा यह कान हमेशा ही बहता रहता है। जब रोगियों की यह बीमारी पुरानी हो जाती है तो बीमारी का औषधियों द्वारा निदान नहीं हो पाता है, पर एक कठिन ऑपरेशन से ठीक किया जा सकता है एवं इस तरह के ऑपरेशन की सुविधा भारत के गिने-चुने अस्पतालों में ही सम्भव है। अगर बीमारी का ठीक से इलाज समय रहते न हुआ तो आगे चल कर यह बीमारी मस्तिष्क को भी प्रभावित करता है तथा जान का भी खतरा हो जाता है।

शैशव काल में अगर कान की बीमारी पर समय रहते ध्यान दिया जाय तो उससे होने वाली बीमारियों से काफी हदतक बचा जा सकता है। निम्नलिखित सुझावों द्वारा भी हमें काफी मदद मिल सकती है—

1. शिशुओं के कान में कभी भी किसी कड़ी तथा नुकीली चीज, जैसे—दियासलाई की तिल्ली, बुनाई का कांटा इत्यादि का कान साफ करने में व्यवहार में न लाएँ।
2. कान में तेल न डालें और अगर कान बार-बार बहता हो तो हरगिज तेल न डालें।
3. कान के पास तेज ध्वनि न ले जायें तथा कान के पास बच्चे को थप्पड़ से न मारें। इससे कान का पर्दा फट जाने की सम्भावना रहती है।
4. सर्दी होने पर कान को न फुलाएँ इससे मध्य कान को क्षति पहुँच सकती है।
5. कान में दर्द होने पर तुरन्त चिकित्सक को दिखाएँ तथा सर्दी-खाँसी होने पर उसका समुचित इलाज समय रहते करायें तथा इसे हल्के रूप में न लें।

कान बहने पर उचित समय इलाज हो जाता है तो सुनने की क्षमता पूरी तरह दुरुस्त हो जाती है।

ग़ज़ल

एस० आर० अहमद
(रेयाज गाजीपुरी)
पेन्टर-I सी० एस० आई०
सियालदह

मेरे दिल के यह दाग सारे हैं।
आस्मां पर जो चाँद तारे हैं॥

क्या निराले हैं खेल उल्फत के।
जीतने वाले बाजी हारे हैं॥

वही समझेंगे कुछ मुसीबत को।
जो मुसायब के दिन गुजारे हैं॥

जिनको गैरों के साथ देखा है।
कैसे कह दूँ कि वह हमारे हैं॥

हर तरह जो वतन के काम आये।
वह वतन ही में बेसहारे हैं॥

कल जहाँ शाखे आशियाना थी।
आज कुछ राख, कुछ शरारे हैं॥

नाखुदा थे जो मेरी किश्ती के।
वक्त पर मुझसे वह किनारे हैं॥

आस्मां जगमगाता है जिन से।
वह मेरी आहों के शरारे हैं॥

हूका आलम है चार सिम्त रेयाज।
गर्दिशे वक्त के नजारे हैं॥

यदि मैं पक्षी होता

□ समीरण दीर्घाङ्गी
प्रगति विभाग

जीवन के प्रत्येक क्षण को मूल्यवान समझकर कार्य में जुटे रहना जीवन को सार्थक बनाता है। आज हमारे देश की संकटपूर्ण स्थिति में जबकि जातिवाद, वर्णभेद और सामाजिक संकीर्णता हमारी मानवीय चेतना और धर्मनिरपेक्षता की राह में रोड़े बनकर खड़ी है और हमारा समाज इन बेड़ियों से मुक्त नहीं हो पा रहा है तब इन अक्षमता और धर्मान्धता को देखते हुए इस क्षणभंगुर जीवन में बड़े दुःख के साथ ऐसी इच्छा प्रकट करनी पड़ती है कि काश ! यदि मैं पक्षी होता।

देश की जनता की सेवा के लिए अभी तक मैं कुछ अच्छा काम नहीं कर सका। सुयोग भी नहीं मिला, इसलिए मेरा मन यही इच्छा व्यक्त करना चाहता है कि मैं नेता लोगों के माफिक भाषण नहीं देकर पक्षी की तरह मधुर संगीत सुनाते हुए जिस संगीत के मधुर स्वर में फूल खिलता है, बादल बरसता है, कुछ क्षण के लिए कुटिल मनुष्य हिंसा, द्वेष, बैर, संकीर्णता आदि भूल जाते हैं, इस मानव फूल को चैतन्य बनाना चाहता कि, हे मनुष्य, तुम ही तो स्रष्टा के वरिष्ठ राजकुमार हो, तुम्हीं स्नेह-सद्भाव का, सहयोग-सहकार का बढ़-चढ़कर उदाहरण रखकर परस्पर मिल-जुलकर रहने, खाने, खिलाने, प्रगति करने, ईर्ष्या-द्वेष न करने का आश्वासन देते हो। तुम केवल अपने बारे में, परिवार के बारे में सोचने तक सीमित न रहो, बल्कि देश के लिए, आनेवाले भविष्य के लिए भी कुछ सोचो।

सृष्टि के प्रारम्भ से ही मनुष्य नील गगन में उड़ान भरने की अभिलाषा व्यक्त करता आया है। मानव सदा सोचता है—"काश, मुझे भी उड़ने के लिए पंख होता तो अनन्त नीले आकाश के विस्तार को मापने के लिए चेष्टा करता। रात्रि का अवसान आते ही मैं जागता, मैं उस शान्त वेला में अपनी मधुर चहचहाहट से चारो दिशाओं को आन्दोलित कर देता। प्रातःकाल की शीतल मन्द और सुगन्धमयी हवा के झोंके मेरे मधुर गान को आलोड़ित-विलोड़ित करती, मेरे सुमधुर कंठों से निःसृत रागिनी में फूलों की पंखुड़ियाँ बिखर जातीं। मैं उनमें उमंगों और प्राणों का संचार करता। मेरे संगीत में आनन्द और उमंगों का जयगान होता।

यदि मैं पक्षी होता तो मनुष्य के हाथ का खिलौना नहीं बनता। मैं मनुष्य को उसकी क्षुद्रता से दूर कर देता। मैं प्रत्येक जीव को एकता का गाना सुनाता। मेरा मधुर गान प्रातःकालीन सूर्य की स्वर्णिम रश्मियों के झूले पर झूलता एवं सभी मानव तथा जीव सुधा सरिता में निमज्जित करते। सूर्य की पहली किरण के साथ उठकर जब किसान अपने कंधों पर हल रखकर अपने सखा बैलों को हाँकता हुआ खेतों की ओर जाता तब मैं मधुर संगीत में यही सन्देश देता कि हे मनुष्य ! वसुधा को कुटुम्ब मानते हुए समष्टि के हित की चिन्ता करो, मिल जुलकर रहो, सबके मन में देश की समृद्धि और आत्मिक प्रगति का दीप प्रज्वलित करो।

●

दूसरों के साथ खुलकर हँसे, पर दूसरों पर नहीं, पर यदि मजाक आप के प्रति हो, तो भीतर ही भीतर मुस्कराये।

आज थिरक उठी कविता पहाड़ पर

□ संजय प्रियदर्शी

कारखाने में शहर है या नहीं, यह राजकमल चौधरी का प्रतिपाद्य विषय हो सकता था, पर जिला मुख्यालय, मुंगेर के पास बसे जमालपुर को इस बात का गौरव है कि उसके शहर में कारखाने हैं; नहीं, उसके कारखाने में शहर है, एक जीता-जागता शहर, ताश के बावन पत्तों वाला शहर नहीं जो दिन में शहर होने का भ्रम दे और रात में एक गाँव में तब्दील हो जाए। दिल्ली के एक कवि कमलाकांत द्विवेदी के शब्दों में—"शुरू होता है/कारखाने का दिन/जैसे चिड़िया का/पर होता नहीं खत्म/जैसे चिड़िया का/रात में/खत्म होता है कारखाना का दिन" और "शुरू होती है/कारखाने की रात/जैसे चमगादड़ की पर होती नहीं खत्म / जैसे चमगादड़ की / खत्म होती है / दिन में।" ऐसी ही है व्यस्तता रेल-कारखाने के इस शहर जमालपुर की।

इन्हीं व्यस्तताओं के बीच जब पहली जनवरी का पदार्पण होता है, तो न केवल इस शहर के लोग, बल्कि मुंगेर-भागलपुर और इनसे जुड़े लोगों की भीड़ आ उमड़ती है जमालपुर के पूर्वांचल में फैली पहाड़ियों पर, पहाड़ियों के क्रोड़ स्थित गोल्फ मैदान में, जो तब लगता है, वनवासियों का शहर जैसा हो गया हो। इन्हीं के बीच रहते कवि रमेश नीलकमल और अशोक अश्क भला इन सबसे अछूते क्यों रहें ? वे भी साहित्य संगम तथा भोजपुरी साहित्य परिषद की ओर से "कविता पहाड़ पर" शीर्ष से कवि सम्मेलन का आयोजन करते हैं जिसमें भाग लेना स्थानीय एवं सुदूर के कवियों के लिए गौरव की बात होती है।

"कविता पहाड़ पर" का स्वरूप एक सर्वभाषा कवि सम्मेलन का होता है। हिन्दी, उर्दू, बंगला, पंजाबी, भोजपुरी, मगही और मैथिली कवियों के सामने की भीड़ बहुभाषियों की होती है जो काव्यानन्द की अनुभूति से सराबोर होते हैं।

इस नववर्ष पर "कविता पहाड़ पर" के आयोजन का उद्घाटन किया यांत्रिक अभियन्ता एवं डाटा प्रोसेसिंग मैनेजर श्री अली इमाम ने, अध्यक्षता की मगही कवि श्री परमेश्वर सिंह ने और संचालन किया भोजपुरी के उद्भट विद्वान कवि आचार्य गणेश दत्त किरण ने, जिन्होंने कवि सम्मेलन का प्रारम्भ ही किया अपनी गजल के एक शे'र से कि "बड़ा है इतना अपना मुल्क, लेकिन घर नहीं मिलता, छुपाएँ सर कहाँ जा-कर, कोई छप्पर नहीं मिलता", तो लगा कि कवि सम्मेलन को एक भाव मिल गया, वाणी मिल गयी।

राम बहादुर चौधरी 'चन्दन' के शीर्ष गीत "राग छेड़ा है किसने सितार पर, आज थिरक उठी कविता पहाड़ पर" ने श्रोताओं को भावालोड़ित कर दिया। फिर एक-एक कर लगभग पैंतालिस कवियों को सुनना श्रोताओं के लिए कष्टकर नहीं रहा। छन्दराज और अनिरुद्ध सिन्हा की गजलें, परमेश्वरी सिंह की मगही कविताएँ, रामजी पाण्डेय 'अकेला' और आचार्य किरण की भोजपुरी गजलें और कविताएँ, प्रतिमा वर्मा, कुंज भारती, शाह मोहम्मद सिद्दीकी, दुर्गा प्रसाद मुकुर, रामदेव भावुक, सत्येन्द्र कुमार मिश्र आदि की कविताओं को श्रोताओं ने पसन्द किया।

कविताएँ समय सापेक्ष होती हैं, तो कवियों में विसंगतियों के प्रति अपनी घुटन दर्द को विस्तार देने के लिए अपनी कविताओं को पढ़ना स्वाभाविक हो जाता है, राजेन्द्र कंचन ने जब कहा कि "विकास की योजनाएँ हो रहीं सिल, खजाने से निकले उनके लाखों के बिल, अधिकारियों का भर रहा रूमाल है, नया साल है", तब तालियाँ खूब बजीं। गणेश गलकर ने यह कहते हुए कि "हम अजीब हैं/हम अपना बचपन/रख रहें हैं गिरवी/ एक वक्त की रोटी के लिए/और अपना भविष्य लगा रहे हैं दाँव पर", जन-गण के भविष्य पर प्रश्न खड़ा कर दिया, तो 'संगीन के साये में जी रहे हैं लोग/रह-रह के अपना खून आज पी रहे हैं लोग/क्या खूब नशेमन में है बाज घुस गए। चुन-चुन के परिन्दे का खून पी रहे हैं लोग" कहकर चन्द्रशेखर झा 'इन्दु' ने आज के समय को परिभाषित कर दिया। तब

मिथिलेश मिलन का यह कहना कि "घुटनों में यह सिर कब तक छिपाएँगे/बेकसी अपनी किस-किस को सुनाएँगे" हमें यह सोचने को विवश करता है कि हम कितना बेबस, लाचार हो गये हैं। ऐसी बेबसी और लाचारी के माहौल में "एकता", ऐक्यभाव किस कदर जरूरी हो जाता है, इसका अहसास दिलाया सरयूदास "रश्मि" ने यह कहकर कि "पलट कर देखना चाहिए/एक-एक से बनता है कारवाँ/एक और एक बनते हैं दो/दो और एक के मेल से हो जाती है इक्कीस तोपों की सलामी।"

लेकिन आदमी मरा नहीं है, वह अब भी जिन्दा है, वह सोचता है—"मुफलिसी बेचारगी का हर तरफ मंजर हुआ (अशोक आलोक) तो क्या "आदमी" भी जर्जर हो जाय, वितृष्णा पाले और गंगा में डूब मरे। नहीं, वह फिर सोचता है—"नफरतों का बोझ लेकर किस तरह चल पाएगा एक गंगा प्यार की अब दिल में इठलाने दे यार। यूँ परेशां है विमल तू, सब्र कर कुछ और पल, इन्दु की कलियों को खिलकर फूल बन जाने दे, यार" (वैद्यनाथ विमल), तो लगता है, आदमी की आदमीयता मरी नहीं है, कुण्ठित नहीं हुई है। वह अब भी जिन्दा है ठीक अपनी भाव कविता की तरह जिसके बारे में अफवाह फैलाई गई है कि वह मर चुकी है। कविताएँ केवल शब्द नहीं होती, वे स्थितियाँ होती हैं जिनसे होकर आदमी गुजरता है और मानव मन की गुत्थियों से परित्राण पाता है। ऐसा कहते हुए कविश्रेष्ठ आचार्य किरण ने अशोक अश्क द्वारा सम्पादित भोजपुरी पत्रिका का विमोचन करतल ध्वनि के बीच किया।

अन्यान्य कवियों में प्रमुख थे दशरथ जी, राम नारायण स्वामी, विजेता, रामचन्द्र मयंक, विजयकुमार सिंह, डॉ योगेन्द्र नाथ राय, अनिल कुमार जायसवाल, दूधेश्वर मिश्र, भूषण कुमार, वीरेन्द्र कुमार सिन्हा, मनोज राही, के० प्रसाद अलबेला, प्रीतम अक्स, मनोज कुमार वर्मा, उमेश मोहन गुप्त और शिव लोचन मण्डल।

यह कहने में कोई एतराज नहीं कि सर्वश्री पी० एन० सिंह, मुनिलाल शर्मा, भोला भगत और कैण्टीन मैनेजर यदि इस आयोजन में अपनी-अपनी भूमिका नहीं निभाते, तो 'कविता पहाड़ पर' आयोजन शायद ही सफल हो पाता। ●

मुझे याद है

□ उमानाथ शर्मा
के० स० हि० परिषद,
नई दिल्ली

मुझे याद है वह आलम
जब तुम मेरे कंधों पर
सर रखकर रोई थी
मेरी भी पलकें भींग गई थीं
तुमसे जुदा होते वक्त
किन्तु पी गया था मैं
आँसुओं का सैलाब
और लुटा बैठा था
अपने प्यार का गुलशन
तुम्हारे प्यार की खुशबू।

आह बनकर रह गई की
मेरे आँसुओं की बून्दे फरियाद
आस की तमन्ना
जिन्दगी की राह बन गई थी
और तुमसे हुई जुदाई
मेरे जीवन का
उपहार।

देश के सम्मान का प्रतीक : हिन्दी

□ परमानन्द सिंह
उपमुख्य राजभाषा अधिकारी
पू० रे० कारखाना/जमालपुर

भारत एक अनूठा देश है। अनेकता के बीच एकता का स्वर इस पवित्र भूमि पर निनादित होना ही यहाँ की विशेषता है। हिन्दी जो इस देश की सामासिक संस्कृति की संवाहिका है, अनेकता के बीच एकता के साम्राज्य को स्थापित करने में अपना महत्त्व-पूर्ण योगदान देती आ रही है। इस देश के तीर्थ-यात्रियों की भाषा हिन्दी है। यही कारण है कि हिन्दी इस रूप में सैकड़ों वर्षों से इस देश के विभिन्न भाषा-भाषी लोगों के बीच एक मजबूत कड़ी के रूप में चली आ रही है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमने हिन्दी की इस सार्वदेशिकता और महत्ता को पहचाना और उसे उचित सम्मान देकर राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। हिन्दी ने जो यह स्थान प्राप्त किया, उसका आधार संविधान सभा या कोई सरकारी दरबार नहीं, बल्कि उसकी अपनी अन्तर्निहित शक्ति और सार्व-देशिकता ही था। हिन्दी के विकास में जितना योग-दान हिन्दी भाषी प्रदेशों का है,उससे कहीं अधिक योग-दान अहिन्दी भाषी प्रदेशों के अहिन्दी भाषा भाषियों का रहा है। हिन्दी का प्रसार करने वालों में सबसे मूर्धन्य स्थान उन संतों और महात्माओं का है जिन्होंने अपने विचार को सारे देश में फैलाने के लिए हिन्दी को माध्यम बनाया और आज भी उनका सन्देश हमारे लिए उतना ही ग्राह्य है जितना तब था। इन मनी-षियों में महाराष्ट्र के नामदेव, ज्ञानेश्वर और तुकाराम, गुजरात के स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गाँधी, बंगाल के कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय आदि के नाम उल्लेख-नीय है। बंगाल में कलकत्ता विश्वविद्यालय भारत का प्राचीनतम विश्वविद्यालय है जिसकी स्थापना 1857 ई० में हुई थी। भारत का यह पहला विश्वविद्यालय है जिसने एम० ए० (हिन्दी) का आरम्भ सर्वप्रथम 1918 ई० में किया।

राजभाषा हिन्दी का जन्म भारत की मूलभाषा संस्कृत से हुआ है। प्राचीन भारत में सम्पूर्ण राज-काज संस्कृत भाषा के माध्यम से होता था। संस्कृत के पश्चात पाली, प्राकृत और अपभ्रंश आदि भाषाएँ राजभाषा के रूप में स्वीकार की गईं। इसी शृंखला में शौरसेनी अपभ्रंश से उत्पन्न हिन्दी सदियों से देश की राष्ट्रभाषा रही है और आजादी के बाद हमारे संविधान में इसे देश की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है।

मैकाले की शिक्षा-नीति अपनाकर अंग्रेजों ने एक संस्कृति अपहारक विदेशी भाषा पर थोपी और अपना स्वार्थसिद्ध करने के लिए आधुनिकता और नौकरी का प्रलोभन देते हुए भारतीय युवावर्ग को पथभ्रष्ट किया। दुर्भाग्य से स्वतन्त्रता के बाद भी भारत में लोगों की मानसिकता नहीं बदली है। वे मुक्त हैं, पर उनमें मुक्ति का अहसास नहीं हो पाया है। फलस्वरूप बहुत-सी समस्याएँ खड़ी हो गयी हैं। किसी देश के जनमानस की एकात्मता वहाँ की संस्कृति और विचारधारा से अभिव्यक्त होती है जिसका वाहन होता है, साहित्य। सारा मौलिक भारतीय साहित्य संस्कृत में या भारतीय भाषाओं में ही है। सबकी भावभूमि और भावधारा एक ही हैं, सबकी आत्मा एक हैं, और राष्ट्रीय एकता के लिए इनकी देन पर तो पोथे लिखे जा सकते हैं।

अफसोस की बात है कि आजादी के 47 वर्ष और संविधान में हिन्दी को राजभाषा के रूप में प्रति-ष्ठापित करने के 44 वर्ष बाद भी सम्पूर्ण भारत का राजकाज हिन्दी में नहीं हो पा रहा है।

जब से मेरे कन्धों पर उपमुख्य राजभाषा अधि-कारी की हैसियत से राजभाषा-सम्बन्धी कार्यों का प्रशासनिक नियन्त्रण सम्भालने का दायित्व सौंपा गया है, तब से प्रतिदिन मेरे हृदय में हिन्दी के साथ पूरा-पूरा न्याय कैसे बरता जाए इसके लिए विचारों के तूफान उठते रहते हैं और मैं चिन्तित होता रहता हूँ।

अन्त में मैं यही निवेदन करना चाहूँगा कि—

देश का सम्मान जिसमें मान जिसमें, शान जिसमें
उसको अंगीकार करें हम हिन्दी ही व्यवहार करें हम।

शाह मोहम्मद सिद्दीकी : एक सम्पूर्ण कवि

□ एम० एस० आलम
सहायक कार्मिक अधिकारी
पूं० रेलवे, आसनसोल

काव्य रचना एवं काव्य-पाठ हमारी साहित्यिक और सांस्कृतिक जीवन की धरोहर रही है और खासकर जब कभी हिन्दी-साहित्य और उर्दू अदब ने बाहों में बाहें डालकर साथ-साथ सफर किया है तो अनेक सफल और रंगा-रंग कवियों और शायरों ने अपनी अलग पहचान बनाई है—मुंगेर तो साहित्य की पूजास्थली रही है—बिहार राज्य का यह अकेला शहर है, जहाँ हर युग में कवियों और रचनाकारों की मंडली, समुद्र की मौजों की तरह अपनी अथाह गहराइयों को दामन में समेटे मौजूद रही है। इसीलिए मुंगेर 'मिनी इलाहाबाद' के नाम से भी जाना जाता रहा है—शाह मोहम्मद सिद्दीकी भी इसी समुद्र की एक मौज का नाम है, जिसने अपनी कुशल एवं सम्पूर्ण शायरी के द्वारा बिहार राज्य के साहित्यिक पटल पर अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखवाया है—इनकी रचनाओं के लम्बे सफर में जीवन की तमाम समस्याओं का हल नजर आता है और चिन्तन को उत्कृष्ट कारीगरी मिलती है—खासकर अपनी नज्मों के दर्पण में शाह मोहम्मद सिद्दीकी की प्रतिभा अपने बांकपन पर होती है।

आज अदालत में बैठा है मुजरिम सीना ताने,
कौन गवाही को आयेगा, कौन उसे पहचाने ?
पल भर जीना दूभर होगा, साखो यह भी जाने,
न्याय को दुनिया अंधा बोले, गाली दे या ताने,
कल की बात अलग थी यारो, आज अलग है रीत,
कैसा होगा गीत बता दो, कैसा होगा गीत।

शिखर से देखो अपनी धरती कितनी फैली लगती है,
हाँ ! मानव के हृदय समान थोड़ी-सी मैली लगती है,
बम-बारूद से नित दिन पर्वत का सीना छलनी करती,
कीट-सी, मानव आकृति बड़ी विषैली लगती है;
इसके पूर्व कि सारी दुनिया बन जाये विष का भंडार,
विष को, हर विषधर को, इस धरती से दूर हटाना है,
कविवर ? कविता आज सुनाने पर्वत शिखर पर जाना है,
पाषाणों के शुष्क हृदय में कोमल फूल खिलाना है।

बढ़ती जाती है हर इक चीज की कीमत हर दिन,
जैसे जंगल में लगाती हों छलांगें हिरणें,
कोई मायूस, थका हारा, परेशां मजदूर,
शर्म से डूबा जाता है खुद अपने दिल में।
यों तो किस्मत में अंधेरा ही अंधेरा है मगर,
साल-ए-नौ ! आज के दिन कुछ तो उजाला दे दे।

शाह मोहम्मद सिद्दीकी सत्तर के दशक में एक उर्दू शायर के तौर पर बिहार के उर्दू साहित्यिक संसार में अपनी सम्पूर्ण पहचान बना चुके थे और स्थानीय मुशायरों और साहित्यिक गोष्ठियों की जान बन चुके थे। उनकी गजलों और नज्मों की गुनगुनाहट किसी पाजेब की झनकार की तरह अदबी मजलिसों में साफ सुनी जाने लगी थी, विशेषकर उनकी ये पंक्तियाँ लोगों के दिलों और होठों पर अपनी जगह बना चुकी थीं।

चेहरे से ही वह 'शाह' लगाता रहा अंदाज,
उसने तो कभी दिल में उतर कर नहीं देखा।

मेरी मंशा कि रहे बात अभी पर्दे में,
उनकी यह जिद कि हर इक बात बता दी जाये।

मैकशो ! गिन के मत उठाओ जाम,
यह तो है बेहिसाब का मौसम।

दरमां किसी का दर्द है दिल के लिए मगर,
यह दर्द भी नसीब कहाँ बार-बार है।

मिल गये तुम तो मुलाकात की खुशबू फैली,
साथ गुजरे हुए लम्हात की खुशबू फैली।

तुम इसे जो भी समझ लो तुम्हें हक है इसका,
हम तो मिलते हैं कि अपनों की भी पहचान रहे।

और फिर यह रंग देखिए —

बेकार कभी अपनी करनी का न फल जाये,
यों आग लगाने में घर अपना न जल जाये।

अपना शहर पराया-सा क्यों लगता है,
हर मंजर अजनबी-सा क्यों लगता है।

ऐसा किसी भी दौर में हिन्दुस्तां न था,
जलती हुई यह बस्तियाँ, जलता मकां न था।

फिर धीरे-धीरे हिन्दी साहित्यिक-पटल पर भी शाह मोहम्मद सिद्दीकी तेजी से उभरने लगे—हिन्दी के रंग में उनकी रचनायें और भी मुखर होने लगीं। हिन्दी और उर्दू के शब्दों, अलफाज और मुहावरों को तराशने और संवारने की महारत और कला ने इनकी कविताओं और गजलों को एक अलग ही शैली प्रदान की थी और कवि सम्मेलनों एवं साहित्यिक पत्रिकाओं में इनकी रचनाओं को उचित सम्मान दिया जाने लगा, विशेषकर साहित्यिक मजलिसों और गोष्ठियों का सफल एवं खूबसूरत संचालन करने में यह अकेले हस्ताक्षर बन गये थे—हिन्दी की रचनाओं में उनकी संवेदनशीलता काफी विकसित हो गई है, वर्ग-संघर्ष, दबे-कुचले अवाम का दर्द, मेहनतकशों के फौलादी शरीर की खुशबू और मोहब्बत भरे दिलों के मार्मिक अरमानों से सुसज्जित रचनाओं के कुछ अंश पेश हैं—

हम मजदूर हम मजदूर,
खुशियाँ हमसे कोसों दूर।

होता रहा है हादसा ऐसा तो बारहा,
ठोकर लगी, गिरे, उठे और मुस्कुरा दिया।

किसी गरीब से पूछो कि मुफलिसी क्या है,
यह रात-दिन जो गुजरती है, जिन्दगी क्या है ?

मेरा सपना, आँचल-आँचल फूलों से भर जाये,
दुःख की कोई भी रेखा मुख पर न रहने पाये,
पुष्प अधर पर खिलते जायें बिन सूखे, कुम्हलाये,
धरती पर फिर कभी न छायें गम के काले साये।

सिद्दीकी साहेब नब्बे दहाई के आते-आते अखिल भारतीय स्तर पर पहचाने जाने लगे थे और उनकी सबसे हसीन गजल—"आ गया फिर गुलाब का मौसम" को भारत की नम्बर एक म्युजिकल कैसेट बनाने वाली कम्पनी एच० एम० भी० (H M V) ने पटना के मशहूर गजल सिंगर सीताराम सिंह और अंजन चटर्जी की जादू भरी आवाज में देश के कोने-कोने में बिखेर दिया है। फिर दूसरे और तीसरे कैसटों की फरमाइश आने लगी जो जल्द ही रिलीज होने वाले हैं—आकाशवाणी के देशव्यापी केन्द्रों से गाहे-गाहे इनके काव्य पाठ का रस गूंजने लगा और दूरदर्शन राँची ने "गुलाब का मौसम" टेली-कास्ट कर इनकी रचनाओं को खासोआम में मकबूलियत प्रदान की है। दिल्ली दूरदर्शन से भी यह गजल सीताराम सिंह और माधुरी भट्टाचार्या की आवाज में "बिहार की तीन सर्वोत्तम गजल" के शीर्षक के अन्तर्गत प्रसारित हुई। हम सभी को, मुंगेर के साहित्य-प्रेमी बन्धुओं को और बिहार-वासियों को उन पर गर्व है, हम सभी उनसे बेहद मोहब्बत करते हैं, खासकर हम रेलकर्मी उन्हें अपने परिवार का वरिष्ठ सदस्य मानते हैं, क्योंकि शाह मोहम्मद भाई जमालपुर रेल कारखाने में सीनियर फौरमेन (पी० जी० एस०) के ओहदे पर कार्यरत हैं और जमालपुर कारखाना की मुख्य हिन्दी पत्रिका 'कर्मवीर' के सफलतम प्रधान सम्पादक हैं। पिछले अंक के शुभकामना संदेश में महाप्रबन्धक, पूर्व रेलवे ने इस पत्रिका को सम्पूर्ण पूर्व रेलवे की हिन्दी पत्रिकाओं में सर्वश्रेष्ठ करार दिया है। इसके लिए सिद्दीकी जी को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित भी किया गया है।

अन्त में उनकी देशभक्ति के भाव से ओत-प्रोत कविताओं 'अपना भारत', 'मेरे देश की धरती प्यारी', 'आजादी का दिन', 'कल का हिन्दुस्तान' और 'कर्मवीर' की चर्चा कर देना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। इन कविताओं में उन्होंने कौमी एकता और देश की अखण्डता के दर्शन को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। एक पंक्ति देखें—

जिस पर हर लम्हा अदावत का गुमां होता है,
अपने आंगन की वह दीवार गिरा दी जाये।

इनकी कविता 'गणतन्त्र दिवस' को पढ़ते समय कभी आँखों में आँसू तैर जाते हैं तो कभी आँखों के सामने फूल खिलते दिखाई देते हैं।

शाह मोहम्मद सिद्दीकी सदा निराशा के अंधेरे में आशा के दीप जलाते नजर आते हैं। वर्त्तमान समस्याओं का चित्रण, उससे जन्म लेती संवेदनाओं का मूल्यांकन, और फिर उनका निवारण, इनकी कविताओं की विशेषता रही हैं। ●

जमालपुर रेल इंजन कारखाना—अतीत के आईने में

□ गौरी शंकर सिंह
भू०पू० उपमुख्य राजभाषा अधिकारी सह प्राचार्य
प्रणाली तकनीकी विद्यालय
पूर्व रेलवे जमालपुर

(क) क्या आप जानते हैं ?

जमालपुर रेल इंजन कारखाना 8 फरवरी, 1862 ई० में प्रारम्भ होकर सिर्फ कुछ एक दशक में ही महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल कर कई क्षेत्र में कीर्त्तिमान कायम करने में सक्षम साबित हुआ था। उस जमाने में इस देश में कल-कारखानों की संख्या भी काफी कम थी। एक जमाने में 'पूर्व के बर्मिघम' (Birmingham of the East) कहलाने वाला जमालपुर कारखाना अपने गौरवपूर्ण इतिहास को संजोये शनै-शनै अभी तक कायम है। यद्यपि कार्यभार के कमी के कारण अब इस कारखाने के कर्मचारियों की संख्या में ह्रास होता जा रहा हैं।

(i) 1899 ई० से 1923 ई० की अवधि में इस कारखाने में कुल 216 रेल इंजनों का निर्माण किया गया था। इन इंजनों की डिजाइन भी जमालपुर कारखाने में तैयार की गई थी। जमालपुर कारखाने में बने यह सभी इंजन बहुत अच्छी सेवा प्रदान करने में कामयाब रहा। इसकी पुष्टि मिस्टर जी० हडलेस्टन ने 1906 ई० में की थी। (The Chronicler of East-Indian Railway में)

इन इंजनों के निर्माण में लगभग 24000/- रुपये प्रति इंजन खर्च आयी थी।

इंजनों की श्रेणी	निर्माण के वर्ष	इंजनों की संख्या
CA	1899-1906	32
CT	1907-1910	44
CT	1909-1911	24
DT	1911-1913	50
CTM	1914-1916	40
CBT	1919-1923	26
		कुल—216

(ii) 1910 ई० से 1926 ई० के बीच कुल मिलाकर 103 इंजनों के 'बॉयलर' भी इसी जमालपुर कारखाने में बनाये गये थे।

(iii) 1885 ई० से 1913 ई० की समयावधि में 99 'इंजन टेण्डर' भी बनाये गये थे। उन दिनों एक टेण्डर बनाने में लगभग 5000/- रुपये खर्च हुए थे।

(iv) 1902 ई० में 30 टन क्षमता के 'वे ब्रीज' भी जमालपुर कारखाने में बनना प्रारम्भ हुआ था।

(ख) मैंने 1945 से 1950 की अवधि तक अप्रेन्टीस प्रशिक्षण इसी कारखाना में प्राप्त किया था।

उस समय की कुछ मजेदार बातें जो कारखाने में कार्यरत भोले-भाले कर्मचारियों के बीच की जातीं, वे इस प्रकार की हुआ करती थीं :—

(i) ईरेक्टींग शॉप को 'डग' कहा जाता था,

(ii) हीटट्रीटमेंट शॉप को 'हड्डीघर' से जाना जाता,

(iii) बी० एस० टी० को 'टांकीघर' से जाना जाता,

(iv) मेटालॉरजीकल लेबोरेटरी को 'बोतल-घर' कहा जाता,

(v) सेन्ट्रल इंस्टीच्यूट को 'नाचघर' कहते थे।

(vi) ईस्ट-कॉलोनी को 'बारीक' से जाना जाता था।

(vii) Mr. D. C. Griffiths को 'गिरपीट साहब'
(Prod. Engineer)

(viii) Mr. T. F. D'Souza को 'यशोदा साहब'
(GFO/MS)

(ix) Mr. Marks को 'मक साहब'
(A.M.M.)

(x) Mr. Gasper को 'जसवर साहब'
(Fo/PWF)

(xi) Mr. P. H. Duckworth को 'डगबर साहब'
(A.S.S./FTS)

(xii) Mr. Duccase को 'लुकार्ट साहब'
(A.S.S./BST)

(xiii) Mr. Godfree को 'गाफरी साहब' कहते थे।
(Chargeman/MTS)

मैं समझता हूँ—वर्त्तमान पीढ़ी के कर्मचारियों को यह जानते हुए बहुत हँसी आयेगी।

●

वह धर्म भी क्या जिसके मर्म में प्रेम का माध्यम न हो, और वह विश्वास भी क्या जिसकी नींव तले विवेक की ईंट न हो !

—राधिका रमण

चूमता चला गया

□ देवनारायण साहु
सम्पादक "कर्मवीर"

एक बार जिस किसी ने भी चूमा,
तो चूमता ही चूमता चला गया।

जब चांदनी में नहा रही थी सरिता,
एक दर्शक ने तत्क्षण बनाई कविता,
भाव के प्रभाव में कवि झूमा
तो झूमता ही झूलता चला गया।

जिन्दगी में एक पड़ाव कम आया,
'लड़कपन' बीता और 'बुढ़ापा' छाया,
एक दिन 'जवानी' को लगा ढूँढ़ने
तो ढूँढ़ता ही ढूँढ़ता चला गया।

छल-प्रपंच, अहंकार ईर्ष्या नफरत,
अंजाम दुश्मनी का है महाभारत,
भूल गया रास्ता जो दुर्योधन
तो भूलता ही भूलता चला गया।

स्वर्ण, सुन्दरी या सुरा के फंदे में,
या बुरे सोहबत में, गलत धन्धे में,
जब भी किसी ने लगाई डुबकियाँ
तो डूबता ही डूबता चला गया।

चांद, सूरज, हसीं धरा, सुनील गगन,
"दाता" ने दिया है यहाँ हरेक रतन,
जिस जौहरी ने लूटना सीखा
वह लूटता ही लूटता चला गया।

●

*

दीप यह जलता रहेगा

चाँद मेरे गीत तुम गाओ न गाओ,
गगन यह सजता रहेगा, दीप यह जलता रहेगा.

गीत पहले आदिकवि ने गा सुनाया,
प्यार से अंतर गगन का सुगबुगाया.
प्राण-पक्षी जो उड़ा यह तोड़ कारा,
मुक्त होकर भी स्वयं को बन्द पाया.

लाख उर के फूटते मधु-स्रोत बाँधो,
भावना का किन्तु निर्झर गीत बन बहता रहेगा.

कौन वह राही चला जो थक गया है,
शूल पर भी पाँव रखकर रुक गया है.
बर्फ की आँधी हठीली सह गया जो,
सामने उसके हिमालय झुक गया है.

पंथ की दूरी कभी कम हो न हो पर,
आदमी चलता रहेगा, पाँव यह बढ़ता रहेगा.

□ दीपक मौर्य

इंतजार : दो चित्र

□ रमेश नीलकमल

॥ एक ॥

थिरकते पाँवों से/दिनभर
घर-आँगन को नचाती
एक औरत
बन जाती है साँझ को
एक इंतजार
किसी के लौटने का।
जबतक अँधेरा घिर नहीं जाता
खड़ी रहती है वह
चौखट पर
और
हर आहट की टोह लेने में
लगे रहते हैं
उसके कान
और जब अँधेरा चारों ओर
फैला देता है अपना वितान
वह चुपचाप
एक दिया जलाकर
रख देती है/ठीक
अँधेरे के बीच
और
टकटकी लगाकर
ताकती रहती है
लौ/केवल लौ
निष्कम्प दिये की।

वह इंतजार को मरने नहीं देती
जाग-जागकर उसे
जिलाये रखती है
पूरी रात
पूरा दिन
फिर पूरी रात/पूरा दिन
और इस तरह
एक पूरी उम्र की तरह
खत्म हो जाती है
किसी के इंतजार में।

॥ दो ॥

मचलते पाँवों से
नापती
गाँव-शहर-जंगल बियाबान
गुंजाती
धरती और आसमान
न जाने किसे
खोज रही है लड़की
बुनने के लिए सपना
जिसे कह सके वह अपना।
बहुत
बहुत
बहुत दिनों बाद
वही लड़की बन जाती है
चौखट

अपने ही घर का
जिसे वह
लाँघ नहीं पाती है
और उसके भीतर ही
गुमसुम
जन्म लेता है इंतजार ।
न सुनी जा सकने वाली
शहनाइयों की आवाज
बे-आवाज
उसकी आँखों के सामने से
गुजर जाती है
और वह ताकती रहती है
अपना
अधबुना भविष्य ।
करती है इंतजार
केवल इंतजार
जो है सच से भी अधिक
परन्तु
उसे विश्वास नहीं होता ।
□□

लाखों मुखड़ों की है बोली

□ रामचन्द्र मयंक

हिन्दी है जन-जन की भाषा
हिन्दी हर जन की अभिलाषा
हिन्दी है सबकी कल्याणी
हिन्दी जन-मन की है आशा

गंगा की गरिमा है इसमें
यमुना की इसमें पावनता
सदियों से साँसें लेती हैं
भारत की नित सारी जनता

तुलसी, कबीर, नानक, रहीम
के छंदों की है यह झोली
है घर-घर की यह रामायण
लाखों मुखड़ों की है बोली

हरिश्चन्द्र ने इसे सजाया
मतिराम ने इसको मान दिया
मीरा, रसखान, निराला ने
रच कविता में है प्राण दिया

है इतनी सरल महान कि यह
जैसे बच्चों की किलकारी
जो जोड़ रही है सदियों से
उत्तर-दक्षिण की हर क्यारी

मत भेद न ला तू कुछ मन में
उत्तर-दक्षिण की बोली में
दक्षिण में गर यह ओनम है
उत्तर की कहलाती होली ।

मुक्तक :

हिन्दी हमारी जान है पहचान है हिन्दी
यह कोटि-कोटि लोगों का अरमान है हिन्दी
हिन्दी में करें काम हम हिन्दी का रखें मान
यह देश धर्म जाति की ईमान है हिन्दी ।

अपना भारत !

□ शाह मोहम्मद सिद्दीकी
प्रधान सम्पादक एवं प्रगति अधीक्षक

हम कभी भारत, कभी हिन्दुस्ताँ बनते रहे,
सभ्यता के बाग के हम बागवाँ बनते रहे।

हमने सिखलाया है जीना 'चीन' को जापान' को,
अपने सीने में जगह दी 'तुर्की' व 'ईरान' को,
प्रेम के रिश्ते में जोड़ा हमने हर इन्सान को,
एक ओर 'गीता' को देखो एक ओर 'कुरआन' को,
हर धरम के चिन्तनों के पासवाँ बनते रहे,
मानवीय आदरों का हम निशाँ बनते रहे

हम कभी भारत, कभी हिन्दुस्ताँ बनते रहे,
सभ्यता के बाग के हम बागवाँ बनते रहे।

हम अहिंसा के पुजारी, अमन के पैगाम्बर,
सबकी खुशियाँ अपनी मंजिल, शान्ति अपनी डगर,
'पंचशील', 'तटस्था' हैं अपने बुनियादी उसूल,
शान्ति के मार्ग पर जारी सदा अपना सफर,
अपने समकालीनों में मीरे-कारवाँ बनते रहे,
शान्ति, मानव धर्म की दास्ताँ बनते रहे,

हम कभी भारत, कभी हिन्दुस्ताँ बनते रहे,
सभ्यता के बाग के हम बागवाँ बनते रहे।

देवताओं की यह धरती, सूफीयों की सरजमीं,
'राम' औ' 'गौतम' की जमीं 'चिश्ती' औ' 'नानक' की जमीं,
'तुलसी', 'खुसरू', 'बाल्मीकि', और 'फैजी' की जमीं,
हर दृश्य है स्वर्ग जैसा, हर समाँ दिलकश हसीं,
जिन्दगी की गुत्थियों के राजदाँ बनते रहे,
विद्या, अध्यात्म के हम आसमाँ बनते रहे,

हम कभी भारत, कभी हिन्दुस्ताँ बनते रहे,
सभ्यता के बाग के हम बागवाँ बनते रहे।

कोई द्राविड़, आर्य कोई, कोई मंगोली सही,
भिन्न-भिन्न भाषायें अपनी, भिन्ग-भिन्न बोली सही,
भिन्त-भिन्न विश्वास अपने, भिन्त अपने धर्म हैं,
भिन्न-भिन्न अपने इलाके, भिन्त-भिन्न टोली सही,
भिन्न-भिन्न फूलों का रंगीं गुलस्ताँ बनते रहे,
चाँद-तारों से भरा इक आसमाँ बनते रहे।

हम कभी भारत, कभी हिन्दुस्ताँ बनते रहे,
सभ्यता के बाग के हम बागवाँ बनते रहे।

●

हादसे

□ प्रतिमा वर्मा
बड़ी दरियापुर
जमालपुर

जब कभी होते हैं
हादसे
दिन जब ढ़लता है
तब चोरी और बलात्कार
पनपता है ।
और गहराया हुआ
अन्धकार
एक नया इतिहास
लिखता है ।
पर हमें क्या मालुम
इस काली छाया में
क्या-क्या होता है
किस-किस की चीखें
दबती है ।
किस-किस की पायल
खनकती है ।
किसके आँखों में
समंन्दर रोता है
किसकी बाजुएं
कटती है
किसका घर
अलग होता है
किसका घर जल कर
राख होता है ।
कौन इस राख से
अपनी रातें रंगीन करता है
इस विरान रात में
किसका लव
सिसकता है ।
किसकी आहें तड़पती है
कौन-सा घर रोता है ।
तब विचारों के
धरातल पर
एक नया बीज
बोती है कविता
और अपने सशक्त
खामोश लेखनी
से कहती है
तब हम
झांक कर देखते हैं ।
उसमें किसी जानवर की नहीं
किसी वहशी की नहीं
किसी निर्दोष
अबला की,
सुहागिन की
किसी नई नवेली
दुल्हन की
जलती हुई चिता
और देखते हैं
चेहरे पर ढंकी हुई
एक खामोश, बेजान
मासूम बच्चे की लाश !

●

सम्प्रदाय

□ सविता सिंह "अपराजिता"
मुंगेर रोड/जमालपुर

सम्प्रदाय कहता है हमको,
तन-मन को तुम शुद्ध करो ।
कदम-कदम पर देता शिक्षा,
बात-बात पर यूँ न लड़ो ।
गीता का उपदेश यही है,
अनाचार को दूर करो ।
रामायण संदेश है देती,
अहंकार को चूर करो ।
ईद हमें सिखला जाती है,
एक दूजे के गले मिलो ।
ईस्टर का भी हाथ यही है,
ऊंच-नीच की खाई भरो ।
गुरु ग्रन्थ भी सीख है देता,
सब जीवों पर दया करो ।
सभी धर्म का सार यही है,
मानव का उपकार करो ।
सम्प्रदाय नहीं कहता हमसे,
मानवता का खून करो ।
धर्म को सुन्दर पुष्प मानकर,
रेशम के धागे में पिरो ।
पुष्प की शोभा कोमलता है,
हृदय को न क्रूर करो ।
बुद्धि विनय से जनमानस को,
एक-एक कर वश में करो ।
धर्म जाति का भेद भूलकर,
"एकता" महा ग्रन्थ गढ़ो ।
सम्प्रदाय है स्वच्छ आईना
शीशे पर मत धूल धरो ।

●

रचना सहयोगी

अंगराज मोहन	:	कारखाना कार्मिक अधिकारी
उपेन्द्र सिंह	:	राजभाषा सहायक, पूर्व रेलवे कारखाना/जमालपुर
उमाशंकर निशेष	:	प्रधान लिपिक (टिकट), बरियारपुर
उमानाथ शर्मा	:	के० स० हिन्दी परिषद्, नई दिल्ली
गणेश प्रसाद महतो	:	पूर्व व्याख्याता, पू० रे० इन्टर महाविद्यालय/जमालपुर
गौरीशंकर सिंह	:	राष्ट्रभाषा प्रचारक समिति, हैदराबाद (आं० प्र०)
जितेन्द्र झा पंकज	:	वरिष्ठ लेखा परीक्षक/जमालपुर
जगन्नाथ	:	ए० 26 रोहितकुंज, रानीबाग, दिल्ली-110034
देवनारायण साह	:	सम्पादक एवं राजभाषा अधिकारी, पू० रे० कार०/जमालपुर
दीपक मौर्य	:	सम्पादक, शिखा साहित्य, मुंगेर
निर्मल मिलिंद	:	स्टील सीटी समाचार, टुई लाडुगरी, पो०–गोलमुरी, जमशेदपुर-3
नरेश कुमार शर्मा	:	राजभाषा सहायक, प्रधान कार्यालय/कलकत्ता
नजरूल इस्लाम खाँ (नजरू जमालपुरी)	:	राजभाषा सहायक, भंडार विभाग/जमालपुर
परमानन्द सिंह	:	उपमुख्य राजभाषा अधिकारी, पू०रे०/जमालपुर
प्रतिभा वर्मा	:	बड़ी दरियापुर, जमालपुर
बैद्यनाथ सिंह	:	फिलिप उच्च विद्यालय, बरियारपुर, जिला–मुंगेर
भोला प्रसाद भगत	:	का० अधीक्षक एवं हिन्दी पुस्तकालयी, भंडार वि०/जमालपुर
एम० एस० आलम	:	सहायक का० पदाधिकारी (I), आसनसोल
राजकिशोर मण्डल	:	राजभाषा सहायक/जमालपुर
डा० आर० आर० सिंह	:	मं० चि० अधिकारी, पू० रे० मुख्य अस्पताल/जमालपुर
रमेश नीलकमल	:	का० ले० अधिकारी/जमालपुर
रामचन्द्र मयंक	:	पू० कार्यालय अधीक्षक, जमालपुर कारखाना
ललित कुमार पाण्डेय	:	एम० ए०, बी० लिब० एस-सी० बी० एड०, पुस्काध्यक्ष पू०रे० इन्टर महाविद्यालय/जमालपुर
शाह मोहम्मद सिद्दीकी	:	प्रधान सम्पादक एवं प्रगति अधीक्षक/जमालपुर
शिव प्रकाश गुप्ता	:	8235-36, गली बहूजी, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-6
सुरेन्द्र प्रसाद चौरसिया	:	प्र० लिपिक, मंडल इंजीनियर (नगर) कार्यालय/जमालपुर
डा० सतीशराज पुष्करणा	:	लघुकथा नगर, महेन्द्रू/पटना-800 006
समीरण दीर्घाग्नी	:	प्रगति विभाग, पू० रे० कारखाना/जमालपुर
संजय प्रियदर्शी	:	11 अ ब स, कारखाना मार्ग, जमालपुर-811214
सत्येन्द्र कुमार मिश्रा	:	बड़ा बाजार, मुंगेर
एस० आर० अहमद	:	(रेयाज गाजीपुरी) पेन्टर ग्रेड-1, सियालदह
सरिता सिंह "अपराजिता"	:	मुंगेर रोड/जमालपुर

व्यापार में हिन्दी

□ शिव प्रकाश गुप्ता
4235-36 गली बहूजी,
पहाड़ी धीरज, दिल्ली-6

भारत एक स्वतन्त्र राष्ट्र है। प्रत्येक स्वतन्त्र राष्ट्र की एक अपनी भाषा होती है। भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है। स्वतन्त्र राष्ट्र के प्रत्येक स्वाभिमानी नागरिक का राष्ट्रीय कर्तव्य है कि वह अपने समस्त कार्यों एवं बोल-चाल में अपनी राष्ट्रीय भाषा का ही प्रयोग करें। अतः हम अपना समस्त कार्य हिन्दी में ही करके अपनी राष्ट्रीयता का परिचय दें।

व्यापारिक कार्यों में तो मुस्लिम एवं अंग्रेजी शासन काल में भी लगभग समस्त कार्य हिन्दी भाषा में ही किया जाता रहा है। हिन्दी में लिखे बही-खातों को कचहरियों में भी अधिकतम विश्वसनीय साक्षी के रूप में मान्यता प्राप्त थी। सरकारी कार्यालयों, जैसे—आयकर कार्यालय आदि में भी ये स्वीकार्य थे। परन्तु सरकारी कार्यालयों में समस्त कार्य अंग्रेजी में किये जाने की अनिवार्यता के कारण व्यापारी वर्ग ने भी सुविधा की दृष्टि से अपने बही-खातों को अंग्रेजी में लिखना तथा अन्य पत्राचार अंग्रेजी में करना प्रारम्भ कर दिया। अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्ति ने भी इस प्रवृत्ति को उकसाया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् स्थिति में बदलाव आया है। संविधान में हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा घोषित किया गया है। प्रत्येक सरकारी, अर्द्ध सरकारी, सरकार के स्वामित्व में तथा उसके नियन्त्रण में निगम अथवा कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। सरकारी कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। हिन्दी में कार्य करने के लिए कई प्रकार के प्रोत्साहन भी दिए जा रहे हैं। कार्यालयों में प्रयुक्त सभी फार्म आदि द्विभाषी किये जा चुके हैं। लगभग 200 भर्ती परीक्षाओं में भी हिन्दी माध्यम को अपना लिया गया है। हिन्दी में प्राप्त पत्रों का हिन्दी में ही उत्तर देना अनिवार्य कर दिया गया है। परिणाम-स्वरूप सरकारी कार्यालयों आदि में अधिकतर कार्य हिन्दी में होने लगा है।

अतः व्यापारी वर्ग को अब अपने बही-खातों को हिन्दी में लिखने तथा अन्य पत्राचार हिन्दी में करने से कोई असुविधा नहीं होगी, बल्कि व्यापारिक हितों को लाभ मिलता है। यह सर्वविदित है कि भारत के लगभग सभी स्थानों पर हिन्दी बोली, लिखी अथवा समझी जाती है। इसलिए अपने उत्पादों पर और उनके पैकेटों पर उनका नाम, उपयोगिता, प्रयोग विधि, निर्माता का नाम आदि हिन्दी में लिखने व उनसे सम्बन्धित विज्ञापन तथा अन्य प्रचार सामग्री हिन्दी में छपवाने आदि से आपके उत्पाद और अधिक लोकप्रिय होंगे। अपने संस्थानों के नाम-पट्ट आदि हिन्दी में लिखवाने और हिन्दी में छपी लेखन-सामग्री के प्रयोग से भी आप अधिक ग्राहकों को आकर्षित कर सकेंगे। सरकारी कार्यालयों तथा व्यापारिक संस्थानों से हिन्दी में पत्राचार अधिक सुगमता से सम्पन्न होगा। अपनी भाषा में आप अपना पक्ष भली-भाँति प्रस्तुत कर पायेंगे। हिन्दी में किये गये तार भी अंग्रेजी तारों से कहीं सस्ते पड़ते हैं।

देश के स्वतन्त्रता संग्राम तथा राष्ट्रीय उत्थान में भी व्यापारी वर्ग का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उसी परम्परा में व्यापारी वर्ग की वर्त्तमान पीढ़ी भी अपने पूर्वजों का अनुसरण करते हुए, अपना समस्त कार्य राष्ट्रभाषा हिन्दी में करके, राष्ट्रीय गौरव को बढ़ायेगी, ऐसा मेरा विनम्र निवेदन है।

बसो मेरे नैनन में नन्दलाल ।
मोहनी मूरत साँवरी सूरत नैना बने बिसाल ।
अधर सुधारस मुरली राजति उर बैजन्ती माल ।।
छुद्र घंटिका कटितट सोभत नूपुर शब्द रसाल ।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई भगत-बछल गोपाल ।।

—मीराबाई

नोवेल्टी प्रेस, मुंगेर ।